फाल्गुन, शुक्ल पक्ष 5, वर्ष 11, अंक 305, पृष्ठ 12, मूल्य : 5.00
प्रयागराज, शुक्रवार, 24 फरवरी, 2023

परख सच की
जनसंदेश टाइम्स
प्रयागराज, वाराणसी, लखनऊ, कानपुर एवं गोरखपुर से प्रकाशित

अंदर - बीबीसी, वाशिंगटन पोस्ट और जॉर्ज सोरोस

अन्दर : टीम इंडिया के तेज गेंदबाज उमेश यादव के पिता का निधन

नगर संस्करण
E-paper : www.jansandeshtimes.net | Portal : www.jansandeshtimes.news

मेधा का उपयोग समाज के लिए करें विवि:राज्यपाल

जनसंदेश न्यूज

26वां दीक्षांत समारोह

दहेज न लेने की छात्रों को दिलाई शपथ, 66 विद्यार्थियों को दिया गोल्ड मेडल, 30 बच्चों को राज्यपाल के हाथों मिला उपहार

युवाओं के बल पर देश आत्मनिर्भर बनेगा : प्रो. गिरीश्वर मिश्र

कुलपति ने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों को गिनाया, विवि में मनाया गया 26वां दीक्षांत समारोह

जौनपुर। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय का 26वां दीक्षांत समारोह गुरुवार को महंत अवेद्यनाथ संगोष्ठी भवन में मनाया गया। इस अवसर पर राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने सर्वोच्च अंक पाने पर मेधावियों को 66 स्वर्ण पदक प्रदान किया। दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय वर्धा के पूर्व कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र रहे।

इस अवसर पर प्रदेश की राज्यपाल एवं कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल ने कहा कि देश में 65 फीसदी युवा जनसंख्या है। इसका अधिकतर भाग विश्वविद्यालय से होकर गुजरता है। युवाओं की मेधा का सकारात्मक उपयोग समाज के लिए विश्वविद्यालय को करना चाहिए। हमें विदेशों की नकल करने से अच्छा है युवाओं की सोच को विकसित कर उसका उपयोग देशहित में किया जाए। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भी यही चिंता रहती है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना से युवकों को स्वावलंबी बनाया जा रहा है, जब तक युवा स्वावलंबी नहीं बनेंगे तब तक देश आत्मनिर्भर नहीं बन सकता। देश में वृद्धाश्रम की बढ़ती संख्या पर उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि बच्चों, मां का सम्मान करना सीखों, क्योंकि बचपन में कितने कष्ट सहकर मां ने आपका पालन-पोषण किया है। मां-पिता बुढ़ापे में आपसे दूर हो, शिक्षा का सही मायने यह नहीं है।

उन्होंने आंगनबाड़ी की प्रशंसा करते हुए कहा कि मां का असली रूप वहां देखने को मिलता है। वहां 50-50 बच्चों को कार्यकर्ती कैसे संभालती हैं, हमें उनसे सीख लेने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि शोध की डिजाइन और प्रस्तुतीकरण वैश्विक स्तर का हो। उन्होंने स्वास्थ्य पर चर्चा करते हुए कहा कि इसके लिए योग और मोटे अनाज का सेवन जरूरी है। इसकी जागरूकता के लिए स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय को योगदान देना होगा। छोटे बच्चों को दीक्षांत में बुलाने का मतलब उनके आगे के स्वप्न को साकार करना है। जी-20 की सोच को विस्तार से बताते हुए उन्होंने कहा कि इससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। समाज से दहेज की विकृति दूर करने के लिए उन्होंने विद्यार्थियों को दहेज न लेने का संकल्प दिलाया। दीक्षांत उद्बोधन में मुख्य अतिथि महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय वर्धा के पूर्व कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि ज्ञान-विज्ञान सेवा और जीवन मूल्यों का जो अर्जन विद्यार्थियों ने किया है उसे समाज और राष्ट्रहित में उपयोगी बनाएं। पर्यावरण पर चर्चा करते हुए कहा कि धरती रहेगी तभी मानव रहेगा, इसलिए धरती के संरक्षण पर ध्यान देना जरूरी है। उन्होंने कहा कि प्रकृति के संरक्षण के लिए विश्वविद्यालय ज्ञान और शोध में इसे शामिल करें। युवाओं के बल पर ही देश आत्मनिर्भर बनेगा इसलिए उन्हें अपनी दक्षता दिखानी होगी। उन्होंने कहा कि आज का दौर उपभोक्तावाद और व्यक्तिवाद का दौर है जिसमें सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः का लक्ष्य विस्मृत होता जा रहा है। अधिक से अधिक प्राप्त करो और अधिकाधिक उपभोग करो की जीवन शैली हमारी सामाजिक और आर्थिक संरचना के लिए घातक सिद्ध हो रही है।

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. निर्मला एस. मौर्य ने कहा कि विश्वविद्यालय अपने उद्देश्यों के निरन्तर नये कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। उन्होंने कहा कि पूर्वी उत्तर प्रदेश के इस अंचल में अवस्थित विश्वविद्यालय की अनेक भौगोलिक, सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक विशिष्टताएँ हैं। यहाँ के विद्यार्थियों में असीम उत्साह एवं क्षमता है। उन्हें जीवन के प्रति आधुनिक विचारों के साथ नये-नये तकनीकी, आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तनों से प्रशिक्षित करते हुए जीवन की ऊंचाइयों को छूने के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता है। उन्होंने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों को बिन्दुवार बताया। दीक्षांत समारोह की शुरूआत में शोभायात्रा निकाली गई जिसका नेतृत्व कुलसचिव महेंद्र कुमार ने किया। शोभायात्रा में अतिथियों के साथ कार्य परिषद एवं विद्या परिषद के सदस्य शामिल हुए। दीक्षांत समारोह का संचालन प्रो. अजय द्विवेदी ने किया। इसके पूर्व जल भरो कार्यक्रम जल भरो गीत के साथ किया गया। इस अवसर पर सांसद श्याम सिंह यादव, कुलसचिव महेंद्र कुमार, वित्त अधिकारी संजय राय, परीक्षा नियंत्रक बीएन सिंह, प्रो. बीबी तिवारी, प्रो. वंदना राय, डॉ. मनोज मिश्र, डा. विजय सिंह, डा. राहुल सिंह, प्रो. अजय प्रताप सिंह, प्रो. एके श्रीवास्तव, प्रो. अविनाश पाथर्डीकर, प्रो. राम नारायण, प्रो. देवराज सिंह, प्रो. राजेश शर्मा, प्रो. बीडी शर्मा, प्रो. प्रदीप कुमार, डा. मनीष गुप्ता, एनएसएस समन्वयक डा. राज बहादुर यादव, रोवर्स रेंजर्स डा. जगदेव, प्रो. रजनीश भास्कर, डा. संतोष कुमार, डा. रसिकेश, डा. सुनील कुमार, डा. दिग्विजय सिंह राठौर, डा. अवध बिहारी सिंह, डा. जाह्नवी श्रीवास्तव, डा. अमरेंद्र सिंह, डा. मनोज पांडेय, डा. आशुतोष सिंह, सहायक कुलसचिव अमृतलाल, अजीत सिंह, बबिता सिंह, दीपक सिंह समेत आदि शिक्षक और कर्मचारी मौजूद थे।

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में राज्यपाल आनंदीबेन पटेल को सम्मानित करतीं कुलपति प्रो.निर्मला एस. मौर्य

यूपी में 5 आईएएस, 15 आईपीएस बदले

लखनऊ। यूपी में गुरुवार को पांच आईएएस व 15 पीसीएस अफसरों के तबादले कर दिए गए हैं। आईएएस यशु रुस्तगी को विशेष सचिव, व्यावसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास विभाग पर तैनाती दी गई है। इसके अलावा, आईएएस गौरव सिंह सोगरवाल को गोरखपुर नगर निगम का नगर आयुक्त बनाया गया है। वह अभी तक महाराजगंज के मुख्य विकास अधिकारी के पद पर तैनात थे। आईएएस आकांक्षा राना को मुख्य विकास अधिकारी, अलीगढ़ नियुक्त किया गया है। वह अभी तक मुख्य विकास अधिकारी हरदोई के पद पर जिम्मेदारियां संभाल रही थीं। इसी तरह आईएएस सौम्य गुरूरानी को मुख्य विकास अधिकारी, हरदोई के पद पर नियुक्ति दी गई है। वह ज्वाइंट मजिस्ट्रेट प्रयागराज के पद पर तैनात थीं। अभी तक मुख्य विकास अधिकारी प्रयागराज के पद पर तैनात रहीं शिपू गिरी को वाराणसी नगर निगम का नगर आयुक्त बनाया गया है। इसके पहले, शासन ने देर रात 15 आईपीएस अफसरों का तबादला कर दिया। मुरादाबाद की भीमराव आंबेडकर पुलिस अकादमी में हाल ही में आईजी के पद पर प्रोन्नत पूनम श्रीवास्तव को पीटीएस मेरठ भेजा गया है। सीबीसीआईडी में डीआईजी बाबूराम को उनके स्थान पर मुरादाबाद भेजा गया है। एसपी अभिसूचना नित्यानंद राय को डीजीपी मुख्यालय की विधिक शाखा भेजा गया है। एसपी रूल्स एंड मैनुअल निजाम हसन को पीटीएस मेरठ और लखनऊ कमिश्नरेट में सहायक पुलिस उपायुक्त शशांक सिंह को भी यहीं तैनात रखा जाएगा। इसके अलावा बरेली में सहायक पुलिस अधीक्षक चंद्र मीना को वाराणसी कमिश्नरेट, सहारनपुर में एएसपी ग्रामीण सूरज कुमार राय को आगरा कमिश्नरेट, गाजीपुर के एएसपी ग्रामीण अभिषेक भारती को प्रयागराज कमिश्नरेट, आजमगढ़ में सहायक पुलिस अधीक्षक शक्ति मोहन अवस्थी को नोएडा कमिश्नरेट भेजा गया है। वहीं मुरादाबाद के एएसपी सादर जैन को सहारनपुर का एएसपी ग्रामीण बनाया गया है। आगरा कमिश्नरेट में तैनात सत्यनारायण को मुजफ्फरनगर में एएसपी, मेरठ के एएसपी विवेक चंद्र यादव को गाजियाबाद कमिश्नरेट, अभिसूचना मुख्यालय में सहायक पुलिस अधीक्षक प्रीति यादव को नोएडा कमिश्नरेट और प्रयागराज में सहायक पुलिस उपायुक्त सरावानन टी. को वाराणसी कमिश्नरेट भेजा गया है। इसके अलावा कानपुर कमिश्नरेट में तैनात मृगांक शेखर सिंह को वहीं तैनात रखने का निर्णय लिया गया है।

शिपू गिरी बनीं वाराणसी नगर निगम की आयुक्त, कई जिलों के मुख्य विकास अधिकारी बदले

पवन खेड़ा दिल्ली एयरपोर्ट पर गिरफ्तार

सुप्रीम कोर्ट ने द्वारका कोर्ट को अंतरिम जमानत पर छोड़ने का दिया निर्देश

राहत

कांग्रेस के कई दूसरे नेताओं के साथ छत्तीसगढ़ के रायपुर जा रहे थे खेड़ा, कांग्रेस नेताओं ने एयरपोर्ट पर दिया धरना

नई दिल्ली। असम पुलिस ने गुरुवार को कांग्रेस नेता पवन खेड़ा को हिरासत में लिया। वे दिल्ली से कांग्रेस के कई दूसरे नेताओं के साथ छत्तीसगढ़ के रायपुर में कांग्रेस पार्टी के 85वें महाधिवेशन में शामिल होने के लिए जा रहे थे। उनके साथ इंडिगो की फ्लाइट संख्या 6ए-204 में जनरल सेक्रेटरी वेणुगोपाल, रणदीप सिंह सुरजेवाला, सुप्रिया श्रीनेत भी शामिल थे।

असम पुलिस की इस कार्रवाई को कांग्रेस पार्टी ने तानाशाही बताया है। वहीं पार्टी ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा भी खटखटाया है, जिस पर कोर्ट ने दोपहर तीन बजे सुनवाई करते हुए पवन खेड़ा को अंतरिम राहत दी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर की गई उनकी कथित अपमानजनक टिप्पणी को लेकर असम के हाफलोंग में एफआईआर दर्ज की गई थी, जिसके बाद असम पुलिस ने यह कार्रवाई की है। उन्हें हिरासत में लेते समय काफी हंगामा हुआ। कांग्रेस नेताओं का कहना था कि बिना गिरफ्तारी वारंट के उन्हें ले जाने नहीं दिया जाएगा। पवन खेड़ा के साथ मौजूद कांग्रेस नेताओं ने प्लेन के पास ही धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया।

भारत के मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़, जस्टिस एमआर शाह और जस्टिस पीएस नरसिम्हा की एक पीठ ने पवन खेड़ा को अंतरिम राहत दी है। कोर्ट ने दिल्ली के द्वारका कोर्ट को उन्हें अंतरिम जमानत पर छोड़ने का निर्देश दिया है। सर्वोच्च न्यायालय ने अर्णब गोस्वामी मामले का हवाला देते हुए उत्तर प्रदेश और असम सरकार को इस मामले में दर्ज सारे एफआईआर को क्लब करने का नोटिस जारी किया है। पवन खेड़ा की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी सुप्रीम कोर्ट में तत्काल सुनवाई की अपील लेकर पहुंचे थे। इससे पहले जब दिन में तीन बजे सुनवाई शुरू हुई तो सिंघवी ने मामले से संबंधित सभी याचिकाओं को एक साथ करने की अपील की और कहा कि उनके मुवक्किल बिना शर्त मांगी मांग लेंगे क्योंकि किसी को ठेस पहुंचाने का उनका कोई इरादा नहीं था।

सरकार का जातीय जनगणना से इनकार

सपा का सदन में हंगामा, दो बार सदन स्थगित

यूपी विधानसभा

कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने विपक्ष को दिया जवाब, जो पिछड़ेपन और संकीर्णता के शिकार है उस तरफ यूपी को नहीं ले जाना चाहिए

लखनऊ। समाजवादी पार्टी और राष्ट्रीय लोक दल के विधायकों ने बृहस्पतिवार को विधानसभा में जातीय जनगणना के मुद्दे पर सरकार को घेरते हुए हंगामा किया। दोनों पार्टियों के विधायकों ने जातीय जनगणना कराने की मांग करते हुए सदन में धरना दिया। वेल में नारेबाजी कर सरकार पर दलित व पिछड़ा वर्ग विरोधी होने का आरोप लगाया। प्रदेश सरकार की ओर से कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने विधानसभा में स्पष्ट कहा है कि जातीय जनगणना कराना केंद्र सरकार का अधिकार है। यूपी अब विकास की दृष्टि से बहुत आगे निकल चुका है, उसे पिछड़ेपन और संकीर्णता के शिकार बिहार की तरफ नहीं ले जाना चाहिए। विधानसभा में प्रश्नकाल के दौरान सपा विधायक डॉ. संग्राम सिंह यादव ने प्रश्न किया कि क्या सरकार लोकसभा चुनाव से पहले जातीय जनगणना कराएगी? सरकार की ओर से लिखित जवाब दिया गया कि जी. नहीं, प्रश्न ही नहीं उठता। पूरक प्रश्न लगाते हुए डॉ. संग्राम सिंह ने सरकार पर दलित और पिछड़ा विरोधी होने के आरोप लगाते हुए कहा कि भाजपा सरकार पिछड़े और दलित वर्ग की हितैषी होने का दावा करती है। लेकिन हकीकत है यह है कि एक फीसदी आबादी प्रदेश के 40 प्रतिशत संसाधन का उपभोग करती है। वहीं 50 फीसदी आबादी के लिए सिर्फ 3 फीसदी संसाधन है। उन्होंने कहा कि जातीय जनगणना के अभाव में पिछड़े व दलित वर्ग को उनका वास्तविक हक नहीं मिल रहा है। प्रशासनिक सेवाओं, न्यायालयों में उनका पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं है। कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने जवाब देते हुए कहा कि जनगणना संविधान के अनुच्छेद 246 के तहत केंद्र सरकार की ओर से कराई जाती है। केंद्र सरकार ने इसके लिए अधिनियम और नियमावली भी बनाई है।

यूपी में अब खुल सकेंगे हुक्का बार

प्रयागराज। कोविड काल के दौरान उत्तर प्रदेश में बंद किए गए हुक्का बार को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने खोलने के निर्देश दे दिए हैं। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने योगी सरकार को निर्देश जारी किए हैं कि एक गाइडलाइन तय करके हुक्का बारों के लाइसेंस जारी किए जाएं। कोर्ट ने नियमानुसार अर्जी देने और उसे एक माह में निर्णीत करने का निर्देश दिया है। यह आदेश कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश प्रीतिंकर दिवाकर तथा न्यायमूर्ति एसडी सिंह की खंडपीठ ने स्वतः कायम जनहित याचिका को निस्तारित करते हुए दिया है। कोरोना संक्रमण को देखते हुए पांच सितंबर 20 के आदेश से मुख्य सचिव ने प्रदेश में हुक्का बार प्रतिबंधित कर दिया था। कोर्ट ने कहा कि कोविड प्रतिबंधों में ढील दे दी गई है। देश के अन्य प्रदेशों में हुक्का बार सहित इस तरह के व्यवसाय शुरू हो गए हैं। इसलिए प्रदेश में भी अनुमति दी जाए। अपर महाधिवक्ता ने कहा खाद्य सुरक्षा एवं मानक कानून के तहत आवेदन दे नियमानुसार आदेश पारित होगा।

सपा विधायक को डेढ़ साल की सजा

कार्रवाई

22 साल बाद कोर्ट ने सुनाया फैसला, पूर्व विधायक जवाहर पंडित की पत्नी हैं विजमा यादव

लखनऊ। प्रतापपुर से सपा विधायक विजमा यादव एमपीएमएलए कोर्ट ने डेढ़ साल की सजा सुनाई है। धारा 147, 341, 504, 353, 332 और 7 सीएलए एक्ट के तहत उनके खिलाफ मुकदमा दर्ज हुआ था। बृहस्पतिवार को न्यायालय ने उन्हें डेढ़ साल की सजा सुनाई। इससे विधायक विजमा यादव की विधायकी जाने से बच गई। आरोप है कि सपा विधायक विजमा यादव पर आरोप है कि उनके उकसाने पर ही भीड़ ने अनियंत्रित होकर पुलिस टीम पर गोली बम से हमला किया। इसमें पुलिसकर्मियों को गंभीर चोट लगी थी। घटना में विजमा यादव शामिल थीं। कहा गया कि 21 सितंबर 2000 को दोपहर ढाई बजे सहसों पुलिस चौकी के सामने श्याम बाबू के पुत्र आनंद जी उर्फ छोटू, सात वर्ष के बालक की दुर्घटना में मृत्यु हो जाने पर उसके शव को सड़क पर रखकर ईट, बल्ली लगाकर नाजायज तरीके से मजमा लगाकर बलवा किया। सभी लोग घातक असलहों से लैस थे, थाना प्रभारी, सराय इनायत कृपाशंकर दीक्षित तथा अन्य पुलिस अधिकारियों को जान से मारने की नीयत से ईट, पत्थर फेंके, जाम लगाकर सड़क पर अवरोध उत्पन्न किया जिससे लोगों को आने-जाने में परेशानी हुई। प्रतापपुर से सपा विधायक विजमा यादव कभी जिले के चर्चित माफिया और बाहुबली विधायक रहे जवाहर यादव उर्फ जवाहर पंडित की पत्नी हैं।

संक्षेप

अवकाश प्राप्त शिक्षक के निधन पर शोक, दी गई श्रद्धांजलि

सहसों। अवकाश प्राप्त शिक्षक गोजैहां, टकटैया करछना निवासी 95 वर्षीय पंडित रामधीरज मिश्र का बुधवार को प्रयागराज के निजी चिकित्सालय में इलाज के दौरान निधन हो गया?। उनके निधन से परिवारीजन सहित आसपास क्षेत्र में शोक व्याप्त हो गया। अवकाश प्राप्त शिक्षक के निधन पर गुरुवार को सहसों में प्रभाकर पांडे की अध्यक्षता में एक शोक सभा आयोजित किया गया। जिसमें मृत अवकाश प्राप्त शिक्षक को श्रद्धा सुमन अर्पित कर लोगों ने शोक व्यक्त करते हुए 2 मिनट का मौन रखकर मृतक आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई। इस अवसर पर चिंतामणि तिवारी ने शोक व्यक्त करते हुए कहा पंडित राम धीरज मिश्रा ने शिक्षा के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाने के साथ ही समाज सेवा के क्षेत्र में भी उन्होंने अपनी अग्रणी भूमिका निभाने का काम किया। उनके निधन से जहां परिजन शोक संतप्त हैं वहीं क्षेत्रीय शिक्षक समाज में भारी शोक व्याप्त है। इस अवसर पर शिक्षक, अवकाश प्राप्त शिक्षक एवं समाजसेवी गण उपस्थित रहे।

गंगा में डूबने से 9 वर्षीय बालक की मौत से मचा कोहराम

उरुवा। भाई के साथ चारा लेने गया बालक स्नान करने के दौरान गंगा के गहरे जल में डूबने लगा। छोटे भाई को डूबता देख बड़ा भाई भागकर घर पहुंचा और घटना की जानकारी परिजनों को दी। जानकारी होते ही परिजन तत्काल गंगा घाट पहुंचे और डूबे बालक को गंगाजल से बाहर निकाल कर आनन-फानन में सीएचसी रामनगर ले गए। जहां पर डॉक्टरों ने परीक्षण किया तो मृत घोषित कर दिया। मेजा थाना क्षेत्र के उपरौड़ा निवासी लाल बहादुर सोनकर के दो बेटे आनंद कुमार तथा 8 वर्षीय अजीत कुमार गुरुवार को दोपहर मवेशियों का चेहरा लेने गांव के ही कछार इलाके में गए थे। दोपहर में दोनों भाइयों को प्यास लगी तो दोनों भाई गंगा नदी के जल में पानी पीने पहुंचे। पानी पीने के बाद दोनों भाई नहाने के लिए गंगा में उतरे और नहाते समय छोटा भाई अजीत

बालक की मौत पर जुटी महिलाओं की भीड़ तथा इनसेट में मृत बालक की फाइल फोटो

कुमार डूबने लगा। छोटे भाई को डूबता देख बड़ा भाई आनंद कुमार भागकर घर पहुंच गया और भाई के डूबने की जानकारी घरवालों को दिया। बेटे को डूबने की जानकारी मिलते ही भागकर गंगा घाट पहुंचे परिजनों ने अजित कुमार को गंगा के गहरे जल से बाहर निकालकर इलाज के लिए लेकर आनन-फानन में सीएचसी रामनगर पहुंचे,जहां पर डॉक्टरों ने बालक का परीक्षण किया तो उसकी मौत होने की पुष्टि कर दी। बेटे के मौत की जानकारी होते ही पिता लाल बहादुर सोनकर मां फोटो देवी तथा दो भाइयों और बहनों सहित परिजनों का रोते बिलखते बुरा हाल था,घर में कोहराम मचा हुआ था।

रामपुर रेलवे क्रॉसिंग के समीप युवक का शव बरामद, हत्या की आशंका

नैनी। औद्योगिक थाना क्षेत्र के रामपुर रेलवे क्रासिंग के समीप गुरुवार को प्रतियोगी छात्र का शव बरामद किया गया। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई करते हुए पोस्टमार्टम के लिए मर्चरी भेज दिया। घटना में मृतक की मां ने हत्या की आशंका जताई है। मिली जानकारी के अनुसार औद्योगिक थाना क्षेत्र के छरिबना गांव निवासी शिवा मिश्रा (22) वर्षीय पुत्र अरुण मिश्रा बुधवार की शाम 7:30 बजे घर से किसी को दूध देने के लिए निकला था। तकरीबन एक घंटे बाद परिवार वालों को उसकी मौत की खबर मिली। मौके पर पहुंचे परिवार के लोग शव लेकर घर चले गए। मृतक के शरीर पर कई जगह चोट के निशान देखे गए। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई करते हुए पोस्टमार्टम के लिए मर्चरी भेज दिया। घटना में मृतक की मां मंजू देवी ने गांव के ही कुछ लोगों पर हत्या करने की आशंका जताई है। पुलिस मामले में जांच- पड़ताल कर रही है।

गड्ढा मुक्त सड़क में जमकर कागजी खेल

कोरांव। एक तरफ प्रदेश की योगी सरकार 2017 से लगभग हर वर्ष सड़को के गड्ढा मुक्त अभियान की घोषणा करती है, दूसरी तरफ अधिकारी सरकार की इस योजना को पलीता लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ते। लगभग 6 माह पूर्व सरकार द्वारा सभी सड़को के गड्ढा मुक्त करने के लिए अभियान चलाने की घोषणा की गई किंतु कोरांव में कही भी इस अभियान का असर देखने को नहीं मिला।

कोरांव तहसील की तमाम सड़के ऐसी है जिसमे कन्फर्म करना मुश्किल है की सड़को में गड्ढे है या सड़को में गड्ढे है, भोगन से देवघाट मार्ग, धूंस से हनुमान गंज लिंक मार्ग, लेडियारी मुख्य मार्ग से चैलारी लिंक मार्ग, लेडियारी मुख्य मार्ग से देवरी संपर्क मार्ग, कैथवल से किहूनी लिंक मार्ग, लेडियारी से पवारी संपर्क मार्ग समेत लगभग ऐसी कोई सड़क नही है जिसे कहा जाए की यह गड्ढा मुक्त सड़क है, लिंक मार्गो की स्थिति तो ज्यादा दयनीय है। कई सड़के ऐसी है जो जबसे बनी है तबसे मरम्मत की बाट जोह रही है।

ग्रामीणों का कहना है की इन लिंक मार्गो से बेहतर रहता की सड़क ही न होती कम से कम मिट्टी पर निरंतर चलने से चलने लायक लीक तो बन जाती है। इस विषय में जब कोई मुख्यमंत्री पोर्टल पर शिकायत करता है तो सबको रटा रटाया जवाब मिलता है की सड़क की मरम्मत के लिए प्रस्ताव भेजा गया है स्वीकृत मिलते ही कार्य कराया जायेगा।

गौर करने वाली बात यह है सरकार की मंशा क्या है? बिना बजट के गड्ढा मुक्त सड़क सरकार की घोषणा मात्र है या अधिकारियों का कागजी खेल बन चुका है।

दबंगों ने विधवा के मकान का ताला तोड़कर किया कब्जा, मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। विधवा घर में ताला बंद कर रिश्तेदार के यहां गयी तो जब वापस लौटी तो दबंगों ने घर का ताला तोड़कर कब्जा कर चुके थे। विधवा ने तीन के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दी है।

मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम भाले का वन धरौता निवासनीय कविता सिंह उर्फ हिना पत्नी स्वर्गीय रंजीत सिंह रिश्तेदार के यहां घर में ताला बंद कर गयी थी। जब वापस लौटी तो देखा कि दबंगों ने उसके घर पर कब्जा कर लिए हैं। विधवा कविता सिंह ने मऊआइमा थाने में पवन ,आकाश ,शेरा पुत्रगण सियाराम विश्वकर्मा ग्राम शक्ती महमदपुर अलपी का पूरा के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दी है।

आवश्यकता है

शिव लॉ कालेज करनाईपुर, बहरिया, प्रयागराज में स्ववित्तपोषित योजना के अन्तर्गत स्नातक स्तर पर विधि संकाय के अन्तर्गत त्रिवर्षीय एल.एल.बी. पाठ्यक्रम के प्राचार्य एक पद एवं सह आचार्य विधि संकाय के छः पद की आवश्यकता है। शैक्षिक योग्यता यू.जी.सी./ विश्वविद्यालय के मानकानुसार। वेतनमान राज्य सरकार एवं यू.जी.सी. के मानकानुसार देय होगा। **नोटः** इच्छुक अभ्यर्थी अपने समस्त अंकपत्रों/प्रमाण पत्रों के साथ महाविद्यालय के पते पर विज्ञापन प्रकाशित होने की तिथि से 7 दिन के अन्दर आवेदन करें। साक्षात्कार हेतु सूचना ई-मेल/दूरभाष के माध्यम से दिया जायेगा।

प्रबंधक-मो0: 9936234744

युवक ने महिला का अश्लील वीडियो बना कर मांगी रागदारी, मुकदमा दर्ज

घिनौनी हरकत

महिला का अश्लील वीडियो बना कर युवक ने मांगा बीस हजार रंगरदारी

महिला द्वारा दस हजार देने के बाद भी वीडिओ कर दिया वायरल

मऊआइमा। एक महिला के यहां रिश्तेदार युवक रहता था। यहां से जाने के बाद फोन पर उससे अश्लील बातें करने लगा। मना करने पर रिश्तेदार ने यह धमकी दी कि स्नान, एंव सोते समय उसका वह वीडीओ बना लिया हैं। यदि बीस हजार नहीं दोगी तो सोशल मीडिया पर डाल कर बदनाम कर दूंगा। महिला ने लोकलाज के भय से दस हजार दे दिया तो वह फिर बीस हजार मांगने लगा। मांग न पूरी होने पर सोशल मीडिया पर वीडीओ वायरल कर दिया। महिला ने युवक और उसके अधिवक्ता भाई के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

मऊआइमा थाना क्षेत्र के एक गांव निवासिनी एक महिला का आरोप है कि उनके यहां फूफा का छोटा पुत्र रहता था। यहाँ से जाने के बाद वह उससे मोबाइल पर अश्लील बातें करने लगा। मना करने पर तह धमकी दी कि तुम जब स्नान कर रही थी और सो रही थी तो वह उसका अश्लील वीडियो बना लिया है। यदि बीस हजार रुपये नहीं दोगी तो वीडीओ सोशल मीडिया पर डाल कर बदनाम कर दूंगा। महिला का कहना है कि वह अपनी बहन से दस हजार रुपये लेकर दे दिया। बावजूद इसके वह ब्लैकमेल करने लगा और फिर बीस हजार मांगने लगा न मिलने पर सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल कर दिया। और यह धमकी दी कि यदि किसी को बताए तो मेरा भाई हाईकोर्ट में अधिवक्ता है। तुम को और तेरे पति को फर्जी मुकदमा में फंसवा कर जेल भेज दूंगा। उक्त सारी कहानी महिला ने अपने पति और भाई से बताई तो वह युवक को घर बुलाए। जहां वह तमंचा तथा,मोबाइल लेकर आया। मोबाइल छीन कर उसके अधिवक्ता भाई को बुलाया तो वह आने से इंकार करते हुए नहर ददौली पेट्रोल पंप के निकट बुलाया। जहां महिला का पति और उसका भाई गए तो उल्टा युवक का अधिवक्ता भाई ने यह धमकी दी कि में हाईकोर्ट का सीनियर वकील हूँ। फर्जी मुकदमा में फंसा कर जेल भेज दूंगा। मजबूरन महिला ने मऊआइमा थाने में विद्यासागर तथा उसके अधिवक्ता भाई नाम अज्ञात पुत्रगण शिवनाथ निवासी सराय राजा थाना खरवई जनपद प्रतापगढ़ के खिलाफ विभिन्न संगीन धाराओं में मुकदमा दर्ज करा दिया है।

उप जिलाधिकारी के रोक के बावजूद दबंग कर रहे हैं कब्जा

मऊआइमा। मऊआइमा के घीन पुर महमद पुर में एक परिवार का अपने पुश्तैनी भूमि पर सेहन दरवाजा है। जिसपर दबंग भूमाफिया कब्जा कर रहे हैं। एस डी एम ने रोकने का आदेश भी दिया है। परन्तु दबंगों के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं हो रही है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम घीनपुर के महमदपुर निवासी राम चन्द्र पुत्र स्वर्गीय कृपाल अत्यंत गरीब है। किसी तरह विभिन्न प्रकार के अखबारों का वितरण कर जीविकोपार्जन करता है। राम चन्द्र कहना है कि उसकी पुशतैनी जमीन जिसपर हमेशा से उसका सेहन दरवाजा है। गांव के कतिपय दबंग शोरे पुश्ती से जमीन पर कब्जा कर रहे हैं मना करने पर असलहों का प्रदर्शन करते हैं। जबकि एस डी एम ने निषेधाज्ञा लगाते हुए। रोकने का आदेश पुलिस को दिया है। परन्तु रामचन्द्र की कोई सुनवाई नहीं हो रही है। रामचन्द्र ने शासन-प्रशासन से न्याय की गुहार लगाई है।

लालगोपालगंज में बिजली के बकायेदारों पर हुई कार्रवाई

लालगोपालगंज। स्थानीय कस्बे में बिजली विभाग ने बकायेदारों के खिलाफ अभियान चलाया है। कई उपभोक्ताओं के कनेक्शन कटे, तो कई लोगों से बकाए की रकम वसूली गई। इस दौरान कस्बा में हड़कंप का माहौल रहा।

अवर अभियंता प्रदीप पटेल की अगुवाई में बिजली विभाग के कर्मचारियों ने लालगोपालगंज कस्बे के दानियालपुर, इमामगंज, कलेक्टरगंज और काली जी मंदिर मार्ग पर भ्रमण कर बिजली चोरी की रोकथाम और बकायेदारों से वसूली के लिए अभियान चलाया। बाईपास कनेक्शन से बिजली के चोरी करने वालों का कनेक्शन काटा गया, वही 30 उपभोक्ताओं का संयोजन काट कर उनसे 2 लाख 95 हजार रूपए राजस्व की वसूली की गई। एसडीओ हर्ष गुप्ता ने बताया कि शासन द्वारा दिए गए निदेर्शों का पालन कर बकायेदारों के विरुद्ध कार्रवाई की जा

बकायेदारों के खिलाफ अभियान चलाते बिजली कर्मी

रही है। बिजली चोरी के रोकथाम के लिए टीमें गठित हैं। यदि बिजली चोरी पकड़ी गई तो वैधानिक कार्यवाही होगी। उन्होंने बकायेदारों से बिजली बिल जमा करने का आह्वान भी किया। इस दौरान, मोहम्मद हफीज उर्फ पप्पू, मोहम्मद रेहान, राजेंदर कुमार, ओम प्रकाश, मीटर रीडर अंसार अहमद आदि लोग उपस्थित रहे।

आवश्यकता है

श्याम सुन्दर शिक्षण-प्रशिक्षण महाविद्यालय मवई कला कुण्डा, प्रतापगढ़ (उ0प्र0) में स्ववित्तपोषित योजना के अन्तर्गत कला संकाय (बी0ए0) में भारतीय प्राचीन इतिहास, शिक्षा शास्त्र, अंग्रेजी, गृह विज्ञान, हिन्दी, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र (प्रत्येक विषय हेतु एक पद) एवं शिक्षा संकाय (बी0एड0) में बी0एड0 प्रवक्ता हिन्दी, गणित, विज्ञान (प्रत्येक विषय हेतु एक पद) और सामाजिक विज्ञान विषय के दो पद हेतु आवेदन पत्र विज्ञापन तिथि से 15 दिन के अन्दर आमंत्रित किये जाते हैं।

सभी पदों हेतु योग्यता यू0जी0सी0/ NCTE/उ0प्र0 शासन द्वारा निर्धारित योग्यता के अनुरूप होगी।

मैनेजर

श्याम सुन्दर शिक्षण-प्रशिक्षण महाविद्यालय मवई कला कुण्डा, प्रतापगढ़।

मो0: 9450184497, 7905488086

एसडीओ के आश्वासन पर किसानों का धरना समाप्त

धरना समाप्त

विद्युत उपकेंद्र शंकगढ़ पर विभिन्न समस्याओं को लेकर एक सप्ताह से किसान बैठे थे धरने पर

शंकगढ़। विद्युत वितरण उपकेंद्र शंकरगढ़ में भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) के बैनर तले क्षेत्रीय किसानों का एक सप्ताह से चल रहा धरना प्रदर्शन गुरूवार को यूनियन के जिलाध्यक्ष की उपस्थिति में एसडीओ विद्युत विभाग शंकरगढ़ के आश्वासन पर समाप्त हो गया।

क्षेत्रीय किसान भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) के बैनर तले विगत 16 फरवरी से विद्युत वितरण उपकेंद्र शंकरगढ़ में अनिश्चितकालीन धरने पर बैठे थे। उनकी प्रमुख मांगे किसानों को सीजनल कनेक्शन दिया जाए, कनेक्शन दिए जाने तक किसानों का उत्पीड़न ना किया जाए, किसानों से अवैध वसूली ना की जाए। साथ ही जूही व आमगोंदर फीडर के जर्जर तारों को बदलने के साथ ही पोल

समस्याओं को लेकर ज्ञापन सौंपते हुए

की दूरी कम की जाए। ऐसी तमाम मांगों को लेकर किसान धरने पर बैठे हुए थे। लेकिन कल तक कोई सुनने के लिए नहीं आया। आज जिलाध्यक्ष संजय यादव के आने पर किसानों ने पावर हाउस में तालाबंदी की घोषणा कर दी। यही नहीं किसान तालाबंदी करने पहुंच भी गए। लेकिन उसी समय थानाध्यक्ष शंकरगढ़ मनोज कुमार सिंह अपनी टीम के साथ पहुंचे तथा एसडीओ विमल कुमार यादव को बुलाया गया।

जिस पर किसानों से एसडीओ तथा पुलिस से किसानों की काफी देर तक नोकझोंक होती रही। बाद में थानाध्यक्ष के समझाने पर किसान माने तथा वार्ता के लिए तैयार हुए। बाद में पुलिस फोर्स की उपस्थिति में किसान नेताओं तथा एसडीओ विद्युत विभाग से वार्ता हुई। इसमें एसडीओ ने यह कहा कि जूही फीडर के लोड को कम करने के लिए एक अलग से उपकेंद्र का टेंडर हो गया है। आम गोदर तथा जूही फीडर के जर्जर तारों व पोल का सर्वे करा लिया गया है। उसका भी टेंडर हो गया है शीघ्र ही सुधार हो जाएगा। उन्होंने कहा सीजनल कनेक्शन हमारे अधिकार क्षेत्र से बाहर है। हमारे यहां एक्सियन का पद खाली है। जैसे ही नए एक्सियन पदभार ग्रहण करते हैं हम किसान नेताओं से उनकी वार्ता करा कर इस समस्या का समाधान करूंगा। हां हम इतना जरूर करेंगे जब तक आपकी समस्या का समाधान नहीं हो जाता हम किसानों की मोटर तथा तार आदि नहीं लाएंगे। इसी पर किसान नेताओं ने जिला अध्यक्ष संजय सिंह की उपस्थिति में धरने को समाप्त करने की घोषणा की। धरने में किसान यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष अनुज सिंह भी आ रहे थे। लेकिन जानकारी होने पर वह रास्ते से वापस लौट गए। धरना समाप्त होने पर जहां विद्युत विभाग के एसडीओ व कर्मचारियों ने राहत की सांस ली वही पुलिस विभाग की अटकी सांसे सामान्य हुई। धरने में आज प्रमुख रूप से संजय यादव जिलाध्यक्ष, सुरेन्द्र सिंह एडवोकेट जिला महासचिव, पूजा कुशवाहा जिलाध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ, गगन सिंह तहसील अध्यक्ष, राजू सिंह ब्लाक अध्यक्ष, कृष्ण बहादुर सिंह यमुनापार प्रभारी, कन्हैया लाल, राम भवन वर्मा, अर्जुन सिंह, जगत पाल सिंह, हंसराज सिंह आदि लोग उपस्थित थे।

जिला उपाध्यक्ष अल्पसंख्यक भाजपा के घर को चोरों ने बनाया निशाना

नवाबगंज। डांडी चौकी के ठीक पीछे मुबारकपुर उपरहार गांव के रहने वाले भाजपा अल्पसंख्यक जिला उपाध्यक्ष गंगापार मो0 फैजान के घर को चोरों ने निशाना बनाया। चोरों ने दीवार के रास्ते घर में घुसकर कमरे व बक्से को तोड़ कर सोने चांदी के आभूषण व नगद 90 हजार उठा ले गए। दिनांक 23 फरवरी को जब मो फैजान को पैसे की जरूरत पड़ी तो वह अपने घर के सबसे पीछे वाले कमरे में गए। वहां बिखरे हुए सामानों को देखते ही वह भौंचक्का रह गए। नब्बे हजार रुपए व सोने चांदी के आभूषण के अलावा जरुरी कागजात गायब होने की सूचना पुलिस को दी। नवाबगंज पुलिस को तहरीर देते हुए मुकदमा पंजीकृत करने की मांग किया। प्रभारी निरीक्षक अनूप सिंह ने बताया कि नवाबगंज पुलिस तहरीर लेकर मामले की जांच कर रही है।

बच्चे की मौत मामले में विधायिका विजमा यादव को डेढ़ वर्ष की सजा

सहसों। 22 वर्ष पूर्व सहसों में एक सड़क दुर्घटना में बच्चे की मौत के बाद आक्रोशित लोगों ने सहसों चौराहे पर चक्का जाम कर दिया था। मामले में 25 -26 लोग अभियुक्त बनाए गए थे। प्रतापपुर की विधायक विजमा यादव सहित 15 क्षेत्रीय लोग वर्तमान समय में अभियुक्त रहे। मामले में कोर्ट में सुनवाई चल रही थी। गुरुवार को फैसला आने पर कोर्ट ने प्रतापपुर की विधायिका विजमा यादव को डेढ़ वर्ष की सजा सुनाते हुए सभी नामजद अभियुक्तों को बेदाग बरी कर दिया। जिससे क्षेत्र के लोगों ने संतोष व्यक्त किया। श्याम बाबू केसरवानी निवासी कसेरूआ कला के तीसरे नंबर का पुत्र आनंद उर्फ छोटू अपनी बहन आभा के साथ 21 सितंबर 2000 को विकास इंटर कॉलेज में पढ़ने के लिए जा रहे थे कि प्रयागराज की तरफ से आ रही बस की चपेट में आने से आनंद उर्फ छोटू की घटनास्थल पर मौत हो गई थी।दुर्घटना में मृतक आनंद के पिता श्याम बाबू केसरवानी ने बताया कि बिना परिवार की सहमति के शव को यहां से पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया था जिसके बाद स्थानीय लोगों में भारी आक्रोश के चलते चक्का जाम कर दिया था। मौके पर विधायिका विजमा यादव व उस वक्त फूलपुर में कार्यरत क्षेत्राधिकारी बबीता साहू के बीच में काफी नोकझोंक हुई जिसे लेकर प्रशासन ने विधायिका सहित 25 26 लोगों पर चक्का जाम करने व अशांति फैलाने को लेकर मुकदमा पंजीकृत किया था।

22 वर्ष बाद गुरुवार को एमपी एमएलए कोर्ट का फैसला आने पर पिता श्याम बाबू केसरवानी, माता पुष्पा देवी, भाई अंकुर तथा यादवेंद्र केसरवानी ने खुशी व्यक्त करते हुए कोर्ट के निर्णय की सराहना की।

आवश्यकता है

बृजराज सिंह डिग्री कालेज
बुलमा, आलेपुर, सैदाबाद, प्रयागराज
बी.एस.सी. (एग्रीकल्चर)
पाठ्यक्रम हेतु
विभागाध्यक्ष (01) पद, सहायक आचार्य (12) पद, योग्यता एवं वेतनमान यू.जी.सी. + आई. सी. ए. आर /वी.आर.एस.यू. के मानकानुसार इच्छुक अभ्यर्थी विज्ञापन के 7 दिन के अन्दर महाविद्यालय में आवेदन जमा करें।
प्रबन्धक
बृजराज सिंह पी.जी. कालेज
बुलमा, आलेपुर, सैदाबाद, प्रयागराज
Mob.: 9889056889
Email: brsdcollege87@gmail.com

बृजराज सिंह लॉ कालेज
बुलमा, आलेपुर, सैदाबाद, प्रयागराज
सम्बद्ध
प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्राचार्य (01) पद, सहायक आचार्य (09) पद, योग्यता L.L.M., NET, Ph.D.
वेतनमान –
यू.जी.सी. मानकानुसार
इच्छुक अभ्यर्थी विज्ञापन के 15 दिवस के अन्दर महाविद्यालय में आवेदन जमा करें।
प्रबन्धक
विनय सिंह
Mob.: 9889056889
Email: brijrajsinghlaw college@gmail.com

सम्यक संबैधानिक क्रांति मोर्चा ने विभिन्न मांगों को लेकर सौंपा ज्ञापन

ज्ञापन

मांग न पूरी होने पर रेल मार्ग जाम करने की दी चेतावनी

मेजा। तहसील मुख्यालय मेजा में गुरुवार को दक्षिणांचल क्षेत्र की सैकड़ों भूमिहीन महिलाओं ने अपनी मांगों को लेकर सम्यक संवैधानिक क्रांति मोर्चा के बैनर तले एक दिवसीय धरना प्रदर्शन कर राष्ट्रपति के नाम नायब तहसीलदार मेजा राजेंद्र कुमार और लालतारा अनुग्रह नारायण को संयुक्त रूप से ज्ञापन सौंपा। प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे मोस्टपा के राष्ट्रीय संयोजक रामराज आदिवासी ने कहा कि एक माह के अंदर मांगों को पूरा नहीं होने पर 24 घंटे के लिए राष्ट्रीय मार्ग व रेल मार्ग को रोकने की चेतावनी दी।

ज्ञापन के माध्यम से अवगत कराया कि सरकारी संस्थानों का

राष्ट्रपति के नाम नायब तहसीलदार मेजा को ज्ञापन सौंपते हुए

निजीकरण बंद हो, किसानों को मासिक वेतन दिया जाय, ओबीसी जातिवार जनगणना की जाय, भूमिहीनों को 5 बीघा जमीन दिया जाय, उच्च एवं उच्चतम न्यायालय में ओबीसी एससी एसटी की भागीदारी सुनिश्चित करने, कोल, मुसहर को जनजातीय का दर्जा दिए जाने, संविधान के तहत महिलाओं को पैतृक संपत्ति में हिस्सेदारी दिए जाने, सांसदों विधायकों का पेंशन बंद किए जाने, बालू, पत्थर खनन एवं मत्स्य पालन में पीढ़ी दर पीढ़ी कार्य करने वाले लोगों को 5 हजार रुपए महीना मेहनताना दिए जाने की मांग शामिल है।

भागवत कथा के चौथे दिन मनाया भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव

जंघई। अभयराज मिश्र पूर्व प्रधान गोपालापुर के निवास पर आयोजित भागवत कथा के चौथे दिन भगवान श्री कृष्ण का जन्मोत्सव मनाया गया इसमें श्रद्धालु जमकर थिरके इस मौके पर पूरा कथा परिसर भगवान श्री कृष्ण के जयकारों तथा नंद के आनन्द भयो, जय कन्हैयालाल की जय से गूंजायमान हो उठा। कथा व्यास रामानुजाचार्य स्वामी हरिप्रपन्नाचार्य महाराज ने भगवान श्री कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन कर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा जब-जब अत्याचार और अन्याय बढ़ता है, तब-तब प्रभु का अवतार होता है। प्रभु का अवतार अत्याचार को समाप्त करने और धर्म की स्थापना के लिए होता है। जब कंस ने सभी मयार्दाएं तोड़ दी तो प्रभु श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। यहां पर जैसे ही श्रीकृष्ण के जन्म का प्रसंग कथा में आया तो श्रद्धालु हरे राधा-कृष्ण के उदघोष के

भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव मनाते हुए

साथ नृत्य करने लगे जन्मोत्सव के प्रसंग को भाव विभोर कर दिया।कथा के पश्चात आरती प्रसाद का वितरण किया गया जिसमें मुख्य यजमान इंद्रावती देवी उदयराज मिश्र, सावित्री अभयराज मिश्र, शकुंतला खेमराज मिश्र, सीता देवी श्याम राज मिश्र, सुशीला देवी अवध राज मिश्र, शमला देवी प्रेमराज मिश्र, सविता धर्मराज मिश्र एवं कार्यक्रम संचालकों में अनुज महाराज, अभिषेक शुक्ला, गंगाधर पांडेय, कल्लू पंडित, कुल गुरू अखिलेश त्रिपाठी, कुल पुरोहित जगदंबा प्रसाद शुक्ल, दुर्गा प्रसाद शुक्ल, उदयराज मिश्र, बाबा मिश्रा, देवेंद्र दुबे, परिजनों में धर्मेंद्र, जितेंद्र, मनोज, संजय, अरविंद, राजू, दीपक, आशीष, दिलीप, अतुल, संदीप, कुलदीप, मयंक, मंथन, यश, हर्ष, दिव्यांश, युग, बिवान, आरव, मानसी, मान्या, सौम्या, पीहू, श्रीनिधि, कामना, सुनिधि, बैदेही आदि लोग मौजूद रहे।

उत्तर मध्य रेलवे G20

No. GSU-II-PRYJ-06-2023 दिनांक: 21.02.2023

ई- निविदा आमंत्रण सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से उप मुख्य अभियन्ता - II/ जी.एस.यू/प्रयागराज, उत्तर मध्य रेलवे के अधीन निम्नलिखित निर्माण कार्यों हेतु ई-प्रापण निविदायें आमंत्रित करते हैं। (ब्राड खुली निविदा - एकल पैकेट प्रणाली) समाप्ति की तिथि/समय, 28.03.2023 15:00 बजे तक। बोली लगाने वाले अपने मूल/संशोधित बिड्स समर्पित तिथि एवं समय तक मात्र जमा कर सकते हैं। इस निविदा के लिए मैनुअल ऑफर की अनुमति नहीं है और प्राप्त किसी ऐसे मैनुअल प्रस्ताव को नजर अंदाज कर दिया जाएगा।

निविदा संख्या	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत (₹)	धरोहर धनराशि (₹)	निविदा फार्म का मूल्य
GSU-II-PRYJ-06-2023	उत्तर मध्य रेलवे के प्रयागराज मंडल में उप मुख्य अभियन्ता - II/जी.एस.यू./ प्रयागराज के अधीन 9 सम्पार (05 छोड़ सहित एल-यू-एस नंबर 4, 71-ए, 79, 82, 151 और 04 रेलवे भवन नंबर 3, 28, 32, 240 - ए) के स्थान पर रोड ओवर ब्रिज के निर्माण के लिए मिट्टी की जांच।	₹ 41.85 लाख	₹ 83,300/-	₹ 0.00/-

खुलने की तिथि : 28.03.23, 15:00 — **कार्य समापन अवधि** : 4 महीने

पात्रता मानदंड के लिए कार्य की समान प्रकृति की परिभाषा: कोई न्यूनतम पात्रता मानदंड आवश्यक नहीं है क्योंकि कार्य का मूल्य 50 लाख से कम है।

नोट- पूर्ण विवरण और निविदा जमा करने के लिए कृपया भारतीय रेलवे की **https://www.ireps.gov.in** वेबसाइट देखें।

नोट: 1. उपरोक्त ई-प्रापण निविदा का पूर्ण विवरण (निविदा प्रपत्र सहित) **https://www.ireps.gov.in** पर निर्धारित तिथि तक 15:00 बजे तक उपलब्ध रहेगा। 2. उपरोक्त सभी निविदाओं में ई-बिड के अलावा किसी अन्य रूप से बिड स्वीकार नहीं की जायेगी। इस प्रयोजन हेतु वेन्डरों को चाहिए कि वे अपने आप को **I. T. Act-2000** के अन्तर्गत **CCA** द्वारा जारी **Class-III, Digital** हस्ताक्षर प्रमाण-पत्र के साथ **IREPS** की वेबसाइट पर पंजीकृत करायें। 3. निविदा की दरें केवल डिजिटल हस्ताक्षरित फाइनेंशियल रेट पेज पर ही विचारणीय है। दरें तथा अन्य वित्तीय प्रस्ताव अन्य किसी भी फार्म / टेटशीट पर यदि संलग्न है तो उस पर विचार नहीं किया जायेगा तथा सीधी तौर पर अमान्य कर दिया जायेगा। 4. संलग्न किये जाने वाले सभी प्रपत्र निविदाकर्ता द्वारा हस्ताक्षरित होने चाहिये। 5. किसी भी प्रकार की तकनीकी समस्या के समाधान के लिए IREPS की वेबसाइट की हेल्पलाइन से सम्पर्क किया जा सकता है।

287/23 (ADM)

North central railways @CPRONCR @northcentralrailway www.ncr.indianrailways.gov.in

भारतीय चन्दन वृक्ष की खेती विषय के बारे में जानकारी देते विशेषज्ञ

प्रयागराज

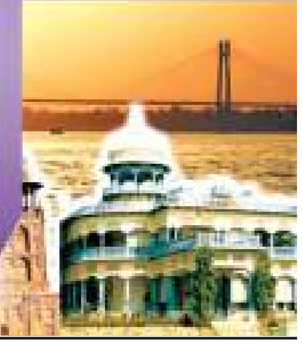

मौसम

अधिकतम :	27.00
न्यूनतम :	15.00
सूर्योदय :	06.50
सूर्यास्त :	05.27

पत्रकार के पिता की इलाज के दौरान निधन

नैनी। नैनी क्षेत्र के रीवा रोड डांडी बाजार निवासी राजीव जायसवाल (पत्रकार) के पिता मुन्नू लाल जायसवाल (75) वर्षीय का गुरुवार की दोपहर लंबी बीमारी के चलते इलाज के दौरान स्वरूप रानी अस्पताल में निधन हो गया। शाम को तकरीबन 5:00 बजे रसूलाबाद घाट पर उनकी अंत्येष्टि की गई। उनके निधन पर पत्रकार नरेंद्र श्रीवास्तव, शिवमूरत केसरवानी, गौरव केसरवानी, हजारी कुशवाहा, राजीव वर्मा ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति एवं परिजनों को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की।

तस्करी कर लाई गई खतरनाक मछली से भरे ट्रक को उतरांव पुलिस ने पकड़ा

उतरांव। जनपद प्रयागराज के उतरांव पुलिस ने गुरुवार को प्रतिबंधित मांगुर मछली से भरा ट्रक पकड़ा। पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर कानपुर की ओर जा रहा एक ट्रक को मदार्पुर हाइवे मंगल ढाबा के पास चेकिंग दौरान प्रतिबंधित मांगुर मछलियां पाई गईं। आरोपी ट्रक के अंदर पानी भरकर मछलियों का बीज कोलकाता से हरियाणा करनाल ले जा रहे थे।

पुलिस ने ट्रक चालक समेत 3 को गिरफ्तार किया है। थाना प्रभारी श्रावण कुमार ने बताया कि पकड़ी गई मछली की जांच मत्स्य विभाग के अधिकारी कर रहे हैं। पुष्टि के बाद कार्रवाई की जाएगी। मत्स्य विकास अधिकारी शीला सिंह ने बताया कि बीस टन पानी मे छह टन मछली अनुमान लगाया गया है। केंद्र सरकार ने वर्ष 2000 में मांगुर मछली पर प्रतिबंध लगाया था। इसके बाद जनवरी 2019 में एनजीटी ने अधिकारियों को छापेमारी कर मछली पालन रोकने के निर्देश दिए थे।

पकड़ी गयी प्रतिबंधित मछलियां व मत्स्य विभाग के अधिकारी

इसलिए खतरनाक है मांगुर मछली

मांगुर मछली मांसाहारी है। यह इंसानों का मांस खाकर बढ़ जाती है। मछली पालक अधिक मुनाफे के चक्कर में तालाबों और नदियों में प्रतिबंधित थाई मांगुर को पाल रहे हैं। यह मछली चार महीने में ढाई से तीन किलो तक तैयार हो जाती है। जो बाजार में करीब सौ रुपए किलो बिकती है। इस मछली में 80 फीसदी लेड और आयरन के तत्व पाए जाते हैं। इस मछली की खास बात यह है कि यह किसी भी पानी (दूषित पानी) में तेजी से बढ़ती है। मांगुर छोटी मछलियों समेत यह कई अन्य जलीय कीड़े-मकोड़ों को खा जाती है। इससे तालाब का पर्यावरण भी खराब हो जाता है।

रोकड़ी में श्रीमद्भागवत कथा आज से

करछना। करछना के रोकड़ी गांव में जन कल्याण हेतु संगीतमयी श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान महायज्ञ सप्ताह 24 फरवरी शुक्रवार से आयोजित किया गया है । जिसमें कथा के प्रथम दिन बुधवार को वेदी रचना एवं प्रतिष्ठा पूजन के सहित कलश यात्रा निकाली जाएगी । यह जानकारी कथा के संयोजक पारसनाथ तिवारी ने दी है । उन्होंने बताया कि कुल गुरु श्री श्री 1008 स्वामी नारायण दास जी के सानिध्य में मुख्य श्रोता यजमान के रूप में स्व लक्ष्मीकांत तिवारी की पत्नी सुशीला देवी होंगी। और कथा वाचक के रूप में कथा व्यास पं लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी रहेंगे। उन्होंने लोगों से कलश यात्रा में शिरकत करने व कथा श्रवण के लिए अपील की है ।

प्रबंधक के निधन पर जताया शोक व्यक्त की संवेदना

करछना। पीड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय पीड़ी के प्रबंधक अशोक कुमार शुक्ल की गत दिवस हुई आसमायिक मृत्यु पर बुधवार को पीड़ी पीजी कालेज के निदेशक अनुराग शुक्ल मोनू की अध्यक्षता में एक शोक सभा आयोजित हुई । जिसमें दो मिनट का मौन रखकर मृत आत्मा की शांति हेतु ईश्वर से सामूहिक रूप से प्रार्थना की गई। इसी प्रकार बाबा लाल शुक्ल इंटर कॉलेज पीड़ी के प्रधानाचार्य पवन कुमार मिश्र की अध्यक्षता में व चंद्र शेखर तिवारी हाई स्कूल पडोखरा के प्रधानाचार्य श्याम सुंदर त्रिपाठी की अध्यक्षता में शोक सभा आयोजित हुई। मां शारदा कान्वेंट हाई स्कूल कुलमई के प्रबंधक त्रिवेणी प्रसाद मिश्र व राम अचल सिंह पब्लिक स्कूल एंड कॉलेज मेदिनीसिंह का पूरा में प्रबंधक आचार्य रणविजय सिंह की अध्यक्षता में बुधवार को शोक सभा आयोजित हुई । जिसमें लोगों की ओर से दो मिनट का मौन रखकर मृत आत्मा की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गई। इस मौके पर रमाकांत शुक्ल सुशील कुमार मिश्र सुधाकर मिश्र स्वामीनाथ त्रिपाठी रविशंकर द्विवेदी आशुतोष त्रिपाठी संजय तिवारी अनूप पांडेय संजीव पांडेय सहित संबंधित विद्यालयों के शिक्षक लोग मौजूद रहे।

उत्तर प्रदेश की जलवायु चन्दन के लिए उपयुक्त : डॉ. आर. सुन्दरराज

प्रयागराज। पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज तथा काष्ठ विज्ञान प्रऔद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर के संयुक्त तत्वाधान में गुरुवार को पूर्वी उ.प्र. में भारतीय चन्दन वृक्ष की खेती विषय पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. सिंह ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने चन्दन के आर्थिक महत्व को बताते हुए क्षेत्र विशेष में चन्दन को कृषिवानिकी में अपनाने हेतु आह्वान किया। कार्यक्रम समन्वयक डा. अनुभा श्रीवास्तव, वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा कृषिवानिकी के परिचय के साथ क्षेत्र में स्थापित कृषिवानिकी प्रजातियों यथा यूकेलिप्टस, पॉपलर, सागौन, गम्हार, बाँस, बर्माड्रेक, सहजन, बकैन, आंवला, आम, महुआ आदि प्रजातियों की आर्थिकी पर प्रकाश डाला। विशिष्ट वक्ता डॉ. सुन्दरराज ने क्षेत्र की जलवायु को चन्दन हेतु उपयुक्त बताते हुए बीज द्वारा नर्सरी विधियों, पौधरोपण हेतु क्षेत्र की तैयारी, गड्ढा खुदान, दूरी, अंतरफसले तथा साथ में किसी भी दलहनी फसल जैसे अरहर, अगस्ती आदि को पौधों से 1 फीट की दूरी पर लगाना जरूरी बताया, जिससे चन्दन के पौधे का उचित विकास हो सके। अन्य तकनीकी जानकारी में उन्होंने चन्दन पेड़ की छटाई हेतु भी मना किया। क्योंकि वृक्ष का संतुलन, वृद्धि तथा बीमारी आदि से तभी बचाव होगा। इस वृक्ष के हार्टवुड से लगभग 10 किग्रा सुगन्धीय तेल प्राप्त होता है जो लग?भग 12500 प्रति किग्रा बिक्री द्वारा 15 वर्ष के बाद 1 वृक्ष से लगभग 1.25 लाख की आमदनी प्राप्त की जा सकती है। प्रतापगढ़ के चिलबिला क्षेत्र के उन्नत कृषक उत्कृष्ट पाण्डेय ने काष्ठ विज्ञान एवं प्रऔद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर के निर्देशन में लगभग 2 एकड़ क्षेत्र में 500 वृक्ष तथा 1000 पौधो से अधिक की नर्सरी भी तैयार किया है, ने अपने अनुभव कृषकों से साझा किया। कार्यक्रम में पी. एन. सिंह, भा. व. से. (से. नि.) तथा प्रयागराज, प्रतापगढ़ आदि के समीपवर्ती क्षेत्रों से लगभग 50 से अधिक किसानों ने बढ़ - चढ़कर भाग लिया।

संक्षेप

थाना बहरिया के हेड कांस्टेबल बने दरोगा

बहरिया। स्थानीय थाने में मुख्य आरक्षी पद पर तैनात राम अवतार सिंह का विभागीय चयन उप निरीक्षक पद पर हुआ था । वे उप निरीक्षक पद की प्रषिक्षण ले रहे थे। प्रषिक्षण पूर्ण होने के बाद वे गुरुवार को वापस थाने लौटे तो उन्हे षासन द्वारा प्रदत्त बिल्ला लगा कर बहरिया थाने के थानाध्यक्ष एवं उपनिरीक्षक विवेक कुमार यादव ने सम्मानित किया । उक्त अवसर पर अजीत कुमार मौर्य, देवव्रत तिवारी, बाल किषुन राम आदि थाने के समस्त स्टाफ मौजूद रहे ।

सिपाही से दरोगा का स्टार लगने पर जताई खुशियां

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश पुलिस में सिपाही के पद पर तैनात इब्नेयास अहमद सिद्दीकी को स्टार मिलने पर पुलिस महकमे में तथा परिवारजनों में खुशियों की लहर है । एक तरफ जहां पुलिस नगर कार्यालय में डीसीपी दीपक भूकर स्टार लगा कर सिपाही से को दरोगा बनने की शुभकामनाएं दे रहे थे वहीं दूसरी तरफ परिवार तथा शुभचिंतकों में खुशियों का ठिकाना नहीं रहा । पदोन्नति का स्टार पाकर इब्नेयास भी खुशी के मारे फुले नहीं समा रहे थे आपको बताते चलें कि सिपाही के पद पर तैनात सैकड़ों सिपाही को दरोगा बनाया गया है।

आचार्य रामकरण सिंह ने निबंध प्रतियोगिता में परचम लहराया

नैनी। माधव ज्ञान केंद्र इंटर कॉलेज के वरिष्ठ आचार्य रामकरण सिंह ने अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता में अपना परचम लहराया क इन्होंने वैदिक गणित की अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता में तीसरा स्थान प्राप्त कर प्रदेश का गौरव बढ़ाया। इस उपलब्धि के लिए काशी प्रांत के संगठन मंत्री डॉ0 राम मनोहर ने उन्हें अंग वस्त्र से सम्मानित किया क इस अवसर पर शिशु वाटिका प्रमुख विजय उपाध्याय, विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. विंध्यवासिनी प्रसाद त्रिपाठी के अलावा विद्यालय के समस्त शिक्षक मौजूद रहे।

शुआट्स के पीछे बांस की कोठी से युवक का शव बरामद

नैनी। नैनी थाना क्षेत्र के डांडी रोड रेलवे ओवर ब्रिज के समीप स्थित बांस की कोठी से गुरुवार की दोपहर एक युवक का शव पाया गया। उसके मुंह से झाग निकल रहा था । मृतक की जेब से नशीले इंजेक्शन लगाने वाले नीडील मिले हैं। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई करते हुए पोस्टमार्टम के लिए मर्चरी भेज दिया। मिली जानकारी के अनुसार नैनी थाना क्षेत्र के चकलाल मोहम्मद (ईसाई बस्ती) निवासी आशीष उर्फ रॉबिन (25) वर्षीय पुत्र राजीव सिंह गुरुवार की सुबह अपने घर से निकला। दोपहर में उसका शव बांस की कोठी से बरामद किया गया। उसके मुंह से झाग निकल रहा था । सूचना पाकर इलाकाई पुलिस पहुंची । तलाशी के दौरान उसके जेब से इंजेक्शन और नीडील मिला है। वह 2017 में कृषि संस्थान का छात्र था। इस समय वह रोजगार के लिए इधर- उधर भटक रहा था। एक बातचीत में चौकी प्रभारी एग्रीकल्चर विपिन पाल ने बताया, कि वह नशे का आदी था। संभवतः अधिक नशा लेने की वजह से उसकी मौत हुई होगी। फिलहाल पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही उसकी मौत का कारण स्पष्ट हो सकेगा।

हाथ से हाथ जोड़ो अभियान में बताया कांगेस की विचारधारा

नैनी। वार्ड नंबर 47 अरेल नैनी प्रयागराज में गुरुवार को हाथ से हाथ जोड़ो अभियान चलाया गया। अभियान में लोगों को कांग्रेस की विचारधारा बताकर लोगों को जोड़ा गया जिसमें वार्ड अध्यक्ष कमलेश कुशवाहा, नयन कुशवाहा, राकेश श्रीवास्तव, रमेश निषाद, अभय कुमारख राजकुमार निषादख राम कुमारख प्रदीप वर्माख नागेश भारतीय, राजू पासी, मुन्ना जाफरी, शिव शंकर मिश्रा, मोहम्मद उमर, जुबेदा, उर्मिला आदिवासी आदि कांग्रेसी शामिल रहे।

शादी में शरीक होने गये परिजन मौके का फायदा उठाकर चोर खगाल लें गये घर का सामन

करछना। थाना क्षेत्र के डाडो गांव निवासी संजय कुमार पटेल पुत्र नंदकिशोर पटेल के सुनसान मकान में बुधवार की रात्रि में अज्ञात चोरों ने घर के सामने का ताला काट कर घर के अंदर घुसे चोरों ने नकदी समेत लाखों रुपए के महिलाओं के सोने चांदी के कीमती जेवरात पार कर गए। जिससे भुक्तभोगी परिजन चिंतित व मायूस है। इसकी सूचना पुलिस को दी गई। मौके पर पहुंची पुलिस छानबीन कर वापस चली गई । पीड़ित संजय कुमार पटेल ने बताया कि बुधवार की रात्रि में परिवार सहित घर से नैनी के एक रिश्तेदार के यहां एक शादी समारोह में शामिल होने गए थे। सुनसान घर पाकर अज्ञात चोरों ने घर के सामने का ताला काटकर अंदर घुसे चोरों ने सूटकेस बॉक्स उठाकर बाहर लेकर चले गए। और पास के एक गेहूं के खेत में बृहस्पतिवार सुबह खाली मिला । और उसमें रखे 40 हजार रुपए नकदी समेत नवविवाहिता लड़की रीता पटेल के तकरीबन 3 लाख रुपए के सोने चांदी के गहने उठा ले गए। बृहस्पतिवार सुबह चोरी की सूचना मिलने पर परिवार सहित घर पहुंचा तो देखा कि घर के सारे सामान बिखरे पड़े हुए थे । और सूटकेस में रखे नकदी समेत घर की महिलाओं के सोने चांदी के कीमती जेवरात चोर उठा ले गए थे।

इलाहाबाद मेडिकल एसोसिएशन द्वारा निःशुल्क मेडिकल कैंप व दवा वितरण का आयोजन

नैनी। बँसवार गांव में 26 फरवरी दिन रविवार को प्रातः 10 बजे से 1 बजे तक इलाहाबाद मेडिकल एसोसिएशन के डॉक्टरों द्वारा निःशुल्क मेडिकल कैंप व दवा वितरण का आयोजन किया गया है। इसमें सैकड़ों बच्चों व आस पास के नागरिकों के स्वास्थ्य की जांच की जाएगी । कैंप के अध्यक्ष डॉ. सुबोध जैन व सचिव डॉ. आशुतोष गुप्ता अपने पूरी विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम के साथ पूर्णतः निःशुल्क जाँच कर परामर्श देंगे । विद्यालय के निदेशक चन्द्रभान राय ने बताया कि लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के लिए इस कैम्प का आयोजन किया जा रहा। आप सभी क्षेत्रवासियों से अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में पहुँचकर मेडिकल कैम्प को सफल बनाने में सहयोग करें।

युवक की संदिग्ध अवस्था में मौत पूरेसंवा बरसठी में मिला शव

जंघई। सरायममरेज थानांतर्गत पतैयां गांव निवासी सर्वजीत तिवारी उम्र 35 वर्ष पुत्र आशाराम तिवारी का शव गुरुवार की सुबह संदिग्ध परिस्थितियों में बरसठी थानांतर्गत जनपद जौनपुर के पूरेसंवा गांव के परासिन मंदिर के पास तालाब में मिला। ग्रामीणों ने शव को देखते ही पुलिस को सूचना दिया मौके पर बरसठी पुलिस पहुंची तो देखा शव के पास एक बाइक मिली बाइक का नंबर सरायममरेज थानांतर्गत ग्राम पतैयां के गुड्डू गुप्ता के नाम पंजीकृत है। पुलिस ने गुड्डू गुप्ता से फोन से संपर्क किया तो उसने बताया कि बाइक मैंने सर्वजीत तिवारी को बेंच दिया था। पुलिस ने मृतक सर्वजीत के परिजनों को सूचना दिया परिजन रोते बिलखते पहुंचे और सर्वजीत की शिनाख्त किया। परिजनों के अनुसार सर्वजीत बुधवार देर रात घर से बाहर निकले थे और बोला था कि रात में ही वापस आ जाऊंगा लेकिन वापस नहीं लौटे उनकी मौत की खबर पहुंची। तीन भाइयों में सबसे छोटे सर्वजीत को दो बच्चे हैं जिसमें 13 वर्ष की बेटी और 12 वर्ष का बेटा है परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है। पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर शव पोस्टमार्टम हेतु जौनपुर भेज दिया है मृतक के सिर एवं शरीर पर गंभीर चोट के निशान है परिजनों ने हत्या का आरोप लगाया है।

शव मिलने की सूचना पर जुटी भीड़ व इनसेट में मृतक की फाइल फोटो

एसडीएम के आदेश पर विवादित भूमि की हुई पैमाईश

पैमाइश

भूमि को आबादी बता आपत्ति लगाकर रोका था निर्माण कार्य

घंटेभर से अधिक चली नापजोख में अंकित स्थान पर आबादी भूमि नहीं पाई गई

लालगोपालगंज। गुरुवार को कस्बा के दानियालपुर ग्राम सभा में आबादी भूमि की पैमाईश के लिए राजस्व टीम पहुंची तो हड़कंप मच गया। टीम को देख मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। एसडीएम सोरांव के निर्देश पर पैमाईश करने पहुंची राजस्व टीम को घंटो मशक्कत के बैरंग लौटना पड़ा।

प्रतापगढ़ जनपद के परेवा नारायणपुर निवासी व्यक्ति ने एसडीएम सोरांव को प्रार्थना पत्र देकर आरोप लगाया कि दानियालपुर स्थित उसकी आबादी की जमीन पर एक युवक निर्माण नहीं करने दे रहा हैं। एसडीएम डॉक्टर कंचन के आदेश पर गुरुवार को राजस्व टीम के साथ नगर प्रशासन पहुंचा विवादित भूमि की पैमाईश करने पहुंच गए। टीम को देखकर आसपास के लोगों में हड़कंप मच गया। घंटेभर से अधिक चली नापजोख में अंकित स्थान पर आबादी भूमि नहीं पाई गई। वहीं दूसरे पक्ष का आरोप है कि शिकायतकर्ता फर्जी शिकायत कर काम में बाधा उत्पन्न कर अवैध धन अर्जित करना चाहते हैं।

विवादित भूमि की नापजोख करती राजस्व टीम

दो माह से गांव नहीं आए सफाई कर्मी, नालियां हुई चोक

मन्सूराबाद। केंद्र व प्रदेश की सरकारें साफ सफाई को लेकर संवेदनशील हैं। परन्तु सफाई कर्मियों की बेपरवाही के चलते गांव की नालियां चोक हैं, सड़क और गलियों में गंदगी का अंबार लगा हुआ है। ग्रामीणों के शिकायत के बावजूद जिम्मेदार ध्यान नहीं दे रहे हैं। लोगों ने सीडीओ का ध्यान आकृष्ट कराते हुए गांवों में सफाई व्यवस्था दुरुस्त कराने की मांग किया है। विकास खंड श्रृंगवेरपुर धाम अंतर्गत आने वाले गांव सम्हई, गरियावां, चांदपुर आदि गांवों में विगत कई महीने से सफाई कर्मचारी गायब है। इसके चलते गांव की गलियों में कूड़ा कचरे का अंबार लगा हुआ है, नालियां भी सफाई का अभाव में चोक कर गई हैं। ग्रामीणों ने साफ सफाई को लेकर ग्राम विकास अधिकारी और खंड विकास अधिकारी से शिकायत भी किया, परन्तु उनके द्वारा सार्थकत कार्रवाई नहीं की गई। ग्रामीणों का आरोप है कि सफाई कर्मचारी जब कभी गांव आते हैं प्रधान और उनके खास व्यक्तियों के घरों के आस पास साफ सफाई करते हैं। यह भी आरोप है कि गांव में गंदगी के कारण तरह -तरह की खतरनाक बीमारी जन्म ले रही हैं। परेशान लोगों ने सीडीओ का ध्यान आकृष्ट कराते हुए गांवों में सफाई व्यवस्था ठीक कराने की मांग किया है।

पुलिस ने बाजार में किया पैदल गस्त

बाजार में पैदल गस्त करती पुलिस

मेजा। प्रभारी निरीक्षक कोतवाली मेजा ज्ञानेश्वर मिश्र ने मेजारोड बाजार में गुरुवार को में पुलिस टीम के साथ पैदल गस्त किया गया । गस्त के दौरान प्रभारी निरीक्षक ज्ञानेश्वर मिश्र ने अंग्रेजी, देशी व बियर की दुकानों पर लगे सीसीटीवी कैमरों को चेक किया । साथ ही साथ संदिग्ध व्यक्तियों की भी चेकिंग की गई। पुलिस ने बाजार में व्यापरियों से संपर्क कर सड़क पर अतिक्रमण न करने की बात कहा । इस दौरान चौकी प्रभारी मेजारोड, अरविंद चौबे सहित कई पुलिसकर्मी रहे ।

भड़ेवरा में भक्तजनों ने निकाली शिव बारात

करछना। भड़ेवरा बाजार स्थित पाल बस्ती में सामूहिक रूप से नवनिर्मित शिव मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के एक दिन पूर्व बृहस्पतिवार शाम को गाजे-बाजे के साथ शिव बारात शिवभक्त लोगों की ओर से निकाली गई । जिसमें पालकी में भगवान भोले व माता पार्वती की मूर्ति का श्रृगांर करके बाजार समेत काली माता धाम के अलावा हनुमान पुर गांव तक महिलाओं की सुमागलिक गीतों के साथ शिव बारात भ्रमण की। जिसमें भारी तादाद में गांव वासी लोग शामिल रहे। शिव बारात के आयोजक हौसला प्रसाद पाल व संयोजक बिरजू पाल तथा व्यवस्थापक पन्नालाल पाल ने बताया कि आचार्य पं उमाकांत पांडेय की मौजूदगी में शुक्रवार को शिव पार्वती की प्राण प्रतिष्ठा वैदिक मंत्रोचार के साथ होगी। शिव बारात में शामिल लोगों में राजेंद्र प्रसाद पाल, पप्पू पाल, सँजय पाल, विष्णु पाल, प्रभात पाल, विपिन पाल, राम पाल, श्याम पाल, रोहित विश्वकर्मा, अखिलेश विश्वकर्मा, मोहन लाल तिवारी, महाकाल विश्वकर्मा सहित महिलाएं लोग शामिल रही।

शिव बारात निकालते भक्तगण

कलऊ सिंह के आवास पर आज से होगी सात दिवसीय भागवत कथा

मेजा। क्षेत्र के औंता गाँव मे पूर्व जिला पंचायत सदस्य यतीश कुमार सिंह उर्फ कलउ के आवास पर आज से सात दिवसीय भागवत कथा का आयोजन किया जा रहा है जो 2 मार्च तक चलेगी 3 मार्च को हवन पूजन होगा । भागवत कथा प्रति दिन 2 बजे से 6 बजे तक चलेगी। उक्त आशय की जानकारी श्री मथुरा प्रसाद महाविद्यालय औंता के प्रबंधक राघवेंद्र मिश्र ने दी उन्होंने बताया कि भागवत कथा में कथा व्यास कमला शंकर उपाध्याय (शास्त्री जी ज्योतिषाचार्य) होंगे। कथा के मुख्य यजमान महाविद्यालय के संस्थापक शिवराम मिश्र व रमेश चंद्र मिश्र हैं। पूर्व जिला पंचायत सदस्य यतीश कुमार ने क्षेत्र के लोगों से अपील किया है कि वह कथा पधार कर कथा सुने और अपने जीवन को धन्य बनाएं ।

प्रधानाध्यापक मासिक बैठक सम्पन्न व फरवरी माह की सर्वश्रेष्ठ स्टाफ का किया गया सम्मान

प्रयागराज। माह फरवरी की खंड शिक्षा अधिकारी /प्रधानाध्यापक एवं एआरपी की मासिक समीक्षा बैठक, शासन की मंशानुसार विद्यालय गुणवत्ता संवर्धन हेतु खंड शिक्षा अधिकारी, विनोद कुमार मिश्र एवं डॉ. प्रज्ञा सिंह की अध्यक्षता में बैठक आहूत की गई, जिसमें निम्न बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा किया गया।

कायाकल्प से संतृप्तिकरण डीबीटी समर्थ एप, प्रेरणा पोर्टल पर दिव्यांग, छात्र उपस्थिति व गतिविधि अंकन की स्थिति निपुण विद्यालय बनाने हेतु कार्य, इस अवसर पर विद्यालयों को कार्य को प्रोत्साहित करने हेतु फरवरी माह में उच्च प्राथमिक विद्यालय फाफामऊ बाजार में किए गए उत्कृष्ट कार्यों हेतु श्रीमती पूनम भास्कर इंचार्ज प्रधानाध्यापक व समस्त स्टाफ को खंड शिक्षा अधिकारी नगर सुश्री प्रज्ञा सिंह व विनोद मिश्रा द्वारा स्मृति चिन्ह देते हुए पुरस्कृत किया।

नगर क्षेत्र के समस्त एआरपी अनुरागिनी सिंह, अजय, अनीता, अशोक व स्मिता श्रीवास्तव द्वारा निपुण से संबंधित विषयों पर चर्चा की गई जिसमें कक्षा 1 से 3 तक आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका के अनुसार शिक्षण कार्य, शिक्षक डायरी निर्धारित प्रारूप पर भरा जाना, शिक्षण योजना अनुसार शिक्षण कार्य करना, विद्यालय को निपुण विद्यालय बनाने हेतु कार्ययोजना, निपुण बच्चों की सूची विद्यालय स्तर पर प्रदर्शित करना, दीक्षा एप पर उपलब्ध कंटेंट बच्चों को प्रतिदिन दिखाया जाना, ट्रैकर निपुण तालिका आदि का नियमित अपडेट किया जाना आदि विषय शामिल थे।

बैठक में उपस्थित लोग

संक्षेप

पड़ोसी ने युवक को पीटा

कौशाम्बी। करारी इलाके के सल्लहा गांव निवासी राकेश कुमार ने बताया कि पड़ोसी से उसकी रंजिश है। इसे लेकर गुरुवार सुबह वह गाली-गलौज कर रहे थे। विरोध करने पर पिटाई शुरू कर दी। चीख-पुकार पर जुटे ग्रामीणों ने दखल देकर किसी तरह मामला शांत कराया। इसके बाद पीड़ित ने थाने में तहरीर दी। पुलिस जांच के बाद कार्रवाई की बात कह रही है।

किशोरी को भेजा आपत्तिजनक मैसेज

कौशाम्बी। महेवाघाट थाना क्षेत्र की एक किशोरी ने बताया कि पड़ोसी युवक काफी दिनों से उसके मोबाइल पर आपत्तिजनक मैसेज भेजता है। नम्बर ब्लॉक करने पर दूसरे नम्बरों का इस्तेमाल करता है। पीड़िता ने गुरुवार को मामले की शिकायत एसपी से की है। एसपी ने महेवाघाट एसओ को जांच कर कार्रवाई करने का निर्देश दिया है

बाइकों की भिड़ंत में युवक घायल

कौशाम्बी। सिराथू निवासी सुनील कुमार गुरुवार सुबह बाइक से किसी काम से मंझनपुर जा रहा था। सेलरहा के समीप सामने से आए बाइक सवार से उसकी भिड़ंत हो गई। हादसे में सुनील घायल हो गया। उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। दूसरी बाइक पर सवार युवक कम चोटिल होने के कारण फरार हो गया।

ससुरालवालों पर प्रताड़ित करने का लगाया आरोप

कौशाम्बी। नगर कोतवाली इलाके के समदा गांव की सुरेखा देवी ने बताया कि उसका विवाह करीब सात वर्ष पहले सिराथू में हुआ था। आरोप है कि ससुरालवाले शादी के बाद से ही दहेज की मांग को लेकर प्रताड़ित करने लगे। हफ्ते भर पहले घर से निकाल दिया। पीड़िता ने आरोपियों के खिलाफ पुलिस को तहरीर दे दी है।

30 लीटर शराब के साथ दो गिरफ्तार

कौशाम्बी। कोतवाली पुलिस ने बुधवार की शाम अलग-अलग स्थानों से दो लोगों को महुआ की शराब के साथ पकड़ लिया। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से 30 लीटर शराब बरामद की है। पकड़े गए आरोपित इन्द्रजीत निवासी खोजवापुर व छेदन लाल पिवासी ओसा हैं। पुलिस ने जांच पड़ताल करते हुए दोनों आरोपितों को जेल भेज दिया है।

शराब कारोबारियों के ठिकानों पर पुलिस ने की बड़ी कार्यवाही

कार्यवाही

चायल कस्बा में तीन क्विंटल नष्ट कराया गया लहन

चायल, कौशाम्बी। पिपरी थाना क्षेत्र के चायल कस्बा में चौकी इंचार्ज ने शराब कारोबारियों के अड्डों पर छापेमारी की मौके पर 3 कुंटल लहन नष्ट कराया चौकी पुलिस की कार्यवाही की जानकारी मिलते ही शराब कारोबारी भाग खड़े हुए जिनकी तलाश पुलिस कर रही है पुलिस की कार्रवाई से हड़कंप मचा रहा।

एसपी बृजेश कुमार श्रीवास्तव और चायल सीओ श्याम कांत के निर्देश में चलाए जा रहे। अभियान के क्रम में अवैध शराब बना कर बेचने वालो पर चायल चौकी पुलिस ने बड़ी कार्यवाही की है। चायल पुलिस चौकी के नए चौकी इंचार्ज मनोज तोमर ने आते ही जहरीली शराब बनाने वालों पर कड़ी कार्रवाई कर दी है। जिससे शराब कारोबारियों में दहशत का माहौल बन गया है बुधवार को चौकी पुलिस ने चायल कस्बा में दल बल के साथ शराब कारोबारी के ठिकानों पर छापा मारा और लगभग तीन क्विंटल लहन नष्ट करवाते हुए कार्यवाही की, पुलिस कार्यवाही की जानकारी मिलते ही शराब कारोबारी भाग खड़े हुए जिनकी तलाश पुलिस कर रही है।

छापेमारी के दौरान बरादम लहन नष्ट करती पुलिस

पांच लोगों पर दहेज उत्पीड़न का केस दर्ज

कौशाम्बी। बाइक व नकदी न मिलने पर ससुरालवालों ने पीटते हुए विवाहिता को बेघर कर दिया था। मामले में अदालत के आदेश पर पुलिस ने पांच लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। कोखराज थाना क्षेत्र के नरवरपट्टी गांव की विमला देवी ने बताया कि साल भर पहले उसकी बेटी गुलशन की शादी चरवा के जीत का पुरवा गांव में मुन्ना के साथ हुई थी। शादी में मिले दहेज से ससुरालवाले संतुष्ट नहीं थे। मायके से मन पसंद बाइक के साथ नकदी लाने की जिद कर प्रताड़ित करने लगे। महीने भर पहले ससुरालवालों ने पिटाई करते हुए घर से निकाल दिया। पीड़िता ने मामले की शिकायत चरवा थाने में की। कार्रवाई न होने पर पीड़िता अदालत पहुंची। अदालत के आदेश पर पुलिस ने पीड़िता के मां की तहरीर पर आरोपित पति मुन्ना समेत पांच लोगों के खिलाफ दहेज उत्पीड़न का मुकदमा दर्ज कर लिया है। इंस्पेक्टर ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर लिया गया है पुलिस मामले की तहकीकात कर रही है।

कार चालक को पीटने व तोड़फोड़ करने वालों पर केस दर्ज

कनैली, कौशाम्बी। कौशाम्बी कोतवाली क्षेत्र के एक गांव में पिछले सप्ताह एक नवविवाहित को विदा करा कर उसके घर छोड़ने गए कार चालक के साथ दबंगों ने मारपीट कर कार में तोड़फोड़ की थी।

कोसम इनाम गांव निवासी मोहम्मद सलमान के मुताबिक पिछले हफ्ते पाली गांव के अशोक जायसवाल की नवविवाहित बधु को छोड़ने अपनी कार से पाली गांव गए थे।अशोक के परिवार की महिलाएं हिन्दू रीति रिवाज से पूजा पाठ कर नव वधु को कार से उतारने की तैयारी कर रही थी।उसी दौरान कोसम गांव का रामबाबू बालू लोड किया हुआ ट्रैक्टर ले कर आ गया और रास्ते में खड़ी कार को हटाने की जिद करने लगा। सलमान ने थोड़ा समय मांगा तो रामबाबू आग बबूला हो गया और गाली गलौज करने लगा। पीड़ित जब नव बंधू को उतार कर अपने घर जाने लगा तो पाली गांव के बाहर रामबाबू ने अपने परिवार के लोगों को व ट्रैक्टर मालिक को फोन कर बुला लिया और रास्ते में रोककर कर आरोपी रामबाबू, धर्मपाल,रिंकू,व इन्द्रजीत सिंह सहित पांच लोगों ने गाली गलौज की विरोध करने पर मारपीट की और गाड़ी में भी तोड़फोड़ किया शोर गुल की आवाज सुन कर ग्रामीणों को आता देख आरोपी जान से मारने की धमकी देते हुए फरार हो गए। पीड़ित ने जब पुलिस से शिकायत की तो पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। पीड़ित परिवार जब सीओ से शिकायत की तो सीओ के आदेश पर बृहस्पतिवार को पुलिस ने पांचों आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है।

घर में घुस युवती से जबरदस्ती, शिकायत

कौशाम्बी। करारी कोतवाली अंतर्गत निवासिनी एक महिला ने एसपी को दिए गए शिकायती पत्र में बताया कि पिछले चार दिन पहले उसके पड़ोस के ही कुछ लोग उसके घर में घुसकर लड़की से छेड़छाड़ किया। इसकी शिकायत करारी कोतवाली पुलिस से की गई लेकिन पुलिस ने केस दर्ज नहीं किया। बृहस्पतिवार को पीड़िता एसपी कार्यालय पहुंची जहां अपर पुलिस अधीक्षक से अपनी पीड़ा बताते हुए दबंगों पर कार्यवाही कराए जाने की मांग किया। हालांकि एसपी ने प्रकरण को गंभीरता से लेते हुए कार्यवाही कराए जाने का आश्वासन शिकायतकर्ता को दिया है।

विवाहिता को पीटकर किया जख्मी, मुकदमा दर्ज

कौशाम्बी। सैनी थाना क्षेत्र के धारूपुर गांव में दबंगों ने घर में घुसकर विवाहिता को पीट दिया। पुलिस ने घायल महिला का प्राथमिक उपचार कराने के बाद तीन आरोपितों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर मामले की छानबीन शुरू कर दी है।

धारूपुर गांव की कन्यावती पत्नी राजेन्द्र प्रसाद ने बताया कि पड़ोसी से उसकी पुरानी अदावत चल रही है। बुधवार की शाम पड़ोसी परिजनों के साथ उसके घर पर आ गया। घर में घुसकर तोड़फोड़ करने का विरोध करने पर आरोपितों ने विवाहिता को पीट दिया। महिला की चीख पुकार सुनकर घर-परिवार के साथ मोहल्ले के लोग पहुंचे। ग्रामीणों ने बीच-बचाव करते हुए मामला शांत कराया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायल महिला को प्राथमिक उपचार के लिए नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया। देर शाम पुलिस ने पीड़िता की तहरीर पर आरोपित श्रीनाथ समेत तीन लोगों के खिलाफ मारपीट का मुकदमा दर्ज कर मामले की छानबीन शुरू कर दी है।

विवाहिता को पीटकर घर से निकाला

कौशाम्बी। सरायअकिल थाना क्षेत्र के बकोढ़ा गांव में ब्याही युवती को ससुरालवालों ने पीटकर घर से भगा दिया। पीड़िता की तहरीर पर सरायअकिल पुलिस ने आरोपित पति समेत तीन लोगों के खिलाफ दहेज उत्पीड़न का मुकदमा दर्ज कर लिया है।

फांसी पर लटकी विवाहिता, मौत

कौशाम्बी। करारी थाना क्षेत्र के शाहपुर टिकरी गांव की एक विवाहिता ने बुधवार को फांसी के फंदे पर लटककर जान दे दी है। विवाहिता के चार बच्चे हैं और विवाहिता के मौत के बाद बच्चे बिलाप कर रहे हैं विवाहिता के ससुर केशन लाल पासी पुत्र सुंदर लाल पासी ने करारी पुलिस को सूचना देकर बताया कि उसकी बहू गीता देवी उम्र लगभग 30 वर्ष पत्नी भीम सिंह ने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया है सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने विवाहिता के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

स्कूल मैजिक व बाइक में भिड़ंत, कई घायल

हादसा

सदर कोतवाली के ओसा मंडी के समीप हुआ हादसा

घायलों को इलाज के लिए भेजा गया अस्पताल

कौशाम्बी। सदर कोतवाली अंतर्गत ओसा के मंडी के समीप बृहस्पतिवार को स्कूल मैजिक व बाइक से भिड़ंत हो गई। हादसे में बाइक सवार समेत मैजिक में सवार कुछ छात्र चुटहिल हुए हैं। हालांकि घायलों को इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया है।

बता दें कि ओसा करारी रोड में विधायक वाचस्पति का एमवी कान्वेंट स्कूल संचालित है। बृहस्पतिवार को स्कूल की मैजिक रोजाना की तरह स्कूल में छुट्टी होने के बाद छात्रों को लेकर उनके घर छोड़ने जा रही थी। जैसे ही मैजिक ओसा स्थित नवीन मंडी स्थल के समीप पहुंची तो सामने से आ रहे बाइक सवार से टक्कर हो गई। हादसे में बाइक सवार सहित मैजिक में सवार कुछ छात्र भी चुटहिल हुए हैं। हालांकि आसपास रहे लोगों ने घायलों को इलाज के लिए अस्पताल भेज दिया था। घटनास्थल पर रही चर्चाओं पर जाएं तो कहा जा रहा था कि मैजिक चालक शराब के नशे में था। हालांकि इसमें कितनी सच्चाई है यह तो पुलिसिया जांच के बाद स्पष्ट हो सकेगा।

हादसे के बाद घटनास्थल पर मौजूद भीड़

आवारा पशुओं से किसानों को मिले निजात : साकिपा

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी के नेता अजय सोनी ने जिला प्रशासन से किसानों को आवारा पशुओं से निजात दिलाने की मांग की है। अजय सोनी ने गुरुवार को जिले के कई गांवों जैसे कुंडावी, उदहिन खुर्द, कटरा, मोंगरी आदि का भ्रमण किया और किसानों से मुलाकात की। मुलाकात के दौरान किसानों ने बताया कि आवारा पशुओं की समस्या से जीना हराम है। रात रात भर जागकर खेतों की रखवाली करनी पड़ती है। फिर भी आवारा पशुओं से फसलों का नुकसान नहीं रुक रहा है जिसके चलते फसलें चैपट हो रहीं हैं। इस अवसर पर किसानों से वार्ता करते हुए अजय सोनी ने कहा कि जिला एवं तहसील प्रशासन से कई कई बार लिखित ज्ञापन देकर आवारा पशुओं की समस्या से किसानों को निजात दिलाने की मांग की गई है लेकिन कोई ठोस कार्यवाही नहीं हुई। आगे कहा कि जिला प्रशासन को चाहिए कि आवारा पशुओं से किसानों को निजात दिलाए। इस सम्बन्ध में अजय सोनी ने कहा कि जल्द ही आवारा पशुओं से किसानों की फसलों का नहीं बचाया गया तो किसान भुखमरी के शिकार हो जाएंगे इस अवसर पर आदित्य तिवारी, देवराज लोधी, राजू यादव, अखिलेश मौर्य, बलजीत सिंह पटेल आदि मौजूद रहे।

फसलों को चट कर रहे अंवारा पशु

कार की टक्कर से दंपती घायल

कौशाम्बी। पश्चिमशरीरा थाना क्षेत्र के पुनवार गांव का महेन्द्र कुमार गुरुवार सुबह पत्नी रेखा देवी के साथ बाइक से किसी काम से मंझनपुर जा रहा था। करारी कस्बे के समीप पीछे से आई कार ने उसकी बाइक में टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार दंपती घायल हो गए। उन्हें जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

युवक ने किशोरी से किया दुराचार का प्रयास

कौशाम्बी। करारी थाना क्षेत्र के एक गांव की किशोरी बुधवार की दोपहर घर में अकेली थी। परिवार के लोग खेत पर काम करने के लिए गए थे। किशोरी को अकेली देख मोहल्ले का युवक बहाने से घर के भीतर पहुंचा और उससे दुराचार का प्रयास किया। किशोरी के शोर मचाने पर आरोपित शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी देते हुए भाग निकला। दोपहर बाद घर लौटे परिजनों को पीड़िता ने पड़ोसी युवक की करतूत बताई। आरोपित के घर उलहना देने के बाद शाम पीड़िता की मां थाने पहुंची और मामले की शिकायत की। पीड़िता के मां की तहरीर पर पुलिस ने आरोपित युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। एसओ ने बताया कि मामले की जांच पड़ताल की जा रही है। जांच के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

पति, जेठानी, सास पर दहेज उत्पीड़न का केस दर्ज

कौशाम्बी। सरायअकिल थाना क्षेत्र के बहुगरा गांव की संजू देवी की शादी साल भर पहले बकोढ़ा गांव में उमेश कुमार के साथ हुई थी। विवाहिता ने बताया दोबारा ससुराल जाने के बाद पति के साथ ससुरालवाले मायके एक लाख रुपये लाने की जिद कर प्रताड़ित करने लगे। कई बार ससुरालवालों की यातना मायके वालों को बताई तो वह उसे शांत करा दिया। कहा कि सब कुछ ठीक हो जाएगा। महीने भर पहले मांग पूरी नहीं होने पर ससुरालवालों ने पिटाई करते हुए विवाहिता को घर से निकाल दिया। दोनों परिवार के बीच बिरादरी की पंचायत भी हुई पर, बात नहीं बन सकी। पिता के साथ थाने पहुंची पीड़िता ने मामले की नामजद शिकायत की। पीड़िता की तहरीर पर पुलिस ने आरोपित पति उमेश के साथ जेठानी व सास के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

पड़ोसी ने दी युवक को जान से मारने की धमकी

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के काजू निलवासी विजय का पड़ोसी समीर सिंह से पुराना विवाद चल रहा है। दोनों के बीच मामूली बात को लेकर विवाद हो गया। कहासुनी के बाद आरोपित ने युवक को जान से मारने की धमकी दी। परिजनों को आपबीती बताते हुए पीड़ित थाने पहुंचा और मामले की नामजद शिकायत की। पीड़ित युवक की तहरीर पर पुलिस ने आरोपित के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर मामले की छानबीन शुरू कर दी है।

पारा हसनपुर में चौपाल का आयोजन

कौशांबी। मंझनपुर विकासखंड क्षेत्र के ग्राम पंचायत पारा हसनपुर में 24 फरवरी को ग्राम चौपाल के आयोजन में ग्रामीणों की समस्याओं को सुनने के लिए जिला विकास अधिकारी और खंड विकास अधिकारी को पहुंचने का निर्देश डीएम द्वारा जारी किया गया है ग्राम चौपाल में गांव की समस्या गांव में समाधान के तहत अधिकारी सुनवाई करेंगे।

किसान भाई कृषि यन्त्रों पर अनुदान के लिए 24 तक करें

कौशाम्बी। उप कृषि निदेशक उदयभान सिंह गौतम ने जारी प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से बताया है कि प्रमोशन ऑफ एग्रीकल्चर मैकेनाइजेशन फार इन-सीटू मैनेजमेन्ट ऑफ क्राप रिजिड्यू योजना के अन्तर्गत कृषक भाई कृषि यन्त्रों यथा-पैडी चॉपर, रोटरी स्लेसर, सुपर सीडर, मल्चर, एम.बी. प्लाऊ, फार्म मशीनरी बैंक की स्थापना करने एवं यन्त्रों पर अनुदान के लिए 24 फरवरी को दोपहर 12:00 बजे तक कृषि विभाग के पोर्टल पर पर ऑनलाइन कर सकतें हैं।

मंडल स्तरीय बैठक में मायावती को प्रधानमंत्री बनाने का लिया संकल्प

अझुवा, कौशांबी। बहुजन समाज पार्टी के मंडल स्तरीय कार्यकर्ता बैठक सम्मेलन में वक्ताओं ने बहुजन समाज पार्टी के मुखिया पूर्व मुख्यमंत्री मायावती को प्रधानमंत्री बनाने का संकल्प लिया है बैठक की अध्यक्षता मुख्य जोन इंचार्ज जगन्नाथ पाल ने की कार्यक्रम के शुरूआत में मुख्य अतिथि जिला अध्यक्ष व अन्य विशिष्ट अतिथियों को माल्यार्पण कर जोरदार तरीके से स्वागत किया गया है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व राज्य मंत्री मुख्य जोन इंचार्ज अशोक गौतम ने कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाते हुए बूथ स्तर तक पार्टी की नीतियों को बताने का आवाहन किया है उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार से गरीब कमजोर पिछड़ों महिलाओं बेरोजगारों का भला होने वाला नहीं है राजू गौतम ने कहा कि जुमलों की सरकार चल रही है और भाजपा द्वारा पेश किया गया बजट किसान गरीब कमजोर नौजवान महिला अति पिछड़ा विरोधी है दरवाजा से गरीब कमजोर नौजवान महिला और पिछड़ा लोगों का भला नहीं होगा बैठक में वक्ताओं ने कहा कि देश को बहन मायावती की जरूरत है और आने वाले लोकसभा चुनाव 2024 में उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री पार्टी मुखिया मायावती को देश का प्रधानमंत्री बनाना है बैठक में मंडल स्तरीय पार्टी की समीक्षा की गई कार्यक्रम का संचालन जिलाध्यक्ष के यल गौतम ने किया इस मौके पर उपस्थित लोगों को राजू गौतम, अमरेंद्र बहादुर भारती, सिद्दीक हसन उर्फ अंबर भाई, सतीश जाटव, सुशील गौतम, टीएन जैसल, मुरलीधर गौतम, दशरथ लाल, महेश चौधरी, एकलाख कुरेशी, रोहित राज, रमेश गौतम, वीरेंद्र कुमार गौतम, श्लोक गौतम, कंचन लाल गौतम, सुधा दीदी, अरन जैसल, राकेश सोनी, जगतपाल, चंद्रपाल, भारत सरोज, अतुल टीटी, उषा त्यागी, महेश पासी, चंद्रबली चौधरी सहित तमाम लोगों ने संबोधित करते हुए बसपा की नीतियों को बताया और सरकार की जमकर आलोचना करते हुए आने वाले लोकसभा चुनाव 2024 में मायावती को प्रधानमंत्री बनाने का संकल्प लिया।

भूमि विवाद में विवाहिता को पीटा

कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के सैंता गांव की गुड़िया देवी पत्नी हीरालाल का गांव के ही एक परिवार से जमीन का विवाद चल रहा है। दोनों परिवार के लोग आमने-सामने हो गए। पड़ोसी ने परिजनों के साथ मिलकर विवाहिता को पीट दिया। ग्रामीणों के बीच-बचाव करने पर मामला शांत हुआ। दबंगों की चंगुल से छूटी विवाहिता थाने पहुंची और मामले की नामजद शिकायत की। पीड़िता से तहरीर लेकर पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

बाजार गए युवक की बाइक चोरी

कौशाम्बी। सरायअकिल थाना क्षेत्र के गौरा निवासी संदीप कुमार बुधवार को स्थानीय बाजार गया था। दुकान के सामने बाइक खड़ी करने के बाद वह सामान की खरीदारी करने लगा। इसी दौरान चोरों ने बाइक पार कर दिया। थोड़ी देर बाद वह दुकान से बाहर निकला तो बाइक गायब देख अवाक रह गया। पीड़ित युवक ने थाने में शिकायत की। पीड़ित युवक की तहरीर पर पुलिस ने आरोपित युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

किशोरी को भगा ले गया पड़ोसी युवक

कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के एक गांव की किशोरी बुधवार को घर से लापता हो गई। शाम किशोरी खेत की ओर जाने के बहाने निकली थी। किशोरी घर नहीं लौटी तो परिजनों ने खोजबीन शुरू की। किशोरी की तलाश के दौरान परिजनों को पता चला कि पड़ोसी गांव का युवक किशोरी को भगा ले गया है। किशोरी का पिता थाने पहुंचा और मामले की शिकायत की। पीड़ित पिता की तहरीर पर पुलिस ने प्रेमी युगल की तलाश शुरू कर दी है।

ओआरओपीटू को लेकर पूर्व सैनिकों ने किया बैठक

सैय्यद सरावां, कौशाम्बी। नेवादा विकासखंड के इमली गांव में बृहस्पतिवार को भारतीय सेना के रिटायर, जे.सी.ओ एवं जवानों की एक बैठक आयोजित की गई। अध्यक्षता जिलाध्यक्ष दशरथ लाल करवरिया ने किया। इस दौरान वर्तमान की हालात को देखते हुए जो फौजियों के ऊपर कुछ आला अधिकारियों ने अपनी मर्जी से ओआरओपीटू में जो अन्याय किया है उसको लेकर दिल्ली में 20 फरवरी से पूरे देश के रिटायर फौजियों ने धरना प्रदर्शन जारी कर रखा है। जिसमे जे.सी.ओ एवं जवानों का बहुत कम फायदा हुआ है। बैठक में कहा गया कि उसी को लेकर प्रदर्शन जारी रहेगा। कहा कि हम सभी रिटायर फौजी एकजुट होकर लड़ाई अपने हक के लिए लड़ेंगे। जब तक सरकार हमारी मांगे पूरी नहीं करेगी हमारा प्रदर्शन जारी रहेगा। इस दौरान जिलाध्यक्ष दशरथ लाल करवरिया, शारदा प्रसाद वर्मा, शिव भवन मिश्रा अर्जुन प्रसाद त्रिपाठी, जय नारायण मिश्रा, श्याम नारायण पांडे, नारायण मिश्रा, रमेश कुमार पांडे, डी. चंद भान मिश्रा एवं अन्य लोग उपस्थित रहे।

बैठक करते पूर्व सैनिकगण

ट्रेन के एसी कोच में महिला के गहने और नकदी चोरी, दी तहरीर

चोरी

टीटीई पर आरोप पैसा लेकर बिना टिकट यात्रा करने वालों पर शक

महिला यात्री

प्रतापगढ़। यात्रियों को बिना टिकट ट्रेन में सफर कराकर उसके एवज में मोटी रकम वसूल करने का टिकट चेकिंग स्टाफ का (टीटीई) गोरखधंधा बंद नहीं हो रहा है। इनकी यह करतूत टिकट लेकर चलने वाले यात्रियों पर भारी पड़ रही है। क्योंकि बिना टिकट यात्रियों में चोर उचक्के भी शामिल होते हैं। जो मौका पाकर यात्रियों का सामान लेकर चंपत हो जाते हैं। गुरुवार को दिल्ली से प्रतापगढ़ आ रही पदमावत एक्सप्रेस के एसी कोच बी टू में सफर कर रही महिला का बैग चोरी हो गया। जिसमें डेढ़ लाख के गहने और चार हजार नकद था। जीआरपी को दी गई तहरीर में महिला ने टीटीई पर बिना टिकट यात्रियों का सफर उसी एसी कोच में कराने का आरोप लगाया है। उसको शंका है कि उन्हीं यात्रियों की यह करतूत है। उसने पुलिस वालों से कार्रवाई की मांग की है। पूर्वी दिल्ली पंचशील गार्डेन नवीन शाहदरा की पूर्णिमा सिंह पत्नी डाक्टर रामकुमार सिंह का प्रतापगढ़ आ रही पदमावत एक्सप्रेस के एसी कोच बी टू में 25 और 28 नम्बर बर्थ पर आरक्षण था। वे दहिलामऊ आ रही थी। उनका आरोप है कि लखनऊ चारबाग रेलवे स्टेशन पर उनका बैग चोरी हो गया। जिसमें सोने की चेन और झुमका के अलावा चार हजार नकद था। प्रतापगढ़ में उतरने के बाद उन्होंने जीआरपी थाने में घटना की तहरीर दी है। जिसमें उन्होंने टीटीई रशीद पर बिना टिकट यात्रियों को बीटू कोच में सफर कराने का गम्भीर आरोप लगाया है। पूर्णिमा की मानें तो घटना टीटीई रशीद की लापरवाही से हुई है। उनका यह भी आरोप है कि उन्होंने रास्ते में उच्च अधिकारियों को इस बारे में बताया लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई।

पहले भी टीटीई पर लग चुके हैं आरोप

पद्मावत एक्सप्रेस में बिना टिकट यात्रियों से पैसा लेकर यात्रा कराने वाले टीटीई का एक ग्रुप हैं। जो रास्ते में इस तरह की करतूत करते हैं। कुछ महीने पहले भी इसी ट्रेन में टीटीई द्वारा पैसा लेकर बिना टिकट यात्रियों को सफर कराने का मामला सुर्खियों में आया था। जिसके संबंध में जीआरपी बरेली सिपाही द्वारा टीटीई के खिलाफ लिखित शिकायत उच्च अधिकारियों से की गई थी। जिसमें स्टाफ की बड़ी फजीहत हुई थी। यह दूसरा इस तरह का मामला सामने आया है। खास बात यह है कि ये मामले शिकायत वाले हैं जो खुल गए। जिनकी शिकायत नहीं होती है। उनकी संख्या अनगिनत है।

संक्षेप

मां-बेटी की जलकर हुई मौत की सरकार कराए न्यायिक जांच : मोना

प्रतापगढ़। कानपुर में आग से जलकर मां बेटी की दर्दनाक मौत की घटना दर्दनाक है। कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना ने घटना को अमानवीय बताते हुए सरकार से हाईकोर्ट के जज की निगरानी में न्यायिक जांच कराये जाने की मांग की। विधानसभा में सीएलपी नेता मोना ने कहा है कि कानपुर में कृष्णगोपाल दीक्षित की पत्नी तथा बेटी की प्रशासन के द्वारा बुल्डोजर की कार्रवाई के बीच जलकर खौफनाक मौत हो गई। विधायक ने सरकार से इस दर्दनाक घटना की सत्यता की जांच के साथ न्यायिक जांच कराए जाने की मांग की। यह जानकारी मीडिया प्रभारी ज्ञान प्रकाश शुक्ल के हवाले से जारी विज्ञप्ति में दी गई है।

ओवरलोड ट्रक से कार में टक्कर बाल-बाल बचा चालक

कार व ट्रक में टक्कर के बाद जुटी भीड़

प्रतापगढ़। रानीगंज देल्हूपुर मार्ग के मिजार्पुर गांव के समीप गुरूवार सुबह ट्रक चालक ने लापरवाही पूर्वक ट्रक चलाते हुए कार को टक्कर मार दी। टक्कर से कार का एक हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया और चालक बाल बाल बच गया। जानकारी के अनुसार अशोक मौर्या निवासी सतहरिया जौनपुर अपनी कार से मऊ आईमा प्रयागराज जा रहे थे। तभी सामने से आ रही ओवरलोड बालू से भरा ट्रक चालक ने लापरवाहीपूर्वक वाहन चलाते हुए कार को टक्कर मार दी। टक्कर से कार का एक हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया। हादसे के बाद ट्रक चालक वाहन लेकर भाग निकला। मौके पर रहे लोगों ने बताया कि ट्रक में लगा नम्बर प्लेट में जो नम्बर था उसमे से दो दो नम्बर मिटा हुआ था। वही लोगों का आरोप है कि स्थानीय पुलिस की मिली भगत से ओवरलोड बालू लदी ट्रकें क्षेत्र में लगातार चल रही है। पुलिस ऐसे वाहनों पर कोई कार्यवाही नहीं करती। जिसके चलते आए दिन ऐसे हादसे हो रहे है।

नंबर पर कालिख पोतकर चलते हैं ट्रक चालक

ओवरलोड ट्रकों से नंबर प्लेट पर नंबरों को कालिख से पोत दिया जाता है। ताकि किसी घटना या चालान से बच सकें। ये ट्रकें मेन सड़कों से न जाकर गांव गिरांव की सड़कों से गुजरती है। ओवरलोड भारी वाहनों के गुजरने से गांवों की सड़कें खस्ता हाल हो रही हैं। जानकारों पर यकीन करें तो ट्रक चालकों को यह रास्ता सुरक्षित है। इस काम में क्षेत्रीय पुलिस भी अपनी जेब गरमकर इनकी भरपूर मदत करती है। सकरे रास्तों से ओवरलोड ट्रकों के गुजरने से आये दिन हादसे भी हो रहे हैं। ट्रकों को सुरक्षित निकालने में खनन माफिया ट्रकों के आगे चलकर चालकों को परिवहन विभाग आदि से सुरक्षित होने की जानकारी देता रहता है।

विभिन्न मांगों को लेकर किसानों ने किया प्रदर्शन

प्रदर्शन

एसडीएम को सौंपा सात सूत्रीय मांग पत्र

मांगों को लेकर प्रदर्शन करते किसान

पट्टी। ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन के बैनर तले तहसील मुख्यालय पर संगठन के लोगों ने विरोध प्रदर्शन करते हुए पैदल मार्च निकाला। तहसील पहुंचकर 7 सूत्रीय मांग पत्र एसडीएम को सौंपा।

संगठन के जिला सचिव विजया नंद तिवारी ने कहा कि वर्तमान समय में प्रदेश भर में किसान व मजदूरों की स्थिति बहुत ही दयनीय हो गई है। उनकी हालत को सुधारने के लिए सरकार कोई कदम नहीं उठा रही है। उन्होंने आगे बताया कि सड़कों पर घूमने वाले पशु तथा जंगली जानवर किसानों की फसलों को नष्ट कर दे रहे हैं। किसान इन जानवरों के हमले में घायल हो रहे हैं। फसलों की सुरक्षा का कोई इंतजाम नहीं है। जिला सचिव रमाकांत वर्मा ने किसानों की फसलों को खरीदने के लिए सरकारी क्रय केंद्रों की व्यवस्था किए जाने की मांग की। इस मौके पर पूर्व जिला अध्यक्ष शेषनाथ तिवारी, लल्लू पाल, रमाकांत वर्मा, छोटे लाल यादव, राजदेव सरोज, प्रवीण, उमाशंकर यादव, यशवंत राव, रामशरण विश्वकर्मा, रामप्रसाद यादव आदि तमाम लोग मौजूद रहे।

अधिवक्ताओं ने तीसरे दिन भी किया हड़ताल

प्रतापगढ़। पट्टी तहसील के 124 गांव को सदर तहसील में जोड़े जाने की सूचना से आक्रोशित अधिवक्ताओं ने तीसरे दिन भी पट्टी तहसील में काम ठप रखा। इस दौरान वादकारी भी काफी परेशान रहे। पट्टी तहसील के 124 गांव को सदर तहसील में जोड़ने की प्रक्रिया चल रही है। जिसका पट्टी तहसील के अधिवक्ता विरोध कर रहे हैं। मंगलवार को अधिवक्ताओं ने तालाबंदी की थी। तभी से अधिवक्ताओं ने ऐलान किया है कि जब तक इस दिशा में जिलाधिकारी का निर्णय नहीं आ जाता तब तक उनकी हड़ताल चलती रहेगी। इस दौरान पट्टी बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष राधारमण मिश्र, रवि सिंह, चंदन सिंह, वरुण कुमार पांडे, मानस त्रिपाठी, मनीष तिवारी, अमरजीत शर्मा, विकास तिवारी सहित तमाम अधिवक्ता मौजूद रहे। पट्टी बार के पूर्व अध्यक्ष राधारमण मिश्रा ने बताया कि अगर पट्टी तहसील से गांव को सदर तहसील में समाहित किया जाएगा तो इसका खुलकर विरोध होगा। इसके लिए प्रदेश स्तर तक आंदोलन शुरू किया जाएगा।

वृद्धा आश्रम में रह रहे कैंसर रोगी की एलायंस क्लब ने किया मदद की अपील

कैंसर रोगी से मुलाकात करते हुए

प्रतापगढ़। वरिष्ठ समाजसेवी रोशनलाल उमरवैश्य की अगुवाई में एलायंस क्लब के पदाधिकारी गुरूवार को महुली स्थित वृद्धा आश्रम पहुंचे। हर माह आश्रम पहुंचकर क्लब के लोग निराश्रितों की सेवा करते रहे हैं। आश्रम में रह रहे बुजुर्ग रामकुमार कैंसर रोग से पीड़ित है। उनके इलाज के लिए रोशनलाल की टीम ने बुजुर्ग मरीज को प्रयागराज के कमला नेहरू कैंसर अस्पताल भेजवाकर आर्थिक मदद की। कैंसर पीड़ित के इलाज के लिए पैसे का अभाव पड़ने लगा तो समाजसेवी रोशनलाल ने आर्थिक रूप से संपन्न लोगों से मदत की अपील की है। उन्होंने मीडिया से भी इस नेक काम के लिए सहयोग करने का आवाहन किया है। उन्होंने जनप्रतिनिधियों से भी मिलकर मदत की अपील की है। उन्होंने बताया कि क्लब इलाज के लिए हर संभव मदत कर रहा है। रोशनलाल ने बताया कि कैसर पीड़ित के लिए जो दानदाता मदत करना चाहते हैं वृद्धा आश्रम जाकर मदत कर सकते हैं। आश्रम के प्रबंधक अंबिका प्रसाद ने बुजुर्गो की देखभाल के व कैंसर पीड़ित के इलाज के लिए क्लब की सराहना की है। इस दौरान सुरेश अग्रवाल, संतोष कुमार, देवानन्द, शिवेश शुक्ल, आदर्श कुमार व विवेक आदि साथ रहे।

किसान मेले में किसानों को सौंपा स्वीकृत ऋण पत्र

प्रतापगढ़। गुरूवार को नगर के तुलसी सदन में उद्यान विभाग की तरफ से राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत दो दिवसीय किसान मेले का आयोजन किया गया। मेले का उद्घाटन सांसद संगमललाल गुप्ता ने किया। सांसद ने सरकार की योजनाओं का लाभ जिले भर के किसानों को पहुंचाने के प्रयास की जिला उद्यान अधिकारी सीमा सिंह राणा की जमकर सराहना की। उद्यान अधिकारी ने आये हुए किसानों को सरकार द्वारा उनके लिए संचालित योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने किसानों से कहा कि विभाग से जुडकर योजनाओं का लाभ अवश्य लेना चाहिए। ताकि सरकार के द्वारा किसानों के आय को दुगने करने के लक्ष्य को धरातल पर लाया जा सके। विभाग के द्वारा लगाए गये स्टाल का अतिथियों ने निरीक्षण किया। इस दौरान सांसद ने विभाग के द्वारा किसानों के लिए स्वीकृत कराए गए ऋण पत्र किसानों को सौंपा। जिसमें पीएमएफएमई योजना के तहत अंशू गुप्ता भगेसरा को 15 लाख, क्रान्ति दूबे को 22 लाख पचास हजार, सूर्यकान्त पाण्डेय को नौ लाख व असगर अली को 3 लाख 60 हजार का स्वीकृत ऋणपत्र सौंपा गया। विभाग द्वारा अनुदानित पावर टिलर सांगीपुर ब्लाक के अजय कुमार वर्मा, अनिल कुमार तिवारी तथा आसपुर देवसरा ब्लाक के राम सूरत वर्मा को दिया गया। विभाग के आए हुए अधिकारियों ने किसानों को उनकी आय दुगुना करने व आद्यानिक किसानी से आय बढ़ाने के तौर तरीके और सरकार द्वारा संचालिए योजनाओं का लाभ उठाकर अनुदान प्राप्त करने की वृहद जानकारी दी। इस मौके पर उप निदेशक उद्यान कृष्ण मोहन चैधरी, आशीष मौर्य, डा0 अतुल यादव, चैरसिया समाज के जिलाध्यक्ष शिव कुमार, डा0 विपिन कुमार, कृषि अधिकारी अश्वनी सिंह, विभाग के वरिष्ठ लिपिक नौशाद अहमद सहित बड़ी संख्या में किसान आदि मौजूद रहे।

दबंगों ने महिला व उसके पति को पीट, की तोड़-फोड़

प्रतापगढ़। गुटखा का पैसा मांगने से नाराज पिता-पुत्रों ने महिला को गालियां देते हुए पीटा। अभद्रता करते हुए कपड़े फाड़ दिए और अश्लील हरकतें की। पति के दौड़ने पर दबंगों ने उसे भी पीटा, दुकान में तोड़फोड़ किया और लोगों के दौड़ने पर जान से मारने की धमकी देते हुए भाग निकले। पीड़िता की तहरीर पर पुलिस ने केस दर्ज किया है। संग्रामगढ़ थाना क्षेत्र के रमईपुर गांव निवासी पूनम शुक्ला पत्नी सौरव शुक्ला ने पुलिस को घटना की तहरीर दी है। जिसमें कहा गया है कि वह 22 फरवरी की सुबह अपनी दुकान पर बैठी थी। इसी दौरान भिटारी गांव के गिरिजाशंकर मिश्र पहुंचे और गुटखा लेकर चल दिए। जब उसने गुटखे का पैसा मांगा तो पैसा देने से इंकार करते हुए गालियां देने लगे। इसी बीच गिरिजाशंकर के दो बेटे अतुल और अमित भी आ गए और उसे गालियां देते हुए मारा पीटा, उसके कपड़े फाड़ दिए, अभद्रता करते हुए अश्लील हरकते भी किया। बीच बचाव को दौड़े उसके पति सौरव शुक्ल को भी मारा पीटा, दुकान में तोड़फोड़ किया। शोर सुनकर आसपास के लोग दौड़े तो वह लोग जान से मारने की धमकी देते चले गए। पुलिस ने पीड़िता की तहरीर पर आरोपितों के खिलाफ छेड़खानी, मारपीट, जानलेवा धमकी, तोड़फोड़ समेत विभिन्न धाराओं में रिपोर्ट दर्ज की है।

वाहन की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत

प्रतापगढ़। बारात से घर लौट रहे बाइक सवार युवक को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। बाइक चला रहे युवक की मौके पर ही मौत हो गई और पीछे बैठा साथी गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना पर पहुंची रायबरेली पुलिस शव को कब्जे में लेकर घायल को अस्पताल में भर्ती कराया। प्रतापगढ़ के अंतू थाना क्षेत्र के गौराडांड रैनिया निवासी क्षेत्र पंचायत सदस्य अशोक सिंह के बेटे की बारात बुधवार को रायबरेली गई थी। गांव के ही राकेश सिंह का इकलौता बेटा सनी सिंह (26) अपनी बाइक से गांव के ही साथी शिवम सिंह को साथ लेकर बारात गया। देर रात वह बारात से घर के लिए निकला था। रायबरेली के संतावा के पास अज्ञात वाहन ने बाइक में टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि बाइक चला रहे सनी सिंह की मौके पर ही मौत हो गई और उसका दोस्त शुभम गंभीर रूप से घायल हो गया। राहगीरों की सूचना पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे में लेकर घायल को अस्पताल भेजवाया। सूचना पर मृतक के परिजन रोते बिलखते मौके पर पहुंचे। मृतक की मां और पत्नी दोनों अचेत हो गईं। मृतक सनी सिंह की तीन माह की एक बेटी है। रायबरेली पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

किशोरी ने की आग लगाकर जान देने की कोशिश, तीन हिरासत में

प्रतापगढ़। आपत्तिजनक वीडियो वायरल होने से भाई की डांट पर क्षुब्ध किशोरी के आग लगाकर जान देने की घटना के दूसरे दिन भी हड़कंप मचा रहा। गम्भीर रूप से झुलसी किशोरी की प्रयागराज मेडिकल कालेज में दूसरे दिन गुरूवार को भी हालत गम्भीर बनी हुई है। पुलिस ने किशोरी की मां की तहरीर पर आधा दर्जन आरोपियों के खिलाफ किशोरी को आत्महत्या के लिए उकसाने के प्रयास, छेड़छाड़, बलवा व आईपी एक्ट की गम्भीर धाराओं में केस दर्ज किया है। झुलसी किशोरी के नाबालिग होने के कारण मुकदमें में पास्को एक्ट की भी धारा पुलिस ने शामिल की है। घटना को लेकर कोतवाली पुलिस ने तीन आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। लालगंज कोतवाली के जेवई में बुधवार की सुबह पांच बजे किशोरी ने छत पर पेट्रोल छिड़क कर आग लगाकर जान देने का प्रयास किया। आनन फानन में पुलिस झुलसी किशोरी को ट्रामा सेंटर से रेफर होते ही प्रयागराज मेडिकल कालेज इलाज के लिए ले गयी। वहां सूत्रों के मुताबिक झुलसी किशोरी की हालत बेहद गम्भीर व नाजुक बनी हुई है। इधर पीड़िता किशोरी की मां फूलजहां पत्नी मो0 सोनू निवासिनी डगरा पीथमपुर थाना संग्रामगढ़ की तहरीर पर लालगंज पुलिस ने आधा दर्जन आरोपियों के खिलाफ बुधवार की रात केस दर्ज किया है। तहरीर में पीड़िता ने कहा है कि मुकदमें की रंजिश को लेकर आरोपियों ने एक राय होकर उसकी पुत्री शिवानी बानो का अश्लील वीडियो इक्कीस फरवरी को वायरल कर दिया। जिससे पीड़िता की पुत्री दुःखी हो गई और आग लगाकर आत्महत्या का प्रयास किया। पुलिस ने तहरीर के आधार पर डगरा पीथनपुर निवासी खुशियाल के पुत्र बाबू उर्फ हारून व लल्लू तथा बाबू उर्फ हारून के पुत्र मो0 शाबिर व मो0 कादिर एवं लल्लू के पुत्र अजीम तथा फिरोज के खिलाफ गम्भीर धाराओं में केस दर्ज किया है। घटना को लेकर पुलिस ने तीन आरोपियों को हिरासत में ले भी लिया है। प्रभारी निरीक्षक कमलेश पाल का कहना है केस दर्ज किया गया है। आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही की जाएगी।

किसानों को नहीं मिलता है फसल बीमा का लाभ : डॉ0 आरके वर्मा

मुद्दा

किसानों की समस्याओं को लेकर विधानसभा सत्र में उठाया मुद्दा

प्रतापगढ़। विधानसभा सत्र के दौरान रानीगंज विधायक डॉक्टर आरके वर्मा ने किसानों की समस्याओं को लेकर विधानसभा सत्र में मुद्दा उठाया। उन्होंने बताया कि 20 हेक्टेयर से कम का नुकसान होने पर किसानों को फसल बीमा का लाभ नहीं मिल पाता है। जिससे उन्हें फसलों पर हुए नुकसान पर भारी क्षति होती है। जबकि किसानों के द्वारा 1637.76 करोड़ रुपए सहित कुल 7455.07 करोड़ रुपए का प्रीमियम बीमा कंपनियों को प्राप्त होता है। उन्होंने सदन के माध्यम से बताया कि खरीफ की फसल में बरसात अधिक होने से ड्रेनों के द्वारा जल निकासी न होने पर धान की फसल डूब जाती है। जिससे किसानों के गाढ़ी कमाई का काफी हिस्सा नष्ट हो जाता है। किंतु सरकार के आकलन के अनुसार 20 हेक्टेयर से कम नुकसान होने पर फसल बीमा का लाभ नहीं मिल पाता है इसके अलावा टमाटर, बैंगन, मिर्च लगाने वाले छोटे किसानों के लिए भी भारी नुकसान होता है। यह जानकारी विधायक के मीडिया प्रभारी संजीव पांडेय ने दी है।

जनता की आवाज उठाने के लिए आयोजित हो रहा कांग्रेस का महाधिवेशन : डा0 नीरज तिवारी

डा0 नीरज त्रिपाठी के साथ कांग्रेसी

प्रतापगढ़। कॉग्रेस का महाअधिवेशन जनता की आवाज उठाने के लिए आयोजित हो रहा है। इस अधिवेशन से देश को नई दिशा मिलेगा। कॉग्रेस का तीन दिवसीय महाअधिवेशन 24 से 26 फरवरी के बीच छत्तीसगढ़ के शहीद वीर नारायण सिंह नगर नवारायपुर में आयोजित हो रहा है। गुरूवार को अधिवेशन में कॉग्रेसी जत्थे के साथ शामिल होने जा रहे यूथ कॉग्रेस के पूर्व अध्यक्ष व पीसीसी सदस्य डा0 नीरज त्रिपाठी ने कही। उन्होंने बताया कि अधिवेशन में देश के सभी एआईसीसी, पीसीसी सदस्यों, जिलाध्यक्षों, शहर व नगर अध्यक्षों को 24 फरवरी तक रायपुर पहुंचने को कहा गया है। इस दौरान उनके साथ प्रयागराज विश्वविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष संजय तिवारी, हाईकोर्ट के पूर्व जज सभाजीत यादव, विनय दूबे, अशीष पांडे, अमित द्विवेदी, विजय यादव, प्रशान्त सिंह, मनोज पटेल, राधेश्याम यादव, तनवीर अहमद आदि रहे।

अफसरों के निरीक्षण के दौरान रेलवे स्टेशन से पानी नदारद, शुरू हुई लीपापोती

प्रतापगढ़। एनआई की हकीकत जानने लखनऊ मंडल के अधिकारी गुरुवार को प्रतापगढ़ में थे। उनके आने पर स्टेशन से पानी नदारद हो गया। बिजली वाले सीढ़ी लगाकर काम शुरू कर दिए। सारी कसर एक ही बार में निकाल दी। हुआ यूं कि सीनियर डीओएमजी सिद्धार्थ वर्मा सुबह सुबह प्रतापगढ़ पहुंचे। उनके साथ अन्य अधिकारी भी थे। वे वीआईपी लाउंज में थे। तभी पता चला कि स्टेशन का पानी खतम हो गया है। हालांकि उन लोगों का काम चल गया। उनके जाने के बाद टंकियों में सूखा पड़ गया। एसएस और उनके मातहत आईओडब्लू को लगे फोन करने। पता चला कि टंकी से आपूर्ति बंद है। पानी खोलने वाला मैन गायब है। फोन के कुछ देर बाद पानी आ गया। चर्चा है कि जब अधिकारी को आना होता है तभी स्टेशन की कमियों को सुधारा जाता है। बिजली वालों को पता चला कि उनके आका आने वाले है। सीढ़ी लगाकर कर्मचारी कमियों को ठीक करने लगे। अगर यही कमी पहले दूर कर लें तो कोई समस्या ही नहीं है। अक्सर देखा गया है कि वॉलमैन टंकी से पानी नही खोलता है।

बेसिक स्कूलों के बच्चों में हिन्दी व गणित विषय पर मजबूती के लिए कार्यशाला में मंथन

कार्यशाला में शामिल लोग

प्रतापगढ़। गुरूवार को बीएसए कार्यालय सभागार में शिक्षकों की कार्यशाला समन्वयक प्रशिक्षण श्री कृष्ण की अध्यक्षता में आयोजित की गई। जिसमें हिन्दी व गणित विषय के एआरपी उपस्थित हुए। एफएलएन कार्यक्रम के तहत आयोजित कार्यशाला में कक्षा चार और पॉच के बच्चों को हिन्दी व गणित विषय पर मजबूत पकड़ के लिए मंथन हुआ। इन विषयों पर बच्चों को दक्ष बनाने के लिए शिक्षकों व विशेषज्ञों ने अपने-अपने तर्क व विचार रखे। विशेषज्ञों ने शिक्षकों को बताया कि विषयों के प्रति बच्चों में रूचि कैसे उत्पन्न करें, उन्हें पढ़ाने के कौन से तरीके अपनाने चाहिए आदि की विस्तृत जानकारी दी। कार्यशाला में एआरपी धर्मेन्द्र ओझा, राजीव सिंह, जयराम यादव, कामेश्वर, सुशील दूबे आदि ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण लेकर सभी एआरपी अब स्कूलों में जाकर शिक्षकों को पढ़ाने के मंत्र बताएंगे।

जनसंपादकीय

पूर्वोत्तर को अफस्पा मुक्त करना कहीं चुनावी जुमला तो नहीं?

दिनकर कुमार

विवादास्पद सशस्त्र बल विशेष शक्तियां अधिनियम (अफस्पा) को लोकतंत्र और मानवाधिकार विरोधी दमनकारी कानून माना जाता रहा है। इस बर्बर कानून का दंश भारत में कश्मीर के साथ पूर्वोत्तर राज्यों की जनता को झेलना पड़ता रहा है। अब नगालैंड के पूर्वोत्तर हिस्से के त्युएनसांग शहर में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मंगलवार को कहा है कि उन्हें उम्मीद है कि अफस्पा अगले तीन-चार वर्षों में पूरे नगालैंड से हटा लिया जाएगा। सवाल पैदा होता है कि क्या भाजपा सरकार सचमुच इस विवादास्पद कानून को हटा देगी या यह उसके दूसरे लुभावने वादों की तरह महज एक चुनावी जुमला ही साबित होने वाला है?

इससे पहले अप्रैल 2022 में शाह ने असम, नगालैंड और मणिपुर के कई जिलों से अफस्पा को वापस लेने की घोषणा की थी। उन्होंने कहा था कि यह कदम सरकार द्वारा उग्रवाद को समाप्त करने और पूर्वोत्तर में स्थायी शांति लाने के लिए लगातार प्रयासों और कई समझौतों के कारण बेहतर सुरक्षा स्थिति और तेजी से विकास का परिणाम है।

अप्रैल 2022 में कहा गया था कि असम, मणिपुर, नगालैंड और अरुणाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों में सशस्त्र बल (विशेष) अधिकार अधिनियम (अफस्पा) को अगले छह महीने के लिए बनाए रखा जा रहा है।

अधिनियम की धारा 3 के तहत, राज्य सरकारों और गृह मंत्रालय के पास अफस्पा के तहत क्षेत्रों को अधिसूचित करने की समवर्ती शक्तियाँ हैं। असम में गृह मंत्रालय 2017 तक 'अशांत क्षेत्र' आदेश जारी कर रहा था। तब से असम हर छह महीने में अधिसूचना का नवीनीकरण कर रहा है।

अधिनियम सशस्त्र बलों को कानून के उल्लंघन में काम करने वाले किसी भी व्यक्ति को मारने, वारंट के बिना किसी को गिरफ्तार करने और किसी भी परिसर में तलाशी लेने और केंद्र सरकार की मंजूरी के बिना अभियोजन और कानूनी मुकदमों से सुरक्षा के लिए बेलगाम अधिकार देता है।

'असम में अफस्पा को उन क्षेत्रों में बरकरार रखा गया है जो नगालैंड सीमा से सटे हैं। नगालैंड में एक शांति प्रक्रिया चल रही है और एक बार जब यह समाप्त हो जाती है, तो हम विशेष अधिनियम के तहत क्षेत्रों को और कम करने में सक्षम होंगे,' जी.पी. सिंह, तत्कालीन विशेष पुलिस महानिदेशक, असम ने मीडिया को बताया था।

केंद्र नगा राजनीतिक मुद्दे का समाधान खोजने के लिए नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नगालैंड (इसाक-मुइवा) और सत नागा राष्ट्रीय राजनीतिक समूहों (एनएनपीजी) के साथ विचार-विमर्श कर रहा है। नगा शांति वार्ता में प्रमुख पक्ष इसाक-मुइवा गुट नगाओं के लिए एक अलग संविधान और एक अलग ध्वज और पड़ोसी असम, मणिपुर में नगा-बहुल क्षेत्रों को एकीकृत करके 'ग्रेटर नगालैंड' या नगालिम के निर्माण की मांग कर रहा है। नगालैंड के एक अन्य पुलिस अधिकारी ने कहा कि भूमिगत समूहों के आंदोलन को रोकने के लिए तीन राज्यों के सीमावर्ती क्षेत्रों में अफस्पा को जारी रखना आवश्यक था।

पहली बार 1 अप्रैल 2022 को असम के 60% हिस्से से अफस्पा को पहली बार हटाया गया। उससे पहले 2020 और 2021 में राज्य ने आत्मसमर्पण करने वाले हथियारों की संख्या और गिरफ्तार किए गए उग्रवादियों की संख्या में वृद्धि देखी। 2020 और 2021 में गिरफ्तार उग्रवादियों की संख्या क्रमशः 146 और 216 थी, जबकि इसी अवधि में आत्मसमर्पण किए गए हथियार 342 और 432 थे। 2022 में 131 उग्रवादी गिरफ्तार किए गए और 83 हथियार सरेंडर किए गए।

अधिकारी ने कहा कि विशेष वैधानिक शक्ति को हटा दिया गया था क्योंकि हिंसा कम हो गई थी और कई उग्रवादी मारे गए थे। उन्होंने कहा कि अफस्पा की अब आवश्यकता नहीं थी क्योंकि स्थिति में सुधार के लिए उत्तरी सीमा (लद्दाख) में बलों को स्थानांतरित करने से पहले ही राज्य में सशस्त्र बलों की उपस्थिति कम हो गई थी। ़जब कोई सेना तैनात नहीं है, तो अफस्पा को जारी रखने का क्या मतलब है? दंड प्रक्रिया संहिता के तहत पुलिस के पास पर्याप्त प्रावधान हैं,़ श्री सिंह ने कहा। भारत और चीन लद्दाख में अप्रैल-मई 2020 से गतिरोध में लगे हुए हैं।

उन्होंने कहा कि यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम (उल्फा) का परेश बरुवा गुट एकमात्र प्रमुख उग्रवादी समूह था जो अभी भी सक्रिय था। परेश बरुवा म्यांमार में रह रहे हैं।

श्री सिंह ने कहा कि पिछले दो वर्षों में बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की टर्नअराउंड अवधि में सुधार हुआ है क्योंकि जबरन वसूली की मांग में कमी आई है। 'यदि कोई क्षेत्र उग्रवाद से मुक्त है, तो जबरन वसूली भी खत्म हो गई है, क्षेत्र स्वचालित रूप से निवेशकों को आकर्षित कर रहा है। परियोजनाओं को तेजी से पूरा किया जा रहा है। पहले उन्हें अधिक समय लगता था क्योंकि वे काम को अंजाम देने के लिए पुलिस सुरक्षा घेरे का इंतजार करते थे।'

15 सितंबर 2022 को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि सरकार का उद्देश्य पूर्वोत्तर में अंतर सीमा विवादों को हल करना और 2024 से पहले क्षेत्र में सभी सशस्त्र विद्रोही समूहों के साथ समझौता करना है।

मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने इसका समर्थन करते हुए बताया कि मणिपुर के कुछ हिस्सों से अफस्पा के निरस्त होने के बाद 78 उग्रवादी मुख्यधारा में शामिल हो गए थे। उन्होंने कहा कि राज्य में अधिकांश उग्रवादी समूहों ने सरकार के साथ संघर्ष विराम समझौते पर हस्ताक्षर किए थे।

मणिपुर में, जिसमें 16 जिले हैं, छह जिलों के 15 पुलिस स्टेशनों को अशांत क्षेत्र की परिधि से बाहर कर दिया गया है। जिन क्षेत्रों में अफस्पा जारी है वे नगालैंड से सटे हुए हैं या म्यांमार के साथ अंतर्राष्ट्रीय सीमा साझा करते हैं।

अरुणाचल प्रदेश में, तिरप, चांगलांग, और लोंगडिंग जिले और असम सीमा के साथ राज्य के नमसाई जिले में नमसाई और महादेवपुर पुलिस स्टेशनों के अधिकार क्षेत्र में आने वाले क्षेत्रों को 'अशांत क्षेत्र' घोषित किया गया है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं कवि चिंतक हैं)

शैलेंद्र शांत की गजलें

1.
बैठे-बैठे हाथ मलते रहिए, या खुद को बदलते रहिए
परे रखिए दिल के बोझ को, हौसला पर संग रखे रहिए
भूल कर बैठें जो नादानी से, माफी उन्हें जरूर देते रहिए
शिकारी है, जाल बिछाएगा, फितरत जरा समझते रहिए
वादों की बरसात होने लगे, तो जरा संभल,बच के रहिए

2.
काश कोई ऐसा जहां होता, आदमी जहाँ न तन्हा होता
न होती कहीं भी मुफलसी, भूख का न कोई निशां होता
ढूंढे न मिलते धुर्त लोग कहीं, हर इंसान भोला नादां होता
मुहब्बत में डूबी जुबान होती, गुलशन में कहकशां होता
होती मुलाकात की बे-करारी, रोक-टोक हर्गिज न वहां होता

3.
हर हाथ को कहां काम-काज है, झूठ बोलने का जारी रिवाज है
किस की सुने,यकीं किस पे करें,जुमलेबाज अब हमारे सरताज हैं
दर्द से कराहता रहा एक पथिक,लोग जल्दी में,यह अपना आज है
दिन-दहाड़े चाकू-तेजाब-गोलियां, इस तरह चल रहा राज-काज है

संपर्क 9903146990

बीबीसी, वाशिंगटन पोस्ट और जॉर्ज सोरोस

समय- संदर्भ

रविभूषण

इक्कीसवीं सदी का भारत तीसरे दशक के आरंभ में एक नयी स्थिति में है। भारत के प्रधानमंत्री फिर कठघरे में हैं। इंग्लैड और संयुक्त राज्य अमेरिका की स्वतंत्र पत्रकारिता से भारत की बिकाऊ और भ्रष्ट पत्रकारिता की कोई तुलना नहीं की जा सकती। सत्ता और सरकार का संग-साथ देनेवाला 'गोदी मीडिया' लगातार सच्ची खबरों को प्रकाशित होने से रोक रहा है। उसने घुटने टेक दिये हैं। विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक 2022 के अनुसार भारत दुनिया के देशों में पिछले वर्ष 2022 के 142वें स्थान से लुढ़क कर अब 150वें स्थान पर है। 'रिपोर्टर्स विदाउट बार्डर्स' (आर एस. एफ) की रिपोर्ट पर कोई सवाल नहीं उठाया जा सकता।

ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन (बीबीसी) ब्रिटेन का (यूके) राष्ट्रीय प्रसारक है। एक सदी पहले 18 अक्टूबर 1922 को मारकोनी सहित प्रमुख वायरलेस निमार्ताओं के एक समूह ने इसे बनाया था, जो लगभग एक महीने बाद 14 नवम्बर 1922 को मारकोनी के लंदन स्टूडियो 2 छड स्ट्रैंड में आरंभ हुआ। 14 नवम्बर 1922 को तैंतीस वर्षीय स्कॉटिश इंजीनियर जॉन रिथ रीथ को बीबीसी का महाप्रबंधक बनाया गया। लंदन में इसकी पहली रेडियो सेवा 2 छड शुरू हुई। उस समय चार्ल्स वाल्सम रीथ (20.7.1889 - 16.6.1971) के मार्ग दर्शन के लिए कोई नियम और मानक नहीं था। उन्होंने नवाचार करना आरंभ किया और नव नियुक्त मुख्य अभियन्ता पीटर एकर्सली (6.1.1892- 18.3.1963) की सहायता से सेवा-विस्तार आरंभ किया। जॉन रीथ यूनाइटेड किंग्डम के सूचना मंत्री भी बने। रेडियो टाइम्स बीबीसी का अधिकारिक अंग था। जनवरी 1927 में ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन की स्थापना हुई। 1 मई 1940 को बीबीसी हिन्दी (एक अन्तरराष्ट्रीय समाचार सेवा) का आरंभ हुआ, जो आरंभ में रेडियो के माध्यम से संचालित होती थी। रॉयल चार्टर बीबीसी के लिए संवैधानिक आधार बनाता है। बीबीसी की विश्वसनीयता पर बहुत कम संदेह किया जाता है, पर अब यह नरेन्द्र मोदी पर निर्मित एक वृत्त चित्र (डॉक्यूमेंट्री) के कारण एक साथ चर्चा और विवाद में है।

पिछले महीने 17 जनवरी को बीबीसी की दो भागों की टेलीविजन 'इन्वेस्टिगेटिव डॉक्यूमेंट्री' - 'इंडिया द मोदी क्वेश्चन' के पहले भाग को ब्रिटेन में प्रसारित किया गया। इस वृत्त-चित्र में 2002 का गुजरात नरसंहार था। 2002 के गुजरात नरसंहार के तुरंत बाद ब्रिटिश विदेश कार्यालय ने इसकी एक जाँच आरंभ की थी। बीबीसी के इस वृत्त चित्र में पहली बार उन जाँच निष्कर्षों को सामने लाया गया है। ब्रिटिश विदेश कार्यालय की जांच का शीर्षक था 'सब्जेक्ट : गुजरात प्रोग्रोम'। इस जाँच में यह कहा गया था कि जो भी रिपोर्टिंग हुई थी, उससे कहीं अधिक हिंसा का विस्तार/फैलाव था। कम-से-कम दो हजार लोग मारे गये थे। मुस्लिम महिलाओं के साथ व्यवस्थित ढंग से बलात्कार किया गया था और 1 लाख 38 हजार आंतरिक रिफ्यूजी थे। हिन्दू और हिन्दू - मुस्लिम मिश्रित इलाकों के सभी मुसलमान व्यापारियों का लक्ष्य बना कर ध्वंस किया गया था। महीनों पहले से हिंसा की योजना बनायी गयी थी, जिसका मकसद हिन्दू इलाकों से मुसलमानों को हटाना था। राज्य सरकार के संरक्षण में विहिप (विश्व हिन्दू परिषद्) इन घटनाओं को अंजाम दे रहा था। इस जाँच में यह कहा गया था कि मोदी के मुख्यमंत्री रहते हुए समाधान असंभव है। यह रिपोर्ट पहली बार बीबीसी की डॉक्यूमेंट्री में ही आई है, जिसमें साफ शब्दों में यह कहा गया है कि नरेंद्र मोदी इसके सीधे जिम्मेदार हैं। 2002 की इस घटना ने दुनिया के सामने भारत को शर्मशार किया। यूरोपीय संघ ने भी एक जाँच आरंभ की थी। इस डॉक्यूमेंट्री पर भारत सरकार की प्रतिक्रिया स्वाभाविक थी। उसने इसे 'पक्षपातपूर्ण' कहा। इस वृत्त चित्र को सेंसर करने के भी परयत्न किये गये। इसका दूसरा भाग 24 जनवरी को प्रसारित हुआ। सरकार ने वृत्त - चित्र के पहले भाग पर प्रतिबंध लगाया। दूसरे भाग में नरेन्द्र मोदी के 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद देश में साम्प्रदायिक माहौल, मुसलमानों की स्थिति आदि की चर्चा है। भारत सरकार ने इसे 'निरन्तर औपनिवेशिक मानसिकता' को दशार्ने वाला कहा है। दूसरे भाग की श्रृंखला 5 अगस्त 2019 तक की है, जब जम्मू और कश्मीर की कानूनी स्थिति में बदलाव किया गया और 370 को समाप्त किया गया। इस भाग में नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) और नागरिकों के राष्ट्रीय रजिस्टर (एन आर सी) को लेकर देश में हुआ विरोध भी है। डॉक्यूमेंट्री के अंत में यह कहा गया है कि नरेन्द्र मोदी के तहत, भारत बदल गया है। यह अत्यधिक लोकप्रिय और विभाजनकारी बना हुआ है!

डॉक्यूमेंट्री को बनाने में ₹विभिन्न राय रखने वाले लोगों, गवाहों और विशेषज्ञों से सम्पर्क₹ किया गया था। वृत्तचित्र सही सूचनाओं और शोध पर आधारित है। 'डॉक्यूमेंट्री पर उच्चतम सम्पादकीय मानकों के अनुसार शोध किया गया' है। डॉक्यूमेंट्री में फादर सेंट्रिक भी हैं। हरेन पांड्?या (गुजरात के पूर्व गृह राज्यमंत्री) की हत्या पर इस डॉक्यूमेंट्री बड़ा खुलासा किया गया है। हरेन पांड्या की हत्या की कोई गंभीर जाँच नहीं हुई। भाजपा के सुब्रमण्यम स्वामी ने इस डॉक्यूमेंट्री में हरेन पांड्या की हत्या पर शक करने की बात कही है। विगत घटनाएँ कभी मृत नहीं होती। कफन फाड़कर मुर्दे भी बोलते हैं। न्यायालय से नरेंद्र मोदी को 'क्लीन चिट' मिल चुकी है, पर इस डॉक्यूमेंट्री ने पुनः गुजरात के नरसंहार को सामने ला दिया है। आज की कई घटनाओं की यह विगत कथा है! डॉक्यूमेंट्री के पहले भाग में स्वपन दास गुप्ता बोलते हैं और दूसरे हिस्से में सिद्धार्थ वरदराजन। सरकार ने ट्विटर, यू ट्यूब को लिंक हटाने को कहा, पर अनेक शहरों और स्थानों में इसे देखा गया। डॉक्यूमेंट्री आर्काइवल फुटेज और साक्षात्कारों पर आधारित है। इसमें बीबीसी की वह महिला साक्षात्कार कर्त्री भी है, जिससे मोदी ने अपनी असहमति प्रकट की थी और यह कहा था कि किसी को भी सरकार के आन्तरिक मामलों में बात करने का कोई अधिकार नहीं है। इस डॉक्यूमेंट्री को प्रतिबंधित करने के कारण सरकार ने नहीं बताये हैं। यह डॉक्यूमेंट्री केवल विगत- कथा नहीं है। इसे देखकर भारत की अघतन स्थिति का भी अनुमान किया जा सकता है। यह आज के भारत के बारे में है और कल के भारत के बारे में भी इसलिए है कि क्या हम कल का भारत आज के भारत की तरह ही निर्मित करना चाहते हैं? बिबिसी के दफ्तर पर पड़े छापों को सरकार ने 'सर्वे' कहा है जो 'रेड' है। क्या इस 'रेड' का मकसद सचमुच टैक्स की चोरी पकड़ना है या बीबीसी को डराना-धमकाना है? क्या यह 'रेड' नरेंद्र मोदी पर बनायी गई डॉक्यूमेंट्री के बदले की जाने वाली कार्रवाई नहीं है?

'वाशिंगटन पोस्ट' ने पिछले वर्ष 12 दिसम्बर को पहले पन्ने पर एक सूचना दी थी। शीर्षक था। ₹मोदी के भारत में, कोयले पर बना साम्राज्य : यह एक खोजी रिपोर्ट थी, जिसमें यह बताया गया था कि किस प्रकार झारखण्ड की भाजपा सरकार (रघुवर दास की सरकार) ने अडाणी के लिए अपनी ऊर्जा नीति में संशोधन किया।₹ वाशिंगटन पोस्ट एक प्रतिष्ठित पत्र है, जिसकी स्थापना संयुक्त राज्य अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन में स्टिलसन हचिन्स (14.11-1838-23.4.1912) ने 6 दिसम्बर 1877 को की थी। इसकी प्रसार संख्या डेढ़ लाख से अधिक है, यह दैनिक समाचार पत्र 'पोस्ट' के रूप में भी जाना जाता है, इसका आदर्श वाक्य है 'लोकतंत्र अंधेरे में मर जाता है' (डेमोक्रेसी डाइज इन डार्कनेस)। इस आधिकारिक नारे को इस समाचार-पत्र ने सबसे पहले 22 फरवरी 2017 को अखबार की वेब साइट पर पेश किया। बॉब वुडवर्ड (26.3 1943) ने इस नारे (वाक्यांश) को लोकप्रिय बनाया। भारत में लोकतंत्र नष्ट किया जा रहा है, इसे समझने और बोलने वाले भारत में भी हैं और अन्य देशों में भी। वाशिंगटन पोस्ट की रिपोर्ट केवल अडाणी पर नहीं है, वह भाजपा और नरेन्द्र मोदी से उनके संबंधों पर भी है। इस समाचार - पत्र ने अडाणी के पक्ष में मोदी सरकार द्वारा सारे नियमों, कानूनों के उल्लंघन से सबको परिचित कराया। उसकी चिन्ता में भारतीय लोकतंत्र है। इस दृष्टि से अडाणी पर की गयी उसकी रिपोर्ट एक तेज रोशनी की तरह है।

जॉर्ज सोरोस (12-8-1980) की अडाणी - हिंडनबर्ग मामले और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर की गयी टिप्पणी क्या भारत की लोकतांत्रिक प्रक्रिया को कमजोर करने के लिए है? भारत की लोकतांत्रिक प्रक्रिया को स्वयं मोदी सरकार ने कमजोर किया है। बयानवे वर्षीय हंगरी - अमेरिकी स्टॉक निवेशक, जॉर्ज सोरोस की प्रसिद्धि 'बैंक ऑफ इंग्लैण्ड' को बर्बाद करने वाले के रूप में भी है। उन्होंने केवल मोदी की ही नहीं, चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग और अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की भी आलोचना की है। म्यूनिख सिक्योरिटी कॉंफ्रेंस के पहले एक भाषण में उन्होंने मोदी और अडाणी को एक दूसरे के करीबी कहा है। वे प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी को लोकतांत्रिक नहीं मानते हैं। भारत में भी मोदी को लोकतांत्रिक न मानने वालों की एक अच्छी संख्या है, सोरोस एक हंगेरियन-अमेरिकन अरबपति व्यवसायी और समाजसेवी हैं। वित्त (फाइनेंस) में उनकी रूचि किशोरावस्था में ही विकसित हो चुकी थी। एक समृद्ध यहूदी परिवार में जन्मे सोरोस ने लंदन स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स में अपनी पढ़ाई के लिए रेलवे पोर्टर और वेटर का भी काम किया है। उनकी इच्छा एक दार्शनिक बनने की थी- बारह वर्ष की उम्र में उन्होंने अरस्तू (ईसापूर्व 384 - 322) को पढ़ना आरंभ किया था। सत्रह वर्ष की अवस्था में वे लंदन पहुँचे थे दो बार लंदन स्कूल ऑफ इकोनामिक्स में प्रवेश से वे वंचित रहे और तीसरी बार उन्हें सफलता मिली, उनके समय में वहाँ ऑस्ट्रियाई - ब्रिटिश दार्शनिक कॉर्ल पॉपर (28-7.1903 - 17-9-1944) थे, जिन्हें बीसवी शताब्दी का एक 'प्रमुख मस्तिष्क' माना जाता है। कॉर्ल पॉपर ने राजनीतिक दर्शन पर दो खण्डों में अपनी पुस्तक प्रकाशित की ₹द ओपन सोसायटी एण्ड इट्स एनिमीज' (1945) और 'द हाई टाइड ऑफ प्रोफेसीः हेगेल, मार्क्स एंड द आफ्टर मैथ' पहला खंड प्लेटो पर है। जॉर्ज सोरोस को 'ओपन सोसायटी' का सूत्र यहीं से मिला। 2019 में उनकी एक पुस्तक आई- इन डिफेंस ऑफ ओपन सोसायटी।

जॉर्ज सोरोस अन्य अरबपतियों, व्यवसायियों से भिन्न हैं, उन्होंने ओपन सोसायटी फाउंडेशन की स्थापना अप्रैल 1993 में की। कॉर्ल पॉपर की पुस्तक 'द ओपन सोसायटी एंड इट्स 3 एनिमीज' से प्रेरित होकर यह नामकरण किया गया था। सोरोस का नाम लोकतंत्र, मानवाधिकारों और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने वालों की सूची में है। अपने 'ओपन सोसायटी फाउंडेशन' के - जरिये उन्होंने अरबो डॉलर दान किये हैं। उनका नजदीकी संबंध डेमोक्रेटिक पार्टी से है, जिस कारण रिपब्लिकन पार्टी उनकी आलोचना करती रहती है। वे बराक ओबामा के राष्ट्रपति अभियान के पीछे थे। पिछले वर्ष 2022 में सोरोस ने डेमोक्रेटिक पार्टी को 28.5 मिलियन डॉलर का दान दिया था। अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश को हटाने के लिए उन्होंने करोड़ों डॉलर खर्च किये थे। 1984 में उसने रूस के और 1986 में चीन के खिलाफ अभियान को आर्थिक मदद की थी। ब्रिटिश प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन के खिलाफ अभियान के लिए उन्होंने पैसा दिया था। उन पर इजरायल के नेता नेतन्याहू के खिलाफ अभियान चलाने के लिए भी फंड देने का आरोप है। मलयेशिया के महाथिर बिन मोहम्मद 16 जुलाई 1987 से 31 अक्टूबर 2003 तक चौथे प्रधानमंत्री थे। 10 मई 2018 से वे पुनः प्रधान मंत्री हैं। सोरोस ने उन्हें अपने देश का खतरा और 'मलयेशिया की वास्तविक समस्या ' बताया था। सोरोस पर भाजपा का आरोप है कि उनका कथन भारतीय चुनावों को प्रभावित करने के लिए है। क्या भारतीय चुनावों के परिणाम तय करने की क्षमता किसी भी विदेशी अरबपति को है? क्या सोरोस 'अराजकता का एजेंट' हैं?

वर्ल्ड इकॉनॉमिक फोरम की बैठक में सोरोस ने नरेन्द्र मोदी की आलोचना की और यह कहा कि ₹भारत को हिन्दू राष्ट्रवादी देश बनाया जा रहा है₹। उन्होंने भारत में 'राष्ट्रवाद' के आगे बढ़ने की बात कही, जो 'सबसे बड़े झटके' के समान है। भाजपा का उन पर यह आरोप है कि वे भारतीय लोकतंत्र को तबाह करना चाहते हैं और यह मंशा रखते हैं कि यहाँ भारत में कुछ खास लोग सरकार चलायें। हकीकत भिन्न है। सोरोस की चिंता में भारत का 'लोकतान्त्रिक पुनरुद्धार' है। 2017 तक उनके ओपन सोसायटी फाउंडेशन की शाखाएँ 37 देशों में थी। वे भारत की संघीय सरकार पर नरेंद्र मोदी की मजबूत पकड़ से कुछ चिंतित हैं- ₹मैं भोला हो सकता हूँ, लेकिन मुझे भारत में एक लोकतांत्रिक पुनरुहार की उम्मीद है₹। उनकी पुस्तको से उनकी चिंताओं को समझा जा सकता है। ₹द बबल ऑफ अमेरिकन सुपरमेसी : द कौस्ट्स ऑफ बुश्ज वार इन इराक (2004), 'द ट्रैजेडी ऑफ यूरोपियन यूनियन' (2014), 'द सोरोस लेक्चर्स एट द सेंट्रल यूरोपीयन यूनिवर्सिटी' (2011) 'द क्राइसिस ऑफ ग्लोबल कैपिटलिज्म : ओपन सोसायटी एनडैन्जर्ड, (1998) अन्डर राइटिंग डेमोक्रेसी (1991) आदि। सोरोस की लगभग 15 किताबें हैं। माइकल टी. कॉफमैन ने 2003 में ही उनकी जीवनी लिखी थी- सोरोस : द लाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ ए मेसियानिक बिलिनायर।'

पिछले दो महीनों में विदेशी समाचार-पत्रों ने भारत को लेकर जो चिंताएँ प्रकट की हैं, उन्हें शान्त चित्त से देखा-समझा जाना चाहिए। छवि-निर्मित कार्यों से होती है, भाषणों और वाग्जालों से नहीं। देश में उठती आवाजें रोकी जा सकती हैं, पर बाहर की इन आवाजों को हम सुनें या इनकी अनदेखी करें?

(लेखक वरिष्ठ आलोचक एवं सामाजिक, राजनीतिक चिंतक हैं, संपर्क 94311 03960)

राजनीतिक बिसात पर 2024 का रोड मैप

प्रसंगवश

राजशेखर चौबे

उस जमाने के सोवियत रूस के साथ-साथ छत्तीसगढ़ के दुर्ग शहर में भी शतरंज काफी लोकप्रिय था। सड़क किनारे खेलने वालों की भीड़ होती और एक शक्तिशाली प्लेयर के विरुद्ध हम जैसे दसों लोग खेलते फिर भी वही जीतता था । आज देश के यशस्वी मुखिया श्री नरेंद्र मोदी के विरुद्ध विपक्ष की हालत भी वैसी ही है । विपक्ष कमजोर है और हमेशा कमजोर का साथ देना चाहिए इसीलिए मैं विपक्ष के साथ हूँ। विपक्ष की भलाई इसी में है कि वे यह समझ ले कि वह पांच मैचों में पहले दो मैच हार चुके हैं और बचे हुए तीनों मैच उन्हें जीतना है । मोदी जी बढ़त ले चुके हैं। प्रमुख विपक्षी दल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस भारत जोड़ो यात्रा को लेकर अति उत्साह में दिख रही है लेकिन 2024 के आम चुनाव में इसका विशेष असर नहीं होगा । जिससे आपको लड़ना है आपको उनकी ताकत और कमजोरी पता होना चाहिए । पहले हम भाजपा के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (ठउ्अ) के ताकत की चर्चा करेंगे ।

नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस सरकार ने हिंदुत्व को बढ़ावा दिया जिसके अंतर्गत अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण, धारा 370 की समाप्ति , काशी कॉरिडोर का निर्माण, सी ए ए एनआर सी का केवल विधेयक पारित करना आदि है । मौजूदा सरकार की दूसरी ताकत है रेवड़ी यानी फ्रीबिस का वितरण । लगभग 80 करोड़ गरीब लोगों को अभी भी मुफ्त राशन दिया जा रहा है , प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्जवला योजना जैसे कई योजनाएं हैं । इस सरकार की तीसरी ताकत है आक्रामक राष्ट्रवाद का हिमायती होना । कार्ल मार्क्स ने धर्म को अफीम बताया था लेकिन मैं इसमें उग्र राष्ट्रवाद को भी जोड़ना चाहूंगा । उग्र राष्ट्रवाद का रास्ता घृणा से होकर गुजरता है । इस सरकार की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि और ताकत है मीडिया का अधिग्रहण । आज प्रत्येक निष्पक्ष नागरिक यह जानता है कि कुछ गिने-चुने अखबारों को छोड़कर पूरा मीडिया सरकार के कब्जे में है । सोशल मीडिया खासकर व्हाट्सएप का इस सरकार ने बेहतर इस्तेमाल किया है और अपना एजेंडा आगे बढ़ाने का काम किया है । इस सरकार को मोदी जी की मनमोहक छवि का भी लाभ मिल रहा है । इस छवि को गढ़ने में मीडिया का विशेष रोल है हालांकि वे उन्हें इसका श्रेय नहीं देते हैं। अब हम मौजूदा सरकार की कमजोरियों की चर्चा करेंगे । इस सरकार की सबसे बड़ी कमजोरी है गरीबी महंगाई और बेरोजगारी का बढ़ना । इस सरकार की आर्थिक नीतियां खासकर नोटबंदी जीएसटी तालाबंदी ने आम जनता की कमर ही तोड़ दी है । केंद्र सरकार को जी एस टी का लाभ हुआ है परंतु राज्य सरकारों की केंद्र पर निर्भरता बढ़ी है और वे याचक की भूमिका में आ गए हैं । पिछले नौ वर्षों में गरीब और गरीब हुआ है और अमीर और अमीर हुआ है इसे कोई नकार नहीं सकता । प्रतिवर्ष दो करोड़ रोजगार का वादा किया गया परंतु इन नौ वर्षों में एक लाख बेरोजगारों को भी रोजगार नहीं मिला है । इस सरकार की दूसरी कमजोरी है कारपोरेट का हिमायती होना। पहले कारपोरेट छिपकर अपना काम करते थे । अब वे छुपकर चंदा (इलेक्टोरल बांड) देते हैं परंतु खुलकर अपना काम करते हैं । कोविड के दौरान पूरी दुनिया की दौलत कम हुई परंतु देश के कारपोरेट घरानों के धन में बेतहाशा वृद्धि हुई । कारपोरेट टैक्स घटाकर सरकार ने अपनी पक्षधरता बता दी है । कारपोरेट के द्वारा सरकार ने मीडिया पर कब्जा जमा रखा है । आज गरीबी महंगाई बेरोजगारी की बात करने वालों को देशद्रोही करार दिया जा रहा है। इस सरकार से मुस्लिम ,अनुसूचित जाति , अनुसूचित जनजाति और पिछड़े समुदाय का एक बड़ा तबका नाराज है । उन्हें लगता है कि उनके साथ सौतेला व्यवहार किया जा रहा है । सरकारी एजेंसियों का दुरुपयोग केवल विरोधियों को निशाना बनाने के लिए किया जा रहा है । सत्ता पक्ष के किसी भी नेता पर आज तक कोई भी कार्रवाई नहीं हुई है, जनता इन बातों से वाकिफ है । इस सरकार में भी भ्रष्टाचार में कोई कमी नहीं आई है । आज भाजपा को विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बताया जा रहा है । भाजपा की चुनावी रैलियों और अन्य खर्चों को देखकर आप अंदाजा लगा सकते हैं कि उन्हें धन की कोई कमी नहीं है । आज वह सबसे धनवान पार्टी है । इलेक्टोरल बांड से भी उसे ही सबसे अधिक धन मिला है । आप यह भी नहीं जान सकते कि किसने उन्हें चंदा दिया है । क्या ईमानदारी से ऐसे चुनाव लड़े जा सकते हैं और क्या जनप्रतिनिधियों की इस पैमाने पर खरीद-फरोख्त की जा सकती है ? जन प्रतिनिधियों को धमकाने व डराने के लिए केंद्रीय एजेंसियों की मदद जगजाहिर है । संवैधानिक संस्थाएं जैसे चुनाव आयोग, नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक भी दबाव में नजर आ रहे हैं । न्यायपालिका के निर्णय भी विभिन्न कारणों से प्रभावित होते रहे हैं। कॉलेजियम को समाप्त कर न्यायपालिका पर भी कब्जे का प्रयास प्रारंभ हो गया है । विरोध में लिखने और बोलने वाले मीडिया संस्थानों को डराया व दबाया जा रहा है । बी बी सी पर छापा इसका ताजा उदाहरण है । अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बाधित किया जा रहा है । इन वर्षों में हमें एक भी प्रेस कॉन्फ्रेंस के लायक नहीं समझा गया ।

इस समय विपक्ष के पास कोई ताकत नहीं है केवल सत्ता पक्ष की कमजोरी ही विपक्ष की ताकत है । विपक्ष में सभी विरोधी दल शामिल हैं । ये सभी विरोधी दल यह समझ लें कि यदि वे 2024 में नहीं जीत सके तो 2029 में भी नहीं जीत सकेंगे । भारतीय जनता पार्टी के पुराने सहयोगी शिवसेना और अकाली दल राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन से अलग हो चुके हैं । अभी जो भी सहयोगी एन डी ए से जुड़े हुए हैं वे या तो डर से जुड़े हैं या लालच से । जिस दिन यह डर व लालच खत्म हो जाएगा वे भी अलग हो जाएंगे । एन डी ए का अर्थ केवल और केवल भारतीय जनता पार्टी है। भाजपा जिन क्षेत्रों में मजबूत है वहां बेहद मजबूत है और जहां कमजोर है वहां काफी कमजोर है । भाजपा प्रायः हिंदीभाषी क्षेत्र , कर्नाटक और गुजरात में मजबूत है । इस क्षेत्र में लोकसभा की 250 सीटें हैं । बची हुई 293 सीट पर भाजपा कमजोर है । इन 293 सीटों में भाजपा को अधिकतम 60 सीट मिल सकती हैं। बची हुई 250 सीटों में यदि विपक्ष 65% यानी लगभग 163 सीटों पर भाजपा को रोक ले तो वह भाजपा को 2024 में बेदखल कर सकता है । इस तरह भाजपा को 223 सीट पर रोका जा सकता है। सत्ता की मुख्य लड़ाई का केंद्र वही 250 सीट है जिस पर भाजपा मजबूत है । विपक्ष को उसी पर मुख्य ध्यान देना होगा।

सबसे पहले विपक्ष को वही करना होगा जो भाजपा करती आई है यानी कुछ मुद्दों को छोड़ना होगा जैसे धारा 370 की समाप्ति ,समान नागरिक संहिता, जनसंख्या नियंत्रण कानून सी ए ए एन आर सी कानून आदि । लगभग पूरे विपक्ष को एकजुट होना होगा । सीटों के लिए सबको दिल बड़ा रखना होगा। जिस राज्य में जो विपक्षी पार्टी अधिक ताकतवर है उसे ही कमान संभालनी होगी । उत्तर प्रदेश में लोकसभा की 80 सीटें हैं यदि 75 सीटों पर समझौता हो जाता है तो पांच सीटों पर फ्रेंडली कंटेस्ट भी हो सकता है । कांग्रेस जब सत्ता में थी तब यही कहा जाता था कि विपक्ष एक साल से अधिक न तो साथ साथ रह सकता है और न ही अलग-अलग । यह बात अब भी लागू होती है । विपक्ष को चुनाव पूर्व अपना नेता चुनने की गलती नहीं करनी चाहिए अन्यथा क्या होगा हम सभी जानते हैं । मोदी जी के सामने कोई भी विपक्षी चेहरा टिकने वाला नहीं है । किसी चेहरे को चुनने का मतलब है मोदी जी को वाकओवर देना । यह अधिक अच्छा होगा कि राहुल गांधी जी यह घोषणा कर दें कि मैं या गांधी परिवार का कोई भी सदस्य 2024 में प्रधानमंत्री पद की रेस में नहीं है । 1977 और 1989 का आम चुनाव 2024 में विपक्ष के लिए सबक हो सकता है । यदि इन चुनावों में चुनाव पूर्व नेता चुना जाता तो वह विपक्ष का ही नेता बनता । भाजपा भी इस मुद्दे पर मुखर नहीं हो सकती क्योंकि 2017 में उत्तर प्रदेश के चुनाव के बाद ही योगी जी को नेता चुना गया था । सोशल मीडिया प्रचार का सशक्त माध्यम बन गया है। भाजपा ने इसकी ताकत को भांप लिया है । विपक्ष को भी इस पर ध्यान केंद्रित करना होगा । आम आदमी को समझाना होगा कि यह सरकार क्रोनी कैपटलिज्म वाली सरकार हैऔर अमीरों के हित में ही फैसले लिए जा यह हैं। इस सरकार से गरीब किसी चीज की उम्मीद न करें सिवाय खैरात के । अमीरों की बढ़ती अमीरी और गरीबों की बढ़ती गरीबी इस बात का प्रमाण है ।

2019 के लोकसभा चुनाव के पूर्व कांग्रेस ने प्रत्येक गरीब परिवार को प्रतिवर्ष 72000 देने का वादा किया था । विपक्ष इस तरह के अविश्वसनीय वादों से परहेज करे । ऐसे वादे प्रायः हारने वाला दल ही करता है । पंद्रह लाख प्रत्येक परिवार को देने का वादा कर और कुछ भी न देकर दो बार चुनाव जीतने वाले बिरले ही होते हैं । आप जो वादे पूरे कर सके वही वादे किए जाने चाहिए। सत्ता पक्ष की मुख्य कमजोरी गरीबी महंगाई बेरोजगारी पर विपक्ष को पूरा जोर लगाना होगा । भाजपा को ध्रुवीकरण का लाभ मिलता है और इसके लिए वे प्रयास भी कर सकते हैं। इसके लिए विपक्ष को तैयार रहना होगा और विपक्ष के बयानवीरों को जुबान पर लगाम लगाना होगा। वर्ष 1977 में जनता दल का गठन अभूतपूर्व प्रयोग था जिसमें अधिकांश विपक्षी दल एक ही छतरी के नीचे आ गए थे । इसी तरह 1989 के चुनाव में भाजपा और कम्युनिस्ट एक साथ थे और कांग्रेस के विरुद्ध मिलकर लड़े थे । 2024 में भी भारतीय राष्ट्रीय पार्टी (इफ्र) जैसी किसी पार्टी का गठन अधिकांश विपक्षी दल मिलकर कर सकते हैं । भूले भटके यदि विपक्ष सत्ता में आ गया तो उसके लिए एक जरूरी संदेश है कि भ्रष्टाचार पर हर हालत में नियंत्रण पाना होगा ।

किसान आंदोलन ने किसानों की ताकत का एहसास करा दिया है । अब आम व गरीब आदमी की बारी है । अभी भी देश में कुछ हद तक लोकतंत्र कायम है और आम और गरीब आदमी अपने वोट के सहारे बहुत कुछ बदल सकता है। कारण चाहे जो भी हो लेकिन आम आदमी त्रस्त है और उसकी कहीं भी सुनवाई नहीं है । भले ही राहुल, ममता ,अरविंद, नीतीश आदि 2029 तक इंतजार कर सकते हैं लेकिन आम आदमी 2029 तक इंतजार करने के मूड में नहीं है जरूरत है उसे नेतृत्व प्रदान करने की । विपक्ष को ऐसा मौका दोबारा नहीं मिलेगा । देखना होगा क्या विपक्ष आम जनता की उम्मीदों पर खरा उतरेगा अन्यथा जैसे दस वर्ष बीते हैं वैसे ही और पांच वर्ष भी अच्छे दिन की आस में गुजर जाएंगे।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं, संपर्क 9425596643)

व्यंग्य

पुस्तक-विमोचन संहिता

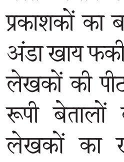

श्रवण कुमार उर्मलिया

मित्रो, इधर बसंत का आगमन हो चुका है और बनन और बागन में वह पूरी तरह से पसर चुका है। बासंती हवा जब-तब हमारे कपोलों को सहलाकर हमें अनुरागों से भर देती है। उधर पुस्तक मेले का पदार्पण होने वाला है। पुस्तक मेला अर्थात लेखकों की मेहनत पर प्रकाशकों का बसंत। मेहनत करे मुर्गी, अंडा खाय फकीर। पुस्तक-मेला अर्थात लेखकों की पीठ पर लदे इन प्रकाशक रूपी बेतालों का समारोह। अर्थात लेखकों का खून चूसने वाले इन वैम्पायरों का जश्न। बड़ी दूर दृष्टि होती है इन प्रकाशकों में। खुद माल कमाते हैं और वरिष्ठ लेखकों को पुस्तक-विमोचन कार्यक्रमों में उलझाए रखते हैं। कोई लेखक रॉयल्टी मांगता है तो मुंहफट प्रकाशक कह देता है- ₹बरखुरदार, तुम लेखकों की यही तो मुसीबत है। तुम सब पैसों के पीछे भागते रहते हो। अरे इतना महत्व, इतना सम्मान मिल तो रहा है। इसके सामने पैसा क्या चीज है मेरे भाई।₹

पिछले कई वर्षों के अनुभव से पाया गया है कि बेरोजगार, उपेक्षित और चुके हुए वरिष्ठ लेखकों के लिए पुस्तक-विमोचन एक महिमामंडन व्यवसाय की तरह उभरा है। मुझे तो लगता है अब पुस्तक-विमोचन संहिता भी छप ही जानी चाहिए जिसकी रूपरेखा कुछ इस तरह से होगी :

एक : विमोचन समारोह गुट-निरपेक्ष नहीं होने चाहिए बल्कि गुट-सापेक्ष होने चाहिए। लेखक अपनी पुस्तक के विमोचन में अपने गुट के लेखकों को ही बुलाये। जब डकैतों का गिरोह हो सकता है तो लेखकों का क्यों नहीं ?वस्तुतः विमोचन-समारोहों से ही लेखकों और प्रकाशकों की गुटबन्दी एवम मिलीभगत का विस्तृत ज्ञान हो जाना चाहिए।

दो : गुटबन्दी की आचारसंहिता के मुताबिक जब एक ही स्तर के स्तरहीन लेखक एक दूसरे की लीद साफ करें तो उसे गुटबन्दी कहा जाता है। इस लीद को प्रकाश में लाने वाला उस गुट का प्रकाशक कहलाता है। अब सोशल मीडिया जैसे कि व्हाट्सऐप गिरोहों के माध्यम से भी बाकायदा यह काम किया जा रहा है।

तीन : पुस्तक का विमोचन ऐसी हस्ती से करवाया जाना चाहिए जो खुद का वायु-विमोचन करने में भी असमर्थ हो। अक्सर देखा गया है कि कब्रगामी विमोचनकर्ता स्त्री सशक्तीकरण के प्रबल समर्थक होते हैं। उन्हें पूरा अधिकार होना चाहिए कि वे पुरुष लेखक की पुस्तक के विमोचन के लिये अपनी असमर्थता जता सकें पर लेखिकाओं के पुस्तक-विमोचन में कब्र से उठकर भी पहुंच जायें। ऐसे वरिष्ठ दुर्जन दिग्गजों को विमोचन के लिए प्रशस्ति-पत्र भी दिया जाना चाहिए।

चार : जो वक्ता विमोचन समारोह में विमोचित पुस्तक का अध्ययन करके उस पर बोले उसे गैरज़िम्मेदार और अहमक माना जाना चाहिए। अरे, पढ़कर तो कोई भी ऐरा-गैरा-नत्थूखैरा बोल लेता है। पुस्तक को बिना पढे जो बोले तब न पता चले उसकी प्रतिभा का। हां, पुस्तक पढ़कर बोलने वाले को यह अधिकार अवश्य दिया जाना चाहिए कि यदि उसे पूरी पुस्तक में कुछ कायदे का मिले(जो कि लगभग असंभव सा होता है) तो जरूर उसका जिक्र करे।

पाँच : विमोचन-समारोह का सूत्रधार या संचालक वही काम करता है जो शादी-व्याह में नाई करते हैं। इसलिए उसे पूरा अधिकार होना चाहिए कि वह खुद ज्यादा बकवास करे और दूसरों को कम बोलने दे। यही उसके सफल संचालन की कसौटी होनी चाहिए। लेखिका के पुस्तक विमोचन समारोह को संचालक जितना लंबा खींच सके उतना अच्छा क्योंकि उसमें सभी रसिक लेखकवृन्द बोलना चाहेंगे। लेखक की पुस्तक के विमोचन समारोह की यथाशीघ्र इति कर देनी चाहिए।

छै : विमोचन समारोह में क्रमशः लेखक को अपनी पत्नी और लेखिका को अपना पति अवश्य ले जाना चाहिए ताकि पत्नी या पति देख सकें कि लेखन को कलंकित

करने वाला क्रमशः उनका पति या पत्नी ही नहीं हैं। और भी नराधम लगे हैं साहित्य के अधोपतन में...!

सात : और अंतिम बात कि विमोचन किताब का नहीं होना चाहिए बल्कि लेखक या लेखिका का विमोचन होना चाहिए। लेखक या लेखिका की कृति गौण हो जानी चाहिए और कृतिकार बड़ा हो जाना चाहिए। विमोचन का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए लेखक या लेखिका का महिमामंडित। इसलिए अब रैपर में पुस्तक को नहीं बल्कि लेखक/लेखिका को लपेटकर प्रस्तुत करना चाहिए। सोचिए भला, जब रैपर को खोलकर लेखक या खासकर लेखिका को सामने लाया जाएगा तो वह नजारा कितना भव्य होगा।

(लेखक वरिष्ठ व्यंग्यकार हैं, संपर्क 9999903035)

रचनाएं हमें ई-मेल से भी भेज सकते हैं-
<raisubhash953@gmail.com>

नवविवाहिता पत्नी करती रही रिंग पति बना शिकारियों का शिकार

कार्रवाई

दरी लेकर मिलने पहुंचा था सिवान

बिजली करेंट की चपेट में आने से हुई मौत, तीन गिरफ्तार

जनसंदेश न्यूज

घटना का खुलासा करते सीओ सिटी

मीरजापुर। मड़िहान थाना क्षेत्र के रैकरा गाँव के सीवान में मैनेजर 23 वर्ष के हत्या मामले में पुलिस ने 3 लोगों को गिरफ्तार किया है। इन लोगों ने जंगली सुअर पकड़ने के लिए खेत में करेंट दौड़ाया था। जिसकी चपेट में मैनेजर आ गया। मामले को नया मोड़ देने के लिए उसकी गला रेतकर शव वही छोड़ दिया गया था।

खेत में करेंट दौड़ाकर हत्या फिर गला रेतने के आरोप में 3 लोगों को पकड़ा गया है। कछवां में आयोजित सामूहिक विवाह समारोह में रैकरा गाँव के मैनेजर 23 वर्ष और निशा 19 वर्ष विवाह सूत्र में बंधकर एक दूजे के हुए थे। विवाह के बाद कन्या की विदाई नहीं की गई थी। विवाह के बाद भी एक दूसरे की दूरी बनी हुई थी। गांव के ही दूसरे मजरे में रहने वाली अपनी पत्नी निशा को सीवान में मिलने का वादा किया था। तय समय पर मिलने और इत्मिनान से बात करने के लिए घर से बिछाने के लिए दरी लेकर निकला था। सीवान में पहले से ही जंगली जानवर का शिकार करने के लिए शिकारियों ने हाई वोल्टेज करेंट खेत में दौड़ा रखा था। जिसकी चपेट में मैनेजर आ गया। उसे तड़पता देख शिकारी सन्न मारकर बैठे रहे। उसकी मौत हो जाने के बाद नजदीक पहुंचे। बाँस के सहारे उसे बिजली के तार से अलग किया। वारदात को नया स्वरूप देने के लिए मैनेजर की गला रेतकर हत्या कर दी। उसके बाद तार समेट कर निकल गए। सोमवार की शाम शव देखा गया। जांच के दौरान पुलिस ने 1 संदिग्ध को पकड़ा जिसने सब कुछ कबूल दिया। सीवान में मिलने के लिए पहुंची निशा ने उस रात कई बार रिंग किया। लेकिन सात जन्म तक साथ निभाने वाला शिकारियों का शिकार बन चुका था। परिजनों ने हिंदू रीति रिवाज के अनुसार 5 मई को बारात के स्वागत के साथ विदाई तय किया था। पुलिस शिकारियों को गिरफ्तार कर कानूनी कार्रवाई में लगी है।

जनपद के 61 युवा बने उपनिरीक्षक

जनसंदेश न्यूज

उपलब्धि

पुलिस सर्विस में चयनित होने के बाद परिजनों का बढ़ा सम्मान

सिपाही से दरोगा बन बने आदर्श

मीरजापुर। जनपद के विभिन्न गांव से 61 युवाओं को पुलिस विभाग के दरोगा पद पर नियुक्त हुआ है। जिनका नियुक्ति पत्र 26 फरवरी को पुलिस लाइन में मिलेगा पुलिस की वर्दी से समाज की सेवा करने का जज्बा रखने वाले युवाओं के लिए यह एक सुनहरा अवसर बताया जा रहा है। जनपद के 61 युवाओं द्वारा पुलिस विभाग में उप निरीक्षक पद पर अपना कब्जा बनाए रखने पर क्षेत्र के सम्मानित लोगों द्वारा युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए शुभकामनाएं दिया जा रहा है। विगत कुछ वर्षों में जनपद से छात्र-छात्राओं द्वारा लगातार अपनी प्रतिभा को निखारने का काम किया जा रहा है ऐसे में शासन प्रशासन भी उनके सहयोग में नजर आ रहा है।

अभी कुछ दिन पूर्व ही वर्तमान जिलाधिकारी दिव्या मित्तल द्वारा बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का शानदार उदाहरण देखने को मिला था। आल इंडिया यूनिवर्सिटी पावरलिफ्टिंग में खेलने जाने वाली रेणुका गौतम की जिलाधिकारी ने मदद किया और डीएम कार्यालय पर साईकिल, ट्रैक सूट,जूता व अन्य सामान देकर प्रोत्साहित किया। डीएम दिव्या मित्तल ने कहा कि इस होनहार बेटी के सपनों को पूरा करने में पूरी मदद करेगा।

माता पिता की मृत्यु के बाद खेलने के साथ-साथ घर भी संभाल कर जिले का नाम बेटी रोशन कर रही है। बताते चलें चौहान पट्टी निवासी दुर्गा प्रसाद राय के पुत्र उपेंद्र विक्रम रॉय पहले से ही पुलिस विभाग में आरक्षी पद पर तैनात थे। नौकरी के दौरान उन्होंने दरोगा पद पर तैयारी किया और दरोगा बन गए। कभी दरोगा जी के लिए सलामी दागने वाले आज जब दरोगा बन साथ में काम करेंगे वह खुशी और जज्बा अलग ही होगा। उनके परिजनों ने बताया कि कड़े मेहनत का फल है कि जनपद का बेटा अब समाज की सेवा करेगा।

ट्रक ने ट्रैक्टर ट्राली में मारा धक्का

एक श्रमिक की हुई मौत और तीन घायल

जनसंदेश न्यूज

हलिया। ड्रमंडगंज थाना क्षेत्र के मीरजापुर रीवा राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित दुर्जनीपुर मोड़ के पास बुधवार की देर रात दो बजे के करीब भूसा लादकर जा रहे ट्रैक्टर ट्राली पर अनियंत्रित ट्रक ने पीछे से धक्का मार दिया जिससे ट्रैक्टर पर सवार एक श्रमिक की घटना स्थल पर ही मौत हो गई और तीन श्रमिक गंभीर रूप से घायल हो गए। मध्य प्रदेश के हनुमना थाना क्षेत्र से प्रयागराज जिले के कोरांव थाना क्षेत्र के हनुमानगंज पैंतिहा गांव ट्रैक्टर ट्राली पर भूसा लादकर जा रहा ट्रैक्टर जैसे ही मीरजापुर रीवा राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित दुर्जनीपुर मोड़ के पास पहुंचा तो कोरांव मार्ग के लिए ट्रैक्टर घूमने लगा तो मध्य प्रदेश की तरफ से आ रहे ट्रक ने अनियंत्रित होकर पीछे से ट्राली में धक्का मार दिया। टक्कर इतनी तेज थी कि ट्रैक्टर पर बैठा 26 वर्षीय श्रमिक श्रीराम निवासी हनुमानगंज पैंतिहा ट्रैक्टर से नीचे सड़क पर गिर पड़ा और घटना स्थल पर ही श्रमिक की मौत हो गई। घटना में ट्रैक्टर पर सवार 28 वर्षीय श्रमिक सरजू का पैर टूट गया। ट्रैक्टर पर सवार 20 वर्षीय श्रमिक विनोद और 30 वर्षीय श्रमिक छोटकऊ गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना के बाद ट्रक चालक मौके से फरार हो गया। स्थानीय लोगों की सूचना पर मौके पर पहुंचे थानाध्यक्ष ड्रमंडगंज वीरेंद्र सिंह ने घायल श्रमिकों को उपचार हेतु मंडलीय चिकित्सालय भिजवाया और मृत श्रमिक के परिजनों को घटना की सूचना दी। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु भेज दिया।

शांतिपूर्ण माहौल में मनायें होली व शबे बारात का त्यौहार : सीओ लालगंज

हलिया। ड्रमंडगंज थाना परिसर में गुरुवार शाम को सीओ लालगंज दीक्षांत राज की अध्यक्षता में पीस कमेटी की बैठक आयोजित की गई। सीओ दीक्षांत राज ने बैठक में मौजूद लोगों से शांति पूर्ण माहौल में भाईचारे के साथ होली व शबे बारात का त्योहार मनाने की अपील किया। सीओ ने चिंहित स्थानों पर ही होलिका दहन किए जाने की बात कही। कहा कि नये स्थानों पर बिना सूचना के होलिका दहन नही करें। आगामी शबे-बारात पर्व को सौहार्द पूर्ण माहौल में मनाए जाने के लिए कहा। सीओ ने होली के दौरान हुड़दंग मचाने और अशांति फैलाने वाले अराजकतत्वों की सूचना तत्काल पुलिस को देने के लिए कहा जिससे अराजकतत्वों के विरुद्ध कार्रवाई की जा सके। इस दौरान थानाध्यक्ष वीरेन्द्र सिंह, एस आई कोमल सिंह यादव, उदय नारायण सिंह, ग्राम प्रधान देवहट कौशलेंद्र गुप्ता, चंद्रगढ़ सियाराम मिश्र, खुटहा बावन दास केशरी, कैलाश नाथ गुप्ता, भानु तिवारी, धीरज केशरी, अशफाक अहमद, अरूण मिश्र, श्याम जनम दुबे, संजय सिंह, पिंटू केशरी, तारकेश्वर केशरी, आदित्य तिवारी, बैजनाथ बिंद, विनोद गुप्ता आदि मौजूद रहे।

ठेकेदारों की पार्टी में चली गोली बिहार का युवक हुआ घायल

विवाद

सीने में घुसकर पीठ से निकली गोली

हालत गंभीर, मंडलीय अस्पताल से ट्रामा सेण्टर वाराणसी किया गया रेफर

जनसंदेश न्यूज

अस्पताल में इलाज कराने पहुंचा घायल

मीरजापुर। हलिया थाना क्षेत्र में सिरसी बांध से मछली का ठेका लेने आये बिहार के युवक को बीती रात संदिग्ध हालत में गोली लग गई। गंभीर रूप से घायल डेहरी आसनसोल निवासी अभिजीत सिंह 35 वर्ष को मंडलीय अस्पताल लाया गया। गोली उसके सीने से आरपार होने से उसकी हालत देख ट्रामा सेण्टर वाराणसी रेफर कर दिया गया।

बताया जाता हैं कि बिहार के डेहरी आनसोल निवासी अभिजीत सिंह पुत्र अमरेश सिंह सहित तीन ठेकेदार बंधे में मछली की ठेकेदारी के मामले में आये थे। वह हलिया निवासी शशी पटेल के यहा पहुंचे थे। सिरसी बांध का भ्रमण करने के बाद सभी लोग अपना दल एस के प्रदेश युवा मंच के महासिचव शशिकांत पटेल के यहां आयोजित पार्टी में मौजूद थे। इसी बीच संदिग्ध हालत में अचानक पिस्टल से गोली चल गई। जो पार्टी में शामिल अभिजीत सिंह के सीने मे जा लगी। गोली लगते ही अभिजीत लहूलूहान हो गया। मौके पर मौजूद उसे लेकर तुरंत अपने वाहन से मंडलीय चिकित्सालय पहुंचे। डॉक्टरों ने अभिजीत का प्राथमिक उपचार किया। गोली उसके सीने में घुसकर पीठ से निकल गई थी। ज्यादा लहू बह जाने के कारण उसकी हालत गंभीर बनी थी। स्थिति को देखते हुए बेहतर इलाज के लिए उसे ट्रामा सेंटर वाराणसी रेफर कर दिया गया। ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक डा. विशाल यादव ने बताया कि अभिजीत सिंह के सीने में गोली लगने के बाद वह पीछे से निकल गई है। उनकी हालत गंभीर बनी हुई है। प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें ट्रामा सेंटर भेजा जा रहा है। थाना प्रभारी संजीव कुमार सिंह ने बताया कि जानकारी मिलते ही पुलिस मामले की छानबीन की जा रही है। मरीज की हालत को देखते हुए वाराणसी में भर्ती कराया गया है। खुद ही टीम के साथ वाराणसी तहकीकात के लिए रवाना हुआ हूँ।

चैत्र नवरात्र मेला को सकुशल सम्पन्न कराये जाने को लेकर हुई बैठक

बैठक

डीएम ने अधिकारियों के साथ बैठक कर दिया आवश्यक दिशा निर्देश

सुरक्षा, सफाई, घाटों पर महिलाओं के वस्त्र बदलने, बैरीकेटिंग कराये पूर्ण : डीएम

बैठक में शामिल अधिकारियों को निर्देश देतीं डीएम

मीरजापुर। मां विन्ध्यावासिनी के धाम विन्ध्याचल में आगामी 21/22 मार्च 2023 से प्रारम्भ होकर 30 मार्च 2023 तक चलने वाले चैत्र नवरात्र मेला को सकुशल सम्पन्न कराये जाने हेतु आज कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी दिव्या मित्तल व पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार मिश्र ने सम्बन्धित अधिकारियों एवं पण्डा समाज के अध्यक्ष व अन्य पदाधिकारी के साथ बैठक कर आवश्यक दिशा निर्देश दिये। बैठक में जिलाधिकारी ने विद्युत विभाग के अधिकारियों से कहा कि तीनों मन्दिर के समस्त वायरिंग व इलेक्ट्रिक सामानों की जॉच कर ली जाये यदि कही तार व अन्य सामान की कटिंग की गयी हो तो उसे विधिवत मरम्मत करा लिया जाय। जिलाधिकारी ने कहा कि सभी वाहन स्टेण्डों पर रेट बोर्ड लगा हो तथा गाड़ियों के आने-जाने के अन्दर रैम्प बना हो ताकि गाड़ियों का स्टैण्ड में आना-जाना सुचारू ढंग से हो सके। मेला क्षेत्र के सड़कों पर अतिक्रमण के लिये सम्बंधित नागरिकों को नगर मजिस्ट्रेट व सम्बंधित थानाध्यक्ष आपस में समन्वय स्थापित कर नोटिस देकर अतिक्रमण खाली करा लें। मेला क्षेत्र में सुरक्षा, सफाई, घाटों पर महिलाओं के कपडा बदलने के लिये उपयुक्त स्थान, नदी में बैरीकेटिंग, गलियों व नालियों की सफाई, सडकों का मरम्मत, यात्रियों के लिये मंदिर व घाटों पर जाने वाले मार्गो पर इन्डीकेटर, आदि की व्यवस्था पहले से ही कर लिया जायें। जिलाधिकारी ने जिला पूर्ति अधिकारी को निर्देशित करते हुये कहा कि पूड़ी सब्जी का स्टाल विन्ध्याचल में लगाने के साथ ही अमरावती चैराहे पर अस्थायी रैन बसेरा पर भी लगायें। पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार मिश्र ने कहा कि मेला के दौरान श्रद्धालुओं की भीड़ के दृष्टिगत पर्याप्त पुलिस बल की तैनाती की जायेगी। बैठक में अपर जिलाधिकारी वि0/रा0 शिव प्रताप शुक्ल, नमामि गंगे अमरेन्द्र कुमार वर्मा, नगर मजिस्ट्रेट विनय कुमार सिंह, जिला पंचायत राज अधिकारी अरविन्द कुमार, पण्डा समाज के अध्यक्ष पंकज द्विवेदी, के अलावा अन्य सभी सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहें।

बिजली बिल बकाएदारों पर चला विच्छेदन अभियान

राजगढ़। स्थानीय क्षेत्र के विद्युत उपकेंद्र पर तैनात विद्युत सहकर्मी मनोज सिंह के नेतृत्व में बिजली बिल बकाएदारों की जांच पड़ताल की गई। इस दौरान राजगढ़, ददरा, नदिहार बाजार, के बड़े बकायेदारों से बिल वसूली की गई। उपभोक्ताओं को समय से बिल जमा करने के लिए निर्देश दिया गया। क्षेत्र में बिजली बिल बकाएदारों की लम्बी फेहरिस्त बनी हुई है और विभागीय अधिकारियों की ओर से वसूली को लेकर दबाव भी बनाया जा रहा है जिसके तहत स्थानीय विद्युत सहकर्मी लगातार बिल वसूली के लिए टीम बनाकर उपभोक्ताओं के घर पहुंच रहे हैं। इस दौरान टीजी टू मनोज सिंह के नेतृत्व में लगभग 80000 रुपए बिल वसूली की गई और लगभग आधा दर्जन कर्मचारियों की टीम ने दर्जनों उपभोक्ताओं से बकायेदारी होने के कारण विद्युत पोल से कनेक्सन विच्छेदन किया। इस दौरान अमीत दूबे, धर्मेन्द्र मौर्या, महेंद्र, राकेश, सहित आदि कर्मचारी मौजूद रहे।

दूसरे दिन भी एसडीआरएफ के रहे हाथ खाली

तलाश

डूबे युवक की तलाश में नहीं मिली सफलता

गंगा में डूबे युवक का नहीं मिला कोई सुराग

कछवां। क्षेत्र के बरैनी गंगा घाट पर बुधवार को स्नान करते समय डूबे आकाश पाल का दूसरे दिन कोई पता नहीं चल पाया। वहीं ज्ञानपुर, भदोही के लक्ष्मण पट्टी निवासी बुधवार को अपने तीन अन्य साथियों के साथ महराजगंज स्थित एक विद्यालय में बोर्ड की परीक्षा दिलाने आया हुआ था।

दो दोस्तों को परीक्षा केंद्र पर छोड़कर दोस्त उमेश मौर्या के साथ कछवां क्षेत्र के जगतानंद आश्रम घूमने आ गया। घूमने के बाद भटौली पुल के नीचे उतरकर सेल्फी लेना व शार्ट वीडियो बनाने के बाद दोनों गंगा किनारे कपड़ा उतार कर नहाने के लिए चले गये। वहीं अनजान होने के कारण गंगा की गहराई का अंदाजा नहीं लगा पाएं। गहरे पानी में उतर गये कि थोड़ी ही दूर पर काफी गहराई होने से दोनों डूबने लगे। वहीं कुछ ही दूरी पर गंगा में नाविक गोविंदा नाव से मछली पकड़ रहा था कि उसकी निगाह डूबते दोनों युवकों पर पड़ी तो गोविंदा नाव लेकर तेजी से डूबते युवकों तक पहुंचा और उमेश मौर्य का हाथ नाविक के हाथ में आ गया। जिससे उमेश तो बच गया लेकिन आकाश पाल डूब गया था। आकाश की तलाश में एसडीआरएफ की टीम भी आई और स्थानीय गोताखोरों को भी पुलिस ने लगाया फिर भी आकाश का कुछ भी पता समाचार लिखे जाने तक नहीं चल सका। वहीं आकाश को खोजने में एसडीआरएफ की टीम समेत स्थानीय गोताखोर जुटे रहे।

शव की तलाश करती टीम

सीडीओ ने ठेकेदार को लगाई फटकार

सेमरा गांव का सीडीओ ने किया निरीक्षण

जमालपुर। गुरुवार को 12 बजे मुख्य विकास अधिकारी लक्ष्मी वीएस ने ब्लाक मुख्यालय पर पहुंच गयी और पहुंचते ही जमालपुर ग्राम पंचायत स्थित राजस्व गांव सेमरा में पहुंच कर प्रधानमंत्री आवास की निर्माण प्रगति को देखा एवं धीमी गति पर नाराजगी जताई। सेमरा गांव में सबसे पहले इंद्रावती पत्नी रामराज के आवास को देखा एवं पिंका के आवास को देख कर संतोष जताया एवं जियो टैग करने को सचिव को निर्देशित किया। सीमा देवी के आवास को देखा और दूसरी किश्त जारी होने बाद काम में तेजी लाने को कहा। वहीं गांव में विधायक निधि से कराए गए इंटरलॉकिंग हटवा कर नीचे बनाए गए पक्का नाली के चैंबर को देखा। जिसके बाद कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय इंटर कालेज के निर्माण कार्य को देखा जिसमें बन रहे सीमेंट से बन रहे रैक को मानक के अनुसार न रहने पर ठेकेदार को फटकार लगाई एवं एबीएसए को निर्माण कार्य को महीने में दो बार आकर निरीक्षण करने की हिदायत दी। मजदूर कम रहने पर अधिक मजदूर लगाकर कार्य कराने को निर्देशित किया। वही बहुआर गांव में स्वास्थ्य एवं पंचायत विभाग के द्वारा बनाए जा रहे आयुष्मान कार्ड केंद्र का निरीक्षण किया। आयुष्मान लाभार्थियों का मास्टर कार्ड बनाने को पंचायत सहायक एवं स्वास्थ्य कर्मी को निर्देशित किया। इस दौरान खंड विकास अधिकारी पवन सिंह, एडीओ आई एस बी अजय सिंह, सुशील सिंह, नरसिंह चौहान, अशोक सिंह, अनिल कुमार, राजेश पाण्डेय, मन्ना सिंह सहित तमाम कर्मचारी और ग्रामीण मौजूद रहे।

गांव का निरीक्षण करतीं सीडीओ

निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का किया गया आयोजन

मीरजापुर। द लाइफ हॉस्पिटल एंड मेडिकल इंस्टिट्यूट मल्टी स्पेशलिस्ट ट्रामा सेंटर जंगी रोड में निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। बताते चलें कि गुरुवार को जंगी रोड स्थित द लाइफ हॉस्पिटल एंड मेडिकल इंस्टिट्यूट मल्टी स्पेशलिस्ट ट्रामा सेंटर में गरीब व असहाय लोगों के लिए निशुल्क परामर्श दवा वितरण एवं हड्डी घनत्व जांच कैंप का आयोजन किया गया। इस दौरान ऑर्थोपेडिक्स डॉ अतुल कुमार बरनवाल ने हड्डी संबंधित, डेंटिस्ट डॉ रश्मि बरनवाल ने दांतो से संबंधित एवं त्वचा रोग विशेषज्ञ डॉ एलपी प्रजापति ने त्वचा संबंधित मरीजों की जांच कर निशुल्क परामर्श व दवा वितरण किया। इस अवसर पर भारी संख्या में आए मरीजों ने निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का लाभ उठाया। डॉ अतुल बरनवाल ने कहा कि गरीब व असहाय लोगों की सेवा करना ही हमारा उद्देश्य है और हम आगे भी ऐसे निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन करते रहेंगे। जिससे लोगों का भला हो सके।

नीदरलैंड में गूंजेगा लोकगीत कजरी

जनसंदेश न्यूज

पहल

विदेशी धरती पर गूंजेगा देशीगीत संगीत

लोकगीत गायिका उषा गुप्ता महफिल लूटने के लिए तैयारी में जुटीं

मीरजापुर। नीदरलैंड में आयोजित समारोह में मिजापुर की प्रसिद्ध लोकगीत कजरी गूंजेगी। नीदरलैंड में सुरीनाम हिंदुस्तानी कम्युनिटी द्वारा अप्रवासी भारतीयों के सुरीनाम पहुँचने के 150 साल पूर्ण होने पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इसके लिए कजरी गायिका उषा गुप्ता को आमन्त्रित किया गया है। जो 7 सदस्यीय दल के साथ भारतीय लोकगीत व भोजपुरी संगीत की थाती लेकर 24 फरवरी को रवाना होगी। कार्यक्रम का आयोजन नीदरलैंड और सूरीनाम में 25 फरवरी से 1 मार्च 2023 तक किया गया है। मीरजापुर की पहचान व सबसे मजबूत विरासत लोक संगीत कजरी अब भारत के बाहर अंतराष्ट्रीय मंच पर पहुँचेगा। जिले की लोकगीत व कजरी गायिका उषा गुप्ता विदेश की धरती पर देशी सुर संगीत की प्रस्तुति करेंगी। कार्यक्रम में लोक संगीत व भोजपुरी संगीत की प्रस्तुति देने के लिए उषा गुप्ता के साथ वादकों की सात सदस्यीय टीम रवाना होगी। देशी संगीत का जलवा बिखेरने के लिए कलाकार निरंतर रियाज कर रहे है। कार्यक्रम में प्रस्तुति के लिए कजरी, होली, ठुमरी और दादरा के गीत और भोजपुरी संगीत का अभ्यास किया जा रहा है। लोकगीत गायिका उषा गुप्ता का कहना है कि पहली बार अंतरराष्ट्रीय मंच पर गायकी का मौका मिला है। अपनी विरासत कजरी और होली गीत जरूर सुनाऊँगी।

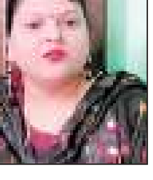
उषा गुप्ता

जनपद में नहीं है टीका का डोज

कोरोना छोड़िये नवजात के लिए नहीं मिल रहा है टीका

मीरजापुर। शासन प्रशासन लाख कोशिश करे मगर जिले के स्वास्थ्य व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से नही चल पा रही है। साथ ही साथ अस्पताल में दलाली का काम जोरों पर फल फूल रहा है। लगभग दो महीने से अस्पताल में निमोनिया का टीका नही है तो टीका करण करने वाली कर्मचारी निजी अस्पतालों का पता बता कर लोगों को भेज देती है। ऐसे में अस्पताल में जब टीका करण नही हो पाता तो मासूम बच्चों के परिजन महंगे दामों पर बाहर बिक रहे टीका को खरीद कर अपने बच्चों को लगवा रहे हैं। जब कर्मचारियों से इस संबंध में बात किया जाता है तो वो आक्रोशित हो जाते है और टीका करण के लिए बाहर कुछ चिन्हित स्थानों का पता बता देती हैं। मगर मामला यह है कि जब जनपद में महत्व पूर्ण टीका का व्यवस्था नहीं हो पा रहा है तो अच्छे स्वास्थ्य की व्यवस्था कैसे होगा। वर्तमान महिला चिकत्सालय के सीएमएस से वार्ता करना चाहा गया तो उनका मोबाइल बंद मिला।

संक्षेप

80 लीटर अवैध शराब, दो किग्रा यूरिया व बाइक बरामद

लालगंज। स्थानीय लालगंज पुलिस को बडी सफलता हाथ लगी है। 80 लीटर अवैध अपमिश्रित कच्ची देशी शराब, 02 किग्रा यूरिया सहित शराब निर्माण व बिक्री में प्रयुक्त एक मोटरसाइकिल को बरामद किया गया। संलिप्त दो लोंगो के खिलाफ कार्रवाई करते हुए जेल भेजा गया। लालगंज की प्रभारी निरीक्षक ज्ञानू प्रिया मय पुलिस बल द्वारा मुखबिर से प्राप्त सूचना के आधार पर थाना क्षेत्र से अवैध, अपमिश्रित कच्ची देशी शराब, बनाने वाले ठिकाने पर दबिश देकर दो दो आरोपियों में पिन्टू उर्फ सुजीत पुत्र धर्मू व राजन पुत्र धर्मू निवासीगण ग्राम खजुरी थाना लालगंज मीरजापुर को गिरफ्तार किया गया। मौके से 80 लीटर अवैध अपमिश्रित कच्ची देशी शराब, 02 किग्रा यूरिया सहित शराब निर्माण व बिक्री में प्रयुक्त एक मोटरसाइकिल को बरामद किया गया। उक्त गिरफ्तारी व बरामदगी के सम्बन्ध में थाना लालगंज पर धारा 60 आबकारी एक्ट व धारा 272 भादवि पंजीकृत कर नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही करते हुये गिरफ्तार आरोपियों को जेल भेजा गया तथा मोटरसाइकिल एमवी एक्ट में सीज किया गया।

ग्राम पंचायत स्तर पर लगाई जाएगी सिंटेक्स टंकी : ज्वाइंट मजिस्ट्रेट

लालगंज। ज्वाइंट मजिस्ट्रेट आईएएस नवनीत सेहरा विकासखंड के सभागार में गुरुवार को प्रधानों के साथ बैठक करके पेयजल समस्या को ग्राम प्रधानों की जुबानी और लिखित सुनने के बाद निर्देशित करते हुए स्पष्ट रूप से कहा कि ग्राम पंचायत स्तर पर सिंटेक्स टंकी लगाई जाएगी और टैंकर की व्यवस्था परिस्थितियों के आधार पर संचालित होगी। उन्होंने जितने हैंडपंप बैठ गए हैं, उन्हें ठीक करा कर पुनः संचालित करने का निर्देश खंड विकास अधिकारी को दिया। बैठक में सेमरी गांव के प्रधान ने बताया कि 12 हैंडपंप गड़बड़ है और तुरकहा ग्राम सेक्रेटरी ने बताया कि 738 फीट का बोर कराने के बाद भी पानी बोर में नहीं आया है। इसी प्रकार नरेना कला की ग्राम प्रधान ने उप जिला मजिस्ट्रेट को जानकारी दिया कि उनके ग्राम सभा में टैंकर की खरीद की गई है लेकिन कागज पर है गांव में नहीं है। जिसको गंभीरता से लेते हुए ज्वाइंट मजिस्ट्रेट ने खंड विकास अधिकारी को जांच करने का निर्देश दिया। बैठक में ज्वाइंट मजिस्ट्रेट ने गांव में पानी की वैकेंसी व्यवस्था बनाए जाने के लिए प्राइवेट बोर की सहमति बोर मालिक से लेने और उसका बिजली और मशीन का खर्च दिए जाने का विकल्प देकर गांव में व्यवस्था बनाने का निर्देश दिया। खंड विकास अधिकारी सामूहिक विवाह योजना की जानकारी दिया। प्रमुख जयंत कुमार ने ग्राम सभा में सिंटेक्स टंकी लगाए जाने की आपसी सहमति बनाए रखने पर जोर दिया। बैठक में डा संजय सिंह, एडीओएजी संजय पटेल, हफीज शांति देवी विकासखंड स्तरीय अधिकारी मौजूद थे।

कच्चे मकान का ताला तोड़कर लाखों रुपये का आभूषण चोरी

हलिया। स्थानीय थाना क्षेत्र के बसुहरा गाँव में कच्चे मकान का ताला तोड कर बुधवार की देर रात बाक्स व अटैची घर 75 मीटर दक्षिण नहर पर तोड़ कर उसमें रखा जेवरात उठा ले गये। सुबह परिजनों ने देखा तो कमरे का ताला टूटा हुआ है। खोजबीन करने पर नहर पर लिखा हुआ सामान मिला है। बसुहरा गाँव निवासी राधिका प्रसाद ने बताया कि घर से चार किमी दूर मैं पाही पर सोया था। मेरी पतोहू अनीता घर के बरामदे में सोई थी कि रात में ताला तोड़ कर चोर घर में घुस कर बाक्स व अटैची सिवान में ले जाकर बाक्स का ताला तोड़ कर चांदी की पेटी, चांदी की पायल, लच्छा, सोने का लाकेट उठा ले गये। सुबह जगने पर मकान का ताला टूटा हुआ देख कर अबाक हो गये। अगल बगल खोजने पर घर से कुछ दूर पर विखरा हुआ सामान मिला है। पीड़ित की तहरीर के बाद उपनिरीक्षक ने घटना स्थल का मौका मुआयना किया।

चोर उठा ले गये हजारों के गहने

जमालपुर। स्थानीय थाना क्षेत्र के जादोपुर महोगनी गांव में बुधवार की देर रात अज्ञात चोरों ने हजारों रुपए का समान लेकर चंपत हो गए। पीड़ित गृह स्वामी धनंजय पान्डेय ने सुबह गुरुवार को तहरीर देकर न्याय की गुहार लगाई है। पीड़ित परिवार के साथ वाराणसी में रहता है। दिए गए तहरीर में बताया कि आलमारी में से तोड़कर एक मंगल सूत्र, 3 सोने की रिंग, टीका, चांदी का दो पायल, एक चांदी का करधनी अज्ञात चोर लेकर चंपत हो गए।

दो बाइकों की टक्कर में दो घायल

लालगंज। स्थानीय थाना क्षेत्र के लहंगपुर चौकी के सीमा पर राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित मलेट्री कम्पाउंड के सामने गुरुवार को दोपहर बाद ट्रक और बाइक में आमने सामने टक्कर हो गई। जिसमें बाइक सवार कमरुद्दीन निवासी देवहट थाना हलिया व एक अज्ञात व्यक्ति गम्भीर रूप से घायल हो गया। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंचकर दोनों घायलों को उपचार हेतु 108 एम्बुलेंस से मण्डलीय अस्पताल भेजवाया। बताया गया कि बाइक सवार एक व्यक्ति की हालत गंभीर है।

पुलिस ने दुष्कर्म मामले में दो आरोपियों को भेजा जेल

मीरजापुर। नाबालिग को बहला फुसलाकर भगाने व षड़यन्त्र के तहत दुष्कर्म करने वाला बाल अपचारी को पुलिस ने गिरफ्तार किया। थाना को. देहात, मीरजापुर पर 30 दिसम्बर 2022 को थाना को0देहात क्षेत्रांतर्गत निवासी एक व्यक्ति द्वारा नामजद आरोपियों के विरूद्ध अपनी(वादी की) नाबालिग पुत्री को षड़यन्त्र के तहत बहला फुसलाकर भगाने के सम्बन्ध में लिखित तहरीर दी गई। जिसके आधार पर थाना को0 देहात पर धारा 363,120बी भादवि पंजीकृत कर विवेचना प्रारम्भ की गई। गुरूवार को उ0नि0 सदानन्द सिंह मय पुलिस बल द्वारा थाना को0देहात पर पंजीकृत मुकदमा उपरोक्त से सम्बन्धित बालअपचारी को पकड़ा गया। अग्रिम विधिक कार्यवाही करते हुए जेल भेजा गया। वहीं दूसरी घटना थाना को0देहात, मीरजापुर पर 24 जनवरी 2023 को थाना को0देहात पर एक व्यक्ति द्वारा नामजद आरोपी के विरूद्ध अपनी(वादी की) नाबालिग बहन को बहला फुसलाकर भगाने के सम्बन्ध में लिखित तहरीर दी गई। जिसके आधार पर थाना को0 देहात पर मु0अ0सं0-12/23 धारा 363 भादवि पंजीकृत कर विवेचना प्रारम्भ की गई। गुरूवार को उ0नि0 नरेन्द्र कुमार यादव मय पुलिस बल द्वारा थाना को0देहात पर पंजीकृत मुकदमा उपरोक्त से सम्बन्धित आरोपी विजय कुमार पुत्र गिरजाशंकर निवासी हरदी खुर्द थाना मड़िहान मीरजापुर को गिरफ्तार किया गया। अग्रिम कार्यवाही करते हुए पुलिस ने जेल भेजा गया।

ब्लॉक सभागार में आयुष्मान कार्ड को लेकर कर्मचारियों की हुई बैठक

हलिया। स्थानीय ब्लाक सभागार में गुरुवार को सचिव, पंचायत सहायकों तथा आशा बहनों की बैठक ली गई। इस दौरान आयुष्मान कार्ड बनाने में तेजी लाने के लिए कर्मचारियों को निर्देशित किया गया। खंड विकास अधिकारी कुलदीप कुमार पटेल ने बताया कि विकासखंड में प्रतिदिन 700 आयुष कार्ड बनाए जाने का लक्ष्य रखा गया है। 79 ग्राम पंचायतों के सचिव तथा पंचायत सहायक एवं आशाओं को प्रतिदिन एक व्यक्ति को 25 कार्ड बनाने के लिए निर्देशित किया गया है। इस दौरान 50 ग्राम पंचायतों में मशीनें भी वितरित की गई हैं। अन्य ग्राम पंचायतों में भी ग्राम पंचायत के माध्यम से बायो मैट्रिक मशीनें उपलब्ध कराते हुए जल्द से जल्द आयुष्मान कार्ड के लक्ष्य को पूरा करना है। इस मौके पर एडीओ पंचायत रूपेश श्रीवास्तव, डॉक्टर अभिषेक जयसवाल, सचिव प्रज्ञान शुक्ल, राजेंद्र बिंद, अमर बहादुर सिंह, गौरव आदि लोग उपस्थित रहे।

अपराध शाखा का किया गया अर्दली रूम

मीरजापुर। पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार मिश्रा द्वारा पुलिस अधीक्षक कार्यालय में अपराध शाखा का अर्दली रूम कर अपराध एवं विवेचनाओं की समीक्षा की गई। इस दौरान अपराध शाखा में लम्बित विवेचनाओं की अद्यतन स्थिति की जानकारी लेते हुए गुण दोष एवं साक्ष्यों के आधार पर लंबित प्रकरणों का शीघ्र निस्तारण करने हेतु निर्देश दिया गया। यह भी निर्देश दिया गया कि शासन के निदेर्शानुसार महिला सम्बन्धित अपराध एवं साइबर अपराधों में यथाशीघ्र अभिलेखीय एवं अन्य ठोस साक्ष्यों का संकलन कर विवेचनाओं का शीघ्र निस्तारण किया जायें। इस दौरान जनपद के क्षेत्राधिकारी ऑपरेशन, अपराध, विवेचनाओं से सम्बन्धित विवेचकगण सहित अन्य अधिकारी व कर्मचारीगण मौजूद रहे।

30 महिलाओं ने कराई नसबंदी

जमालपुर। गुरुवार को सीएचसी केंद्र पर गुरुवार को अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डा बैजनाथ यादव की देखरेख में नसबंदी कैंप का आयोजन किया गया। कुल 33 महिलाओं ने नसबंदी कराने के लिए पंजीकरण कराया जिसमें से 30 महिलाओं का नसबंदी हुआ। तीन महिलाएं नसबंदी कराने के योग्य नही पाई गई। इस दौरान प्रभारी चिकित्साधिकारी डा.राजन सिंह, अनुज कुमार शर्मा, श्रवण कुमार पांडेय, सच्चिदानंद, स्टाफ नर्स पुष्पा एवं सुनीता ने सहयोग किया।

गोष्ठी आयोजित कर किसानों को दी गई जानकारी

हलिया। विकास खंड के मड़वां धनावल गांव में गुरुवार को भूमि संरक्षण विभाग व कृषि विभाग के तत्वावधान में डब्ल्यूडीसी प्रधानमंत्री सिंचाई योजना के तहत गोष्ठी आयोजित कर किसानों को आधुनिक तरीके से खेती करने के बारे में जानकारी दी गई। गोष्ठी को संबोधित करते हुए भूमि संरक्षण अधिकारी जीत लाल गुप्ता ने किसानों को भूमि जल संरक्षण पर विस्तार पूर्वक जानकारी दी। आधुनिक तकनीक से खेती करने के बारे में जानकारी दी। बीएचयू कृषि विज्ञान केन्द्र से आए कृषि वैज्ञानिक डॉ एस एन सिंह ने किसानों को फसलोत्पादन को लेकर आधुनिक तौर तरीकों से खेती करने का सुझाव दिया और खेतों में जैविक खाद का प्रयोग करने की सलाह दी।

स्पोर्ट्स

टीम इंडिया के तेज गेंदबाज उमेश यादव के पिता का निधन, 74 साल की उम्र में ली आखिरी सांस

नई दिल्ली। भारतीय टीम के तेज गेंदबाज उमेश यादव के पिता तिलक यादव का 74 साल की उम्र में निधन हो गया। उमेश के पिता लंबे समय से बीमार थे और उनकी हालत में कोई सुधार नहीं हो रहा था। इस वजह से उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी गई थी और वह अपने घर में ही थे। नागपुर के निजी अस्पताल में इलाज के दौरान तिलक की हालत स्थिर बनी हुई थी। इसके बाद उन्हें घर ले जाया गया और उनका निधन हो गया। भारतीय टीम इस समय ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चार मैचों की टेस्ट सीरीज में व्यस्त है। उमेश यादव भी ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मौजूदा टेस्ट सीरीज में भारतीय टीम का हिस्सा हैं, लेकिन उन्हें पहले दो मुकाबलों में खेलने का मौका नहीं मिला हैं। उमेश ने अब तक भारत के लिए 54 टेस्ट, 75 वनडे और नौ टी20 इंटरनेशनल मुकाबले खेले हैं।

भारत के खिलाफ वनडे सीरीज के लिए ऑस्ट्रेलियाई टीम की घोषणा, इन तीन खिलाड़ियों की हुई वापसी

पैट कमिंस, डेविड वार्नर और एश्टन एगर को भी जगह मिली, तीन एकदिवसीय मुकाबले 17 मार्च को मुंबई, 19 मार्च को विशाखापत्तनम और 22 मार्च को चेन्नई में खेले जाएंगे

मेलबर्न। ऑलराउंडर ग्लेन मैक्सवेल और मिशेल मार्श के अलावा झाय रिचर्डसन को अगले महीने भारत के खिलाफ होने वाली तीन मैच की श्रृंखला के लिए गुरुवार को ऑस्ट्रेलिया की 16 सदस्यीय एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय टीम में शामिल किया गया। इस श्रृंखला के साथ इन तीनों की अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी होगी। इसके अलावा पैट कमिंस, डेविड वार्नर और एश्टन एगर को भी टीम में जगह मिली है। तीन एकदिवसीय मुकाबले 17 मार्च को मुंबई, 19 मार्च को विशाखापत्तनम और 22 मार्च को चेन्नई में खेले जाएंगे। परिवार के सदस्य के बीमार

होने के कारण कमिंस नयी दिल्ली में भारत में खिलाफ दूसरे टेस्ट के बाद स्वदेश लौट आए थे जबकि एगर को घरेलू क्रिकेट खेलने के लिए टेस्ट टीम से रिलीज कर दिया गया।

दूसरी तरफ वार्नर कोहनी की चोट के कारण बाकी बचे दो टेस्ट से बाहर हो गए हैं। कमिंस हालांकि एक मार्च से इंदौर में शुरू होने वाले तीसरे टेस्ट के लिए भारत लौटेंगे। मैक्सवेल और मार्श क्रमशः पैर और टखने की चोट के कारण लंबे समय तक बाहर रहने के बाद टीम में वापसी कर रहे हैं। नवंबर में अजीब हालात में अपना पैर फ्रेक्चर करवाने वाले मैक्सेल ने पिछले हफ्ते प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में वापसी की है जबकि मार्श ने पिछले साल नवंबर में इंग्लैंड के खिलाफ तीन मैच की एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला में हिस्सा लिया था। चोट से उबरने में नाकाम रहने के कारण टेस्ट श्रृंखला के बीच से स्वदेश लौटे तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला से भी बाहर हो गए हैं। पिछले साल के मध्य में श्रीलंका के सीमित ओवरों के दौरे के बाद से चोट के कारण बाहर रिचर्डसन अब पूरी तरह से उबर चुके हैं।

ऑस्ट्रेलिया की चयन समिति के प्रमुख जॉर्ज बेली ने टीम की घोषणा करते हुए कहा, जोश (हेजलवुड) के लिए इस श्रृंखला का हिस्सा बनना शानदार होता लेकिन इंग्लैंड के बेहद महत्वपूर्ण दौरे को देखते हुए हमने रूढ़िवादी नजरिया अपनाया। पिछले साल अक्टूबर में आरोन फिंच के संन्यास के बाद कमिंस एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय टीम की अगुआई करते रहेंगे।

एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला में ट्रेविस हेड के वार्नर के साथ शीर्ष पर जोड़ी बनाने की उम्मीद है। टीम के अन्य सदस्य मार्नस लाबुशेन, एडम जम्पा, कैमरन ग्रीन, मार्कस स्टोइनिस, स्टीव स्मिथ, जोश इंग्लिस, एलेक्स कैरी और तेज गेंदबाज सीन एबट तथा मिशेल स्टार्क हैं। तीन मैच की आगामी श्रृंखला उन दो द्विपक्षीय एकदिवसीय श्रृंखलाओं में से एक है जो ऑस्ट्रेलिया की टीम अक्टूबर-नवंबर में होने वाले 50 ओवर के विश्व कप से पहले भारत में खेलेगी। दोनों टीम के बीच दूसरी श्रृंखला विश्व कप से ठीक पहले सितंबर में खेली जाएगी।

एकदिवसीय टीम इस प्रकार है

पैट कमिंस (कप्तान), सीन एबट, एश्टन एगर, एलेक्स कैरी, कैमरन ग्रीन, ट्रेविस हेड, जोश इंग्लिस, मार्नस लाबुशेन, मिशेल मार्श, ग्लेन मैक्सवेल, झाय रिचर्डसन, स्टीव स्मिथ, मिशेल स्टार्क, मार्कस स्टोइनिस, डेविड वार्नर और एडम जम्पा।

ऐडन मार्कराम को सनराइजर्स हैदराबाद का कप्तान नियुक्त किया

हैदराबाद। दक्षिण अफ्रीका के ऑलराउंडर ऐडन मार्कराम को 31 मार्च से शुरू हो रहे इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के आगामी सत्र के लिए गुरुवार को सनराइजर्स हैदराबाद का कप्तान नियुक्त किया गया। सनराइजर्स ने अपने ट्विटर हैंडल पर घोषणा की, इंतजार खत्म हुआ। हमारे नए कप्तान ऐडन मार्कराम से मिलिए। न्यूजीलैंड के केन विलियमसन ने पिछले सत्र में सनराइजर्स की अगुआई की थी जहां टीम छह जीत और आठ हार से 10 टीम के बीच आठवें स्थान पर रही थी। इस साल की नीलामी से पहले सनराइजर्स ने विलियमसन को रिलीज कर दिया था जहां गुजरात टाइटंस ने उन्हें अपने साथ जोड़ा। आगामी सत्र में सनराइजर्स की टीम अपना पहला मैच दो अप्रैल को हैदराबाद में राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ खेलेगी। हाल में जोहानिसबर्ग में पहले एसए20 टूनार्मेंट का खिताब जीतने के दौरान सनराइजर्स की टीम सनराइजर्स ईस्टर्न केप की अगुआई करने के बाद मार्कराम को सनराइजर्स हैदराबाद की कप्तानी की दौड़ में सबसे आगे माना जा रहा था। एसए20 लीग में मार्कराम शानदार फॉर्म में थे। उन्होंने अपनी टीम की खिताबी जीत में 366 रन बनाने के अलावा 11 विकेट भी चटकाए जिसके लिए उन्हें टूनार्मेंट का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया। आईपीएल 2023 की शुरूआत 31 मार्च को अहमदाबाद में चेन्नई सुपरकिंग्स और गुजरात टाइटंस के बीच मुकाबले के साथ होगी।

28 पर भारत को तीसरा झटका, यास्तिका रन आउट, शेफाली-मंधाना रहीं फेल

तीन ओवर का खेल हो चुका है और टीम इंडिया की शुरूआत बेहद खराब रही

नई दिल्ली। तीन ओवर का खेल हो चुका है और टीम इंडिया की शुरूआत बेहद खराब रही है। दोनों ओपनर्स पवेलियन लौट चुकी हैं। शेफाली वर्मा दूसरे ओवर में मेगन शुट्ट की गेंद पर एल्बीडब्ल्यू हुईं। वहीं, तीसरे ओवर में एश्ले गार्डनर ने स्मृति मंधाना को एल्बीडब्ल्यू आउट किया। शेफाली छह गेंदों में नौ रन और मंधाना दो रन बना सकीं। तीन ओवर के बाद भारत का स्कोर दो विकेट पर 26 रन है। फिलहाल जेमिमा रॉड्रिग्स और यास्तिका भाटिया क्रीज पर हैं।

केप टाउन में खेले जा रहे महिला टी20 विश्व कप के पहले सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया ने भारत को 173 रन का लक्ष्य दिया है। ऑस्ट्रेलिया ने बेथ मूनी के अर्धशतक और मेग लैनिंग की कप्तानी पारी की बदौलत 20 ओवर में चार विकेट पर 172 रन बनाए। ऑस्ट्रेलिया ने बेथ मूनी के अर्धशतक और मेग लैनिंग की कप्तानी पारी की बदौलत 20 ओवर में चार विकेट पर 172 रन बनाए। मूनी ने 37 गेंदों में 54 रन की पारी खेली। लैनिंग ने 34 गेंदों पर 49 रन की नाबाद पारी खेली। वहीं एश्ले गार्डनर ने 18 गेंदों में 31 रन बनाए। भारत की ओर से शिखा पांडे को दो विकेट मिले। वहीं, दीप्ति शर्मा और राधा यादव को एक-एक विकेट मिला। महिला टी20 विश्व कप के पहले सेमीफाइनल में भारत का सामना डिफेंडिंग चैंपियंस ऑस्ट्रेलिया से है। भारतीय टीम यह मैच जीतकर लगातार दूसरी बार फाइनल में पहुंचने उतरी है। वहीं, ऑस्ट्रेलियाई टीम इस टूनार्मेंट में सात में से छह बार फाइनल में पहुंच चुकी है। भारतीय टीम के लिए यह मैच बेहद कठिन रहने वाला है। केप टाउन में खेले जा रहे महिला टी20 विश्व कप के पहले सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया ने भारत को 173 रन का लक्ष्य दिया है। ऑस्ट्रेलिया ने बेथ मूनी के अर्धशतक और मेग लैनिंग की कप्तानी पारी की बदौलत 20 ओवर में चार विकेट पर 172 रन बनाए। ऑस्ट्रेलिया ने बेथ मूनी के अर्धशतक और मेग लैनिंग की कप्तानी पारी की बदौलत 20 ओवर में चार विकेट पर 172 रन बनाए। मूनी ने 37 गेंदों में 54 रन की पारी खेली। लैनिंग ने 34 गेंदों पर 49 रन की नाबाद पारी खेली। वहीं एश्ले गार्डनर ने 18 गेंदों में 31 रन बनाए। भारत की ओर से शिखा पांडे को दो विकेट मिले। वहीं, दीप्ति शर्मा और राधा यादव को एक-एक विकेट मिला।

सौरव गांगुली का किरदार निभाएंगे रणबीर कपूर

जल्द शुरू होगी शूटिंग

मुंबई। बॉलीवुड अभिनेता रणबीर कपूर सिल्वर स्क्रीन पर भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली का किरदार निभाते नजर आ सकते हैं। बॉलीवुड में चर्चा है कि सौरभ गांगुली के जीवन पर फिल्म बनने जा रही है। फिल्म में उनका किरदार रणबीर कपूर निभाते नजर आ सकते हैं। कहा जा रहा है कि सौरव गांगुली ने अपनी बायोपिक की स्क्रिप्ट को मंजूरी दे दी है। जल्द से जल्द फिल्म की शूटिंग का काम भी शुरू हो जाएगा। सौरव गांगुली को भारतीय क्रिकेट टीम के सफल कैप्टन्स में से एक माना जाता है। बताया जा रहा है कि सौरव गांगुली की यह बायोपिक नेट वेस्ट सीरीज में गांगुली की परफॉर्मेंस और पत्नी डोना के साथ उनके रिश्तों पर फोकस करेगी। आपको बता दें कि साल 2019 में फिल्म की अनाउंसमेंट के बाद से ऋतिक रोशन, रणबीर कपूर और सिद्धार्थ मल्होत्रा सहित बड़े एक्टर्स के नाम सामने आए हैं। अभी तक कोई ऑफिशियल अनाउंसमेंट नहीं हुई है कि कौन स्क्रीन पर टीम इंडिया के फॉर्मर कैप्टन का किरदार निभाएगा, लेकिन रणबीर कपूर के नाम चर्चा है। सौरव गांगुली के फैंस ने ये भी खुलासा किया है कि बॉलीवुड सुपरस्टार रणबीर कपूर बायोपिक की शूटिंग से पहले कोलकाता के आइकॉनिक ईडन गार्डन्स, कैब ऑफिस और सौरव गांगुली के घर का दौरा कर सकते हैं। खबरों के मुताबिक, ये बायोपिक एक बड़े बजट की फिल्म होने वाली है, जिसकी लागत 200-250 करोड़ रुपये होगी।

सौरव ने पहले कहा था कि वो जल्दबाजी में नहीं हैं और चाहते हैं कि शूटिंग शुरू करने से पहले सब कुछ फैक्चुअल रूप से सही हो। अब उन्होंने कथित तौर पर स्क्रिप्ट के फाइनल ड्राफ्ट के लिए हां कह दिया है और शूटिंग जल्द ही कोलकाता में शुरू होगी।

चेन्नई सुपर किंग्स को लगा बड़ा झटका आईपीएल को बीच में छोड़ेंगे बेन स्टोक्स...

वेलिंगटन। दुनिया के शीर्ष ऑलराउंडर बेन स्टोक्स इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) को इंग्लैंड के प्रति अपने फर्ज के आड़े नहीं आने देंगे और उन्होंने कहा है कि अगर उनकी फ्रेंचाइजी फाइनल में जगह बनाती है तो वह एशेज श्रृंखला से पहले स्वदेश लौटकर आयरलैंड के खिलाफ राष्ट्रीय टीम की अगुआई करने को प्राथमिकता देंगे। स्टोक्स दुनिया की सबसे लोकप्रिय टी20 लीग के पिछले टूनार्मेंट में नहीं खेल पाए थे लेकिन 31 मार्च से शुरू होने वाले आगामी सत्र में चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) का प्रतिनिधित्व करने को तैयार हैं। आईपीएल का फाइनल 28 मई को होना है जबकि इंग्लैंड एक जून से एकमात्र टेस्ट में आयरलैंड से भिड़ेगा। सीएसके की टीम सत्र का अपना पहला मैच तीन अप्रैल को लखनऊ सुपरजाइंट्स के खिलाफ खेलेगी।

'मैं इंग्लैंड के लिए खेलूंगा'

स्टोक्स से जब पूछा गया कि अगर सीएसके खिताबी मुकाबले के लिए क्वालीफाई कर लेती है तो क्या वह इंग्लैंड के लिए खेलेंगे तो उन्होंने कहा, हां, मैं खेलूंगा। उन्होंने कहा, मैं यह सुनिश्चित कर रहा हूं कि मैं अपने आप को स्वदेश लौटने और उस मैच (आयरलैंड के खिलाफ) को खेलने के लिए पर्याप्त समय दूं। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में इस बात पर बहस छिड़ी हुई है कि क्या खिलाड़ी राष्ट्रीय जिम्मेदारी की बजाय निजी लीग को तरजीह दे रहे हैं। स्टोक्स ने कहा कि वह अपने इंग्लैंड के साथियों की पसंद के बारे में कुछ नहीं कह सकते। जो रूट, जॉनी बेयरस्टो, जोफ्रा आर्चर, मार्क वुड और हैरी ब्रूक सभी के पास आईपीएल अनुबंध हैं। स्टोक्स ने कहा, मुझे लगता है कि दूसरों के लिए कुछ कहना जल्दबाजी होगी लेकिन हमें आयरलैंड टेस्ट के बाद एशेज में खेलना है इसलिए मैं शायद खिलाड़ियों के पास जाऊंगा और उनसे पूछूंगा कि क्या वे एशेज के लिए तैयार रहना चाहते हैं। उन्होंने कहा, वे पांच मैच स्पष्ट रूप से गर्मियों के सत्र के बड़े मुकाबले हैं और आपको यह सोचना होगा कि खिलाड़ी क्या चाहते हैं। पांच मैचों की एशेज श्रृंखला 16 जून से बर्मिंघम में शुरू होगी।

भारत में सिर्फ बल्लेबाज के रूप में खेलेंगे ग्लेन मैक्सवेल

मेलबर्न। तीन महीने के अंतराल के बाद प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में वापसी कर रहे ग्लेन मैक्सवेल 'मानसिक मजबूती' वापस पाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं लेकिन भारत के खिलाफ महत्वपूर्ण एकदिवसीय श्रृंखला की तैयारी में कोई कसर नहीं छोड़ रहे। भारत में ही इसी साल एकदिवसीय विश्व कप भी होना है। ऑलराउंडर मैक्सवेल, मिशेल मार्श और तेज गेंदबाज झाय रिचर्डसन ने चोट के कारण लंबे समय तक बाहर रहने के बाद गुरुवार को ऑस्ट्रेलिया की 16 सदस्यीय एकदिवसीय टीम में वापसी की। मैक्सवेल के पैर में फ्रेक्चर हो गया था। उन्होंने कहा कि इस सप्ताह दक्षिण ऑस्ट्रेलिया पर शेफील्ड शील्ड में विक्टोरिया की जीत के दौरान क्रिकेट में वापसी करने के बाद वह अब भी खेल के मानसिक पहलू से सामंजस्य बैठाने का प्रयास कर रहे हैं। 'क्रिकेट.कॉम.एयू' ने मैक्सवेल के हवाले से कहा, शील्ड मैच के दौरान शायद बल्लेबाजी करते हुए मैं मानसिक रूप से उस स्थिति में नहीं था। उन्होंने कहा,'नेट में आप कड़ी मेहनत कर सकते हैं लेकिन मैच के दौरान उस मानसिकता को वापस लाना स्पष्ट रूप से एक अलग बात है। मैक्सवेल ने कहा, 'शायद यह कुछ ऐसा है जिस पर मैं अगले कुछ मैचों में काम करूंगा। यही कारण है कि इस 34 वर्षीय ऑलराउंडर ने अक्टूबर-नवंबर में भारत में एकदिवसीय विश्व कप से पहले लय में आने के लिए ऑफ सत्र के दौरान अधिक से अधिक मुकाबलों में खेलने का फैसला किया है।

लखनऊः नेशनल जूडो चैम्पियनशिप में यूपी ने जीती ओवर ऑल प्रतियोगिता में रनर्स अप ट्रॉफी

लखनऊ। चेन्नई में 17 से 22 फरवरी तक खेली गयी सब जूनियर एवं कैडिट नेशनल जूडो चैम्पियनशिप में उत्तर प्रदेश के बालक एवं बालिकाओं ने सब जूनियर जूडो प्रतियोगिता में तीन स्वर्ण, दो रजत एवं एक कांस्य पदक जीतकर दूसरा स्थान प्राप्त किया जबकि कैडिट जूडो प्रतियोगिता में टीम ने दो स्वर्ण और एक कांस्य पदक जीता। जवाहर लाल नेहरू इन्डोर स्टेडियम में सब जूनियर एवं कैडिट जूडो प्रतियोगिता को मिलाकर ओवर ऑल पदकों के आधार पर मणिपुर ने विनर्स ट्रॉफी जीती जबकि उत्तर प्रदेश ने पांच स्वर्ण, दो रजत एवं दो कांस्य पदक जीतकर रनर्स अप ट्रॉफी जीती। जूडो के इतिहास में यह पहला अवसर है कि सब जूनियर एवं कैडिट नेशनल जूडो चैम्पियनशिप में यूपी ने दो ट्रॉफियां जीती हैं। स्पोर्टर्स कॉलेज गोरखपुर की जूडोका शगुन को सब जूनियर बालिका प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया गया।

डेविड वार्नर ने कहा- 2024 तक खेलना चाहता हूं, एशेज टीम में जगह बनाने की उम्मीद

सिडनी। खराब फॉर्म से जूझ रहे ऑस्ट्रेलिया के सलामी बल्लेबाज डेविड वार्नर ने गुरुवार को कहा कि अगर चयनकर्ता उनके टेस्ट करियर को खत्म करने का फैसला करते हैं तो वह 2024 तक सीमित ओवरों का क्रिकेट खेलना चाहते हैं। कोहनी में फ्रेक्चर के कारण भारत में बोर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के अंतिम दो मैच से बाहर होने के बाद वार्नर गुरुवार को यहां पहुंचे। वार्नर भारत के खिलाफ पहले दो टेस्ट में रन बनाने के लिए जूझते दिखे और तीन पारियों में एक, 10 और 15 रन ही बना पाए। कनकशन (सिर में चोट लगने के कारण बेहोशी जैसी स्थिति) के कारण बाहर होने के कारण वह नयी दिल्ली में दूसरे टेस्ट की दूसरी पारी में बल्लेबाजी नहीं कर पाए। वार्नर ने यहां सिडनी हवाई अड्डे पर कहा, मैंने हमेशा से कहा है कि मैं 2024 तक खेलना चाहता हूं। अगर चयनकताओं को लगता है कि मैं टीम (टेस्ट) में जगह बनाने का हकदार नहीं हूं तो कुछ नहीं किया जा सकता और मैं सफेद गेंद का क्रिकेट खेलने का प्रयास कर सकता हूं। बाएं हाथ के इस 36 वर्षीय बल्लेबाज को खराब फॉर्म के बावजूद इस साल एशेज दौरे की टीम में जगह बनाने की उम्मीद है। वार्नर ने कहा, मेरे पास अगले 12 महीने हैं, टीम को काफी क्रिकेट खेलना है और अगर मैं रन बनाना जारी रखता हूं और टीम के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करता हूं तो टीम में अपनी जगह बना पाऊंगा और यह टीम के लिए शानदार होगा। उन्होंने कहा, जब आप 36 साल के होते हैं और 37 के होने वाले होते हैं तो (आलोचकों के लिए) आसानी होती है। मैंने पूर्व खिलाड़ियों के साथ भी ऐसा देखा है। वार्नर ने कहा, अगर मैं बाकी खिलाड़ियों से दबाव हटाता हूं और अगर कोई बाकी टीम को लेकर चिंतित नहीं है तो मुझे ऐसा करने में खुशी होगी। पांच दिवसीय प्रारूप में लंबे समय से खराब फॉर्म के कारण वार्नर के टेस्ट करियर पर संदेह के बादल छा गए हैं। वह पिछले तीन साल में सिर्फ एक टेस्ट शतक लगा पाए हैं। बुधवार को ऑस्ट्रेलिया के चयनकर्ता टोनी डोडमेड ने वार्नर के भविष्य और एशेज दौरे के लिए उनके नाम पर चर्चा पर प्रतिक्रिया देने से इनकार कर दिया था। उन्होंने कहा, एशेज की योजना पर हम बाद में बात करेंगे लेकिन हम टेस्ट श्रृंखला के लिए सर्वश्रेष्ठ फिट और उपलब्ध खिलाड़ियों को चुनने के लिए प्रतिबद्ध हैं विशेषकर एशेज जैसी बड़ी श्रृंखला के लिए। वार्नर को हालांकि भारत के खिलाफ मुंबई में 17 मार्च से शुरू हो रही तीन मैच की श्रृंखला के लिए ऑस्ट्रेलिया की 16 सदस्यीय एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय टीम में शामिल किया गया है। पांच मैच की एशेज श्रृंखला 16 जुलाई से बर्मिंघम में शुरू होगी।

डब्ल्यूएफआई अध्यक्ष बृज भूषण के खिलाफ जांच की रिपोर्ट के लिए निगरानी समिति को दो और हफ्ते का समय मिला

नई दिल्ली। खेल मंत्रालय ने डब्ल्यूएफआई (भारतीय कुश्ती महासंघ) अध्यक्ष बृज भूषण शरण सिंह के खिलाफ यौन उत्पीड़न के आरोपों की जांच पर रिपोर्ट सौंपने के लिये निगरानी समिति को दी गयी समयसीमा दो हफ्ते के लिये बढ़ा दी है। देश के शीर्ष पहलवानों द्वारा किये गये दावों के बाद 23 जनवरी को महान मुक्केबाज एमसी मैरीकॉम की अगुआई वाली निगरानी समिति गठित की गयी थी। पहलवानों ने दावा किया था कि बृज भूषण ने कई महिला पहलवानों का यौन उत्पीड़न किया है और खिलाड़ियों को डराया धमकाया है। पहलवानों ने यौन उत्पीड़न के आरोपों पर किसी भी पीड़ित के नाम का खुलासा नहीं किया था। समिति से अपनी रिपोर्ट चार हफ्तों में सौंपने के लिये कहा गया था। यह समिति खेल संस्था के दिन प्रतिदिन का कामकाज भी देख रही है। समिति के सदस्यों द्वारा अनुरोध किये जाने के बाद मंत्रालय ने यह समयसीमा बढ़ा दी है और अब वह यह रिपोर्ट नौ मार्च को सौंपेगी। मंत्रालय के एक सूत्र ने कहा, खेल मंत्रालय ने उनके अनुरोध के बाद निगरानी समिति को रिपोर्ट सौंपने के लिये दो हफ्ते का समय और दिया है। मंत्रालय को तब यह पैनल गठित करने के लिए बाध्य होना पड़ा था जब बजरंग पूनिया, विनेश फोगाट, रवि दहिया और साक्षी मलिक सहित शीर्ष भारतीय पहलवान बृज भूषण को शीर्ष पद से हटाने और डब्ल्यूएफआई को भंग करने की मांग करते हुए नयी दिल्ली में जंतर मंतर पर धरने पर बैठ गए थे। फिर भाजपा सांसद को जांच पूरी होने तक पद से हटने के लिये कहा गया था।

बजट में किये गये उपायों से नौकरियां बढ़ेंगी आर्थिक वृद्धि तेज होगी : वित्त मंत्रालय

वित्त वर्ष 2023-24 के बजट में एक बार फिर पूंजीगत व्यय के जरिये वृद्धि को गति देने का प्रयास किया गया, बजट में केंद्र का पूंजीगत व्यय 10 लाख करोड़ रुपये है जो चालू वित्त वर्ष के मुकाबले 33 प्रतिशत अधिक

नई दिल्ली। वित्त मंत्रालय ने बृहस्पतिवार को कहा कि वित्त वर्ष 2023-24 के बजट में पूंजीगत व्यय में वृद्धि, हरित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा तथा वित्तीय बाजार को मजबूत बनाने के उपायों की घोषणा से नौकरियां बढ़ने के साथ आर्थिक वृद्धि को गति मिलने की उम्मीद है। मंत्रालय ने अपनी मासिक आर्थिक समीक्षा में कहा कि चालू वित्त वर्ष की अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में जो महत्वपूर्ण आंकड़े हैं (निर्यात, जीएसटी संग्रह, पीएमआई आदि) वे आम तौर पर नरमी का संकेत देते हैं। इसका एक कारण मौद्रिक नीति को कड़ा किया जाना है जिससे वैश्विक मांग पर प्रतिकूल असर दिखना शुरू हो गया है। इसमें कहा गया है, यह स्थिति 2023 में भी जारी रह सकती है क्योंकि विभिन्न एजेंसियों ने वैश्विक वृद्धि में गिरावट की आशंका जतायी है। मौद्रिक नीति कड़ी किये जाने से उत्पन्न प्रभाव के अलावा दुनिया के कुछ देशों में महामारी का असर बने रहने तथा यूरोप में तनाव से वैश्विक वृद्धि पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। वैश्विक उत्पादन में नरमी के अनुमान की आशंका के बाद भी अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष और विश्वबैंक ने 2023 में भारत के तीव्र आर्थिक वृद्धि दर हासिल करने वाली अर्थव्यवस्था बने रहने की उम्मीद जतायी है। मासिक समीक्षा में कहा गया है, वित्त वर्ष 2022-23 की तरह भारत आने वाले वित्त वर्ष का सामना पूरे भरोसे के साथ करने को तैयार है। इसका कारण कुल मिलाकर समग्र वृहत आर्थिक स्थिरता है। साथ ही वैश्विक स्तर पर राजनीतिक और आर्थिक जोखिमों को लेकर देश पूरी तरह से सतर्क भी है। इसमें कहा गया है कि संसद में पेश वित्त वर्ष 2022-23 की आर्थिक समीक्षा में 2023-24 में आर्थिक वृद्धि दर 6.5 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया गया है। इसमें इसके ऊपर जाने की तुलना में नीचे जाने का जोखिम अधिक है।

मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार, देश के लिये मुद्रास्फीति जोखिम 2023-24 में कम रहने की उम्मीद है। लेकिन रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण वैश्विक स्तर पर जारी तनाव और उसके कारण आपूर्ति बाधित होने जैसी वैश्विक स्थिति के कारण यह पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। इससे 2022 में ऊंची महंगाई दर रही और यह स्थिति अब भी मौजूद है। प्रशांत क्षेत्र में अल नीनो की भविष्यवाणी की गयी है। इससे भारत में मानसून कमजोर रह सकता है। इसके परिणामस्वरूप कम उत्पादन और उच्च कीमतें होंगी। दूसरी तरफ, कीमतों के साथ चालू खाते के घाटे समेत बाह्य घाटों को लेकर स्थिति वित्त वर्ष 2023-24 में चालू वित्त वर्ष के मुकाबले कम चुनौतीपूर्ण हो सकती है। लेकिन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और पूंजी प्रवाह के रुझान पर ध्यान रखने की जरूरत है। वित्त वर्ष 2023-24 के बजट में एक बार फिर पूंजीगत व्यय के जरिये वृद्धि को गति देने का प्रयास किया गया है। बजट में केंद्र का पूंजीगत व्यय 10 लाख करोड़ रुपये है जो चालू वित्त वर्ष के मुकाबले 33 प्रतिशत अधिक है। इसमें कहा गया है, इसके जरिये सरकार प्रतिकूल वैश्विक परिस्थितियों के बीच निवेश के माध्यम से वृद्धि को गति देने की दिशा में अपना प्रयास जारी रखे हुए है...वित्त वर्ष 2023-24 के केंद्रीय बजट में पूंजीगत व्यय में वृद्धि, बुनियादी ढांचे के विकास पर जोर, हरित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना और वित्तीय बाजारों को मजबूत करने की पहल जैसे उपायों से रोजगार सृजन को बढ़ावा मिलने और आर्थिक वृद्धि को गति मिलने की उम्मीद है।

एयर इंडिया के बाद अब कर्नाटक की बस में पेशाब कांड नशे में धुत्त शख्स ने महिला की सीट पर की गंदी हरकत

बेंगलुरू। कर्नाटक की सरकारी बस में एयर इंडिया जैसा पेशाब कांड देखने को मिला है। कर्नाटक सड़क परिवहन निगम (केएसआरटीसी) की बस में एक नशे में धुत्त व्यक्ति ने यात्रा के दौरान महिला सह-यात्री की सीट पर पेशाब कर दिया। व्यक्ति की इस गंदी हरकत के बाद बस में बवाल मच गया और अब परिवहन निगम उसके खिलाफ शिकायत दर्ज कराने पर विचार कर रहा है। बता दें कि इससे पहले एयर इंडिया की फ्लाइट में भी एक नशे में धुत्त व्यक्ति ने महिला पर पेशाब कर दिया था। दरअसल, 21 फरवरी को विजयपुरा से मेंगलुरु जाने वाली एक नॉन-स्लीपर बस में 32 वर्षीय एक मैकेनिकल इंजीनियर ने यह हरकत की। बस में पेशाब करने के बाद आरोपी ने माफी मांगी और अपनी निजी जानकारी नहीं दी। उधर, महिला यात्री ने शिकायत दर्ज कराने से इनकार कर दिया जिसके चलते बस निर्धारित यात्रा पर चलती रही। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, हुबली शहर के पास किरेसुर में जब बस को रात को खाना खाने के लिए रोका गया तो उस व्यक्ति ने 20 वर्षीय महिला की सीट पर पेशाब कर दिया।

रुबीना दिलैक ने कराया बोल्ड फोटोशूट हसीन अदाओं पर फिदा हुए फैंस

मुंबई। छोटे पर्दे की मशहूर एक्ट्रेस रुबीना दिलैक सोशल मीडिया पर अपने लुक्स के कारण चर्चा में रहती हैं। ऐसे में फैंस उनकी एक झलक के लिए बेताब रहते हैं। रुबीना दिलैक ने हाल ही में सोशल मीडिया पर लेटेस्ट हॉट फोटोज शेयर की हैं, जिसमें वो अपनी हसीन अदाएं दिखा रही हैं। रुबीना ने अपने लेटेस्ट फोटोशूट में हॉटनेस और बोल्डनेस का तड़का लगाया है। फैंस उनके हुस्न की तारीफ करते हुए थक नहीं रहे हैं। रुबीना का ये सिल्वर-गोल्डन बिकिनी आउटफिट इतना ज्यादा ग्लैमरस है कि लोगों की नजर उनके हुस्न से हट ही नहीं पा रही है। एक्ट्रेस ने लाइट मेकअप किया है और बालों को ओपन ही छोड़ा है। रुबीना दिलैक की खूबसूरती देखने के बाद हर किसी का दिल धक-धक होने लगा है। लुक को और भी ज्यादा कातिलाना एक्ट्रेस की अदाएं बना रही हैं। रुबीना दिलैक ने इन तस्वीरों को शेयर कर कैप्शन में लिखा- बीहोल्ड!! सोशल मीडिया पर एक्ट्रेस की ये तस्वीरें खूब वायरल हो रही हैं । हर तस्वीरे में रुबीना कैमरे के सामने अलग-अलग पोज देती दिखाई दे रही हैं।

खास खबर

पटरी से उतरे हावड़ा-अमत लोकल ट्रेन के तीन डिब्बे

पश्चिम बंगाल के हावड़ा जिले में माजू रेलवे हॉल्ट के पास हावड़ा-अमत लोकल ट्रेन के तीन डिब्बे पटरी से उतर गए। दक्षिण पूर्व रेलवे के अधिकारी संतरागाछी से 'दुर्घटना राहत ट्रेन' के साथ मौके पर पहुंचे। किसी के हताहत होने की खबर नहीं है।

मधुमक्खियों के हमले से युवक की मौत

मध्य प्रदेश के पन्ना जिले में मधुमक्खियों के हमले में आज एक युवक की मौत हो गई जबकि इस हादसे में एक महिला सहित तीन लोग घायल हुए हैं। पुलिस सूत्रों के मुताबिक धरमपुर थाना क्षेत्र के इमलाहट गांव के शानबहादुर यादव (30 वर्ष) सुबह अपने घर से मवेशियों के लिए चारा काटने के लिए नदी की ओर गया था। इसी दौरान अचानक मधुमक्खियों के झुंड ने युवक के ऊपर हमला कर दिया। युवक जोर-जोर से चीखने चिल्लाने लगा। उसकी आवाज सुनकर आसपास के खेतों में काम कर रहे कुछ लोग भी मौके पर पहुंचे। युवक को अस्पताल ले जाया जा रहा था, लेकिन रास्ते में ही उसने दम तोड़ दिया। युवक को बचाने गए 3 लोग भी घायल बताए जा रहे हैं। जिनका इलाज अजयगढ़ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में चल रहा है।

अमरेली में भूकंप का झटका, लोग सहमे

अमरेली। गुजरात के अमरेली जिले के सावरकुंडला तालुक में बृहस्पतिवार को 3.1 तीव्रता के भूकंप का झटका महसूस किया गया । एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। जिले के अधिकारियों ने बताया कि इस भूकंप से किसी जान-माल के नुकसान की कोई सूचना नहीं है। गांधीनगर स्थित भूकंप अनुसंधान संस्थान (आईएसआर) के एक अधिकारी ने बताया कि अमरेली जिले के सावरकुंडला तालुक के मिटियाला गांव में 6.2 किलोमीटर की गहराई में यह भूकंप आया। आईएसआर ने कहा है कि इससे पहले 19 फरवरी को सौराष्ट्र क्षेत्र के अमरेली जिले के खंभा इलाके में 2.2 तीव्रता का भूकंप आया था।

रिश्वत मामले में पंजाब आप विधायक अमित रतन कोटफट्टा गिरफ्तार

विधायक खैरा बोले- जनशक्ति की जीत

चंडीगढ़। पंजाब की बठिंडा ग्रामीण सीट से आम आदमी पार्टी के विधायक अमित रतन कोटफट्टा को आज पंजाब सतर्कता ब्यूरो ने रिश्वत मामले में गिरफ्तार किया। विधायक की गिरफ्तारी उनके करीबी रशीम गर्ग को इसी मामले में पंजाब सतर्कता ब्यूरो द्वारा गिरफ्तार किए जाने के कुछ दिनों बाद हुई है। ब्यूरो के एक शीर्ष अधिकारी ने बताया कि विधायक को रिमांड लेने के लिए अदालत में पेश किया जाएगा। रशीम गर्ग को 16 फरवरी को बठिंडा में घुड़ा ग्राम प्रधान के पति द्वारा दर्ज कराई गई शिकायत के बाद गिरफ्तार किया गया था, जिसमें आरोप लगाया गया था कि आरोपी 25 लाख रुपये का सरकारी अनुदान जारी करने के बदले में 5 लाख रुपये की रिश्वत मांग रहा था। बठिंडा में सतर्कता ब्यूरो की एक टीम ने गर्ग को 04 लाख नकद के साथ पकड़ा।
कोटफट्टा ने पहले गर्ग के साथ किसी भी तरह के संबंध से इनकार किया था। उन्होंने विपक्षी दलों पर पंजाब में आम आदमी पार्टी सरकार को बदनाम करने की कोशिश करने का आरोप लगाया था। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने आज ट्वीट कर कहा, रिश्वतखोरी चाहे किसी ने भी की हो, किसी भी तरीके से की हो, बर्दाशत नहीं की जाएगी, पंजाब के लोगां का विश्वास, प्यार और उम्मीदें मेरा हौसला बुलंद रखती हैं। लोगों के टैक्स का पैसा खाने वालों परप कोई रहम या तरस नहीं, कानून सभी के लिए बराबर है।
पंजाब के बठिंडा से आम आदमी पार्टी के विधायक अमित रतन कोटफट्टा की गिरफ्तारी को जनशक्ति की जीत करार देते हुए कांग्रेस विधायक सुखपाल सिंह खैरा ने पूर्व कैबिनेट मंत्री फौजा सरारी को भी गिरफ्तार करने की मांग की है। विधायक खैरा ने कहा कि भ्रष्ट आप विधायक कोटफट्टा की गिरफ्तारी ने खुद को कटर ईमानदार बताने वाली अरविंद केजरीवाल पार्टी के भीतर की गंदगी को उजागर कर दिया है।

हम कर्नाटक को भ्रष्टाचार-मुक्त करेंगे, बनाएंगे दक्षिण भारत में नंबर-एक राज्य : अमित शाह

बेल्लारी (कर्नाटक)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कर्नाटक की जनता से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पूर्व मुख्यमंत्री बी. एस. येदियुरप्पा पर भरोसा जताने की अपील करते हुए बुधवार को कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ऐसी सरकार देगी, जो राज्य को भ्रष्टाचार-मुक्त करेगी तथा इसे पांच वर्ष में दक्षिण भारत का नंबर-एक राज्य बना देगी।
शाह ने बेल्लारी जिले में कांग्रेस का गढ़ माने जाने वाले संदूर में एक जनसभा को संबोधित करते हुए मल्लिकार्जुन खरगे नीत कांग्रेस तथा जनता दल (सेक्यूलर) पर यह कहते हुए निशाना साधा कि ये वंशवादी दल हैं, जो आम जनता के लिए कुछ भी अच्छा नहीं कर सकते। उन्होंने कहा, ह्यह्यएक तरफ प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा भारत को मजबूत कर रही है, वहीं दूसरी तरफ राहुल गांधी की अगुवाई वाली कांग्रेस 'टुकड़े-टुकड़े' गैंग से जुड़ी है। शाह ने कहा, प्रधानमंत्री मोदी और येदियुरप्पा पर एक बार भरोसा करें, और हम ऐसी सरकार देंगे, जो कर्नाटक को भ्रष्टाचार से मुक्त करेगी और इसे दक्षिण भारत में नंबर-एक राज्य बनाएगी। कर्नाटक में विधानसभा चुनाव मई में होने हैं।

पवन खेड़ा को प्लेन से उतारा जाने का मतलब 'भाजपा कांग्रेस के महाधिवेशन से डर गई' : सीएम भूपेश बघेल

कांग्रेस महाधिवेशन शुक्रवार से होगा शुरू, विपक्षी एकजुटता पर तस्वीर होगी साफ

रायपुर। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा है कि एक तरफ केंद्र सरकार राज्य में हमको परेशान कर रही है कि हम ठीक से आयोजन न कर पाएं, इसके लिए हमारे कार्यकताओं के घर में छापेमारी की गई। 3 कार्यालय में कल फिर से छापेमारी की गई थी।
कांग्रेस नेता पवन खेड़ा को दिल्ली हवाईअड्डे पर विमान में चढ़ने से रोके जाने पर छत्तीसगढ़ सीएम भूपेश बघेल बोले, दूसरी तरफ कांग्रेस के हमारे नेताओं को यहां आने से रोका जा रहा है। पवन खेड़ा को प्लेन से उतारा जाने का मतलब यह है कि भाजपा कांग्रेस के महाधिवेशन से डर गई है। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस के महाधिवेशन की तैयारियां जोरों पर है, कांग्रेस के नेताओं का स्वागत करने के लिए पूरा छत्तीसगढ़ बेसब्री से इंतजार कर रहा है। बता दें नवा रायपुर में कांग्रेस का 85वां महाधिवेशन होना है। इस दौरान सीएम भूपेश बघेल ने कहा कि कांग्रेस का इतना बड़ा महाकुंभ पहली बार छत्तीसगढ़ की धरती पर होने जा रहा है। हम सभी उत्सुक हैं।

कांग्रेस का महाधिवेशन शुक्रवार से छत्तीसगढ़ के रायपुर में शुरू होगा जिसमें राजनीति, अर्थव्यवस्था समेत कई विषयों पर प्रस्ताव पारित करने और कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) के गठन के साथ ही 2024 के लोकसभा चुनाव में व्यापक विपक्षी एकजुटता के संदर्भ में पार्टी अपना रुख स्पष्ट करेगी। पार्टी का यह 85वां महाधिवेशन 24 फरवरी से 26 फरवरी तक चलेगा। कांग्रेस का यह महाधिवेशन ऐसे समय हो रहा है कि जब आगामी लोकसभा चुनाव में करीब एक वर्ष का समय बचा है तथा विपक्षी एकजुटता के संदर्भ में लगातार चर्चा हो रही है। विपक्षी एकजुटता को लेकर चल रही चर्चा के बीच कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने 21 फरवरी को नगालैंड में कहा कि अगले साल केंद्र में कांग्रेस की अगुवाई में गठबंधन सरकार बनेगी, हालांकि इसके अगले ही दिन दिल्ली में उन्होंने कहा कि साथी दलों के साथ मिलकर सामूहिक रूप से सरकार का गठन किया जाएगा। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने कहा था कि इस महाधिवेशन में लोकसभा चुनाव के मद्देनजर विपक्षी एकजुटता के संदर्भ में चर्चा की जाएगी। एवं आगे का रुख तय किया जाएगा। उन्होंने इस बात पर जोर दिया था कि कांग्रेस की मौजूदगी के बिना देश में विपक्षी एकता की कोई भी कवायद सफल नहीं हो सकती। देश में विपक्षी एकजुटता की कवायद से जुड़ी चर्चा को पिछले दिनों बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के एक बयान से बल मिला था। नीतीश कुमार ने गत 18 फरवरी को कहा था कि कांग्रेस को 'भारत जोड़ो यात्रा' से बने माहौल का लाभ उठाते हुए भाजपा विरोधी दलों को एकजुट कर गठबंधन बनाना चाहिए और अगर ऐसा हो गया तो 2024 के लोकसभा चुनाव में अभी 300 से ज्यादा सीट वाली भारतीय जनता पार्टी को 100 से भी कम सीट पर समेटा जा सकता है। देश के मुख्य विपक्षी दल के इस अधिवेशन में राजनीति, अर्थव्यवस्था, अंतरराष्ट्रीय मामले, कृषि एवं किसान, सामाजिक न्याय और युवा एवं शिक्षा से जुड़े विषयों पर प्रस्ताव पारित किए जाएंगे। इसके साथ ही, सीडब्ल्यूसी के गठन की प्रक्रिया भी शुरू होगी।

मायने यह रखता है कि किसे प्रधानमंत्री के रूप में वापसी करने से रोका जाए : शत्रुघ्न सिन्हा

मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को विश्वसनीय नेता बताया

पटना। पूर्व केंद्रीय मंत्री और तृणमूल कांग्रेस के सांसद शत्रुघ्न सिन्हा ने कहा कि यह चिंता करना व्यर्थ है कि विपक्ष का प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार कौन होगा बल्कि यह स्पष्टता मायने रखती है कि किसे प्रधानमंत्री के रूप में वापसी करने से रोकना चाहिए। अभिनेता से नेता बने सिन्हा ने अपनी पार्टी प्रमुख और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को विश्वसनीय नेता बताया और दावा किया कि अगले साल लोकसभा चुनाव में वह पासा पलटने वाली नेता साबित होंगी। बिहारी बाब के नाम से मशहूर सिन्हा ने कहा, ऐसा लगता है कि मेरे मित्र, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अच्छे दिन खत्म हो गए हैं। उन्होंने चार साल पहले भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) छोड़ दी थी। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने बुधवार रात को पत्रकारों से कहा, हम लंबे समय से यह बात सुन रहे हैं कि कौन नेता होगा। नेहरू के वक्त तक भी लोग यही सवाल पूछते थे। विपक्ष के लिए इस बात की चिंता करना व्यर्थ है। किसे

प्रधानमंत्री के रूप में लौटने से रोका जाए, इस संबंध में स्पष्टता होना महत्वपूर्ण है। उन्होंने राहुल गांधी को काबिल नेता बताया लेकिन वह इस सवाल से बचते नजर आए कि पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष विपक्षी गठबंधन का नेतृत्व कर सकते हैं या नहीं। टीएमसी नेता ने यह भी कहा कि वह बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और विपक्षी एकता के उनके प्रयासों का काफी सम्मान करते हैं लेकिन उन्होंने खुद को प्रधानमंत्री पद की दौड़ से बाहर कर लिया है। भविष्य में तेजस्वी यादव के बिहार का मुख्यमंत्री बनने की चर्चा के बारे में पूछे जाने पर शॉटगन के नाम से मशहूर सिन्हा ने राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के युवा नेता का समर्थन किया।

आज भारत की छवि ऐसे देश की है जो राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार : एस जयशंकर

भारत एक ऐसा देश है जिसे न तो बाहर धकेला जा सकता है और न ही वह एक हद से अधिक सीमा को लांघने देगा

पुणे। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने बृहस्पतिवार को कहा कि आज भारत की छवि ऐसे देश की बन गई है जो अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा के संरक्षण के लिये किसी भी हद तक जाने को तैयार हो। विदेश मंत्री ने कहा कि हर देश की अपनी चुनौतियां हैं और कोई चुनौती राष्ट्रीय सुरक्षा से समान महत्व वाली नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि भारत एक ऐसा देश है जिसे न तो बाहर धकेला जा सकता है और न ही वह एक हद से अधिक सीमा को लांघने देगा। सिम्बायोसिस इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित कार्यक्रम ह्यफेस्टिवल ऑफ थिंकर्स को संबोधित करते हुए जयशंकर ने कहा, पिछले कुछ वर्षों में हमारी पश्चिमी सीमा पर लंबे समय से परीक्षा ली जा रही है। मैं समझता हूं कि चीजें इस बार थोड़ी अलग हैं और सभी लोग इस बात से सहमत होंगे। कुछ चीजें वर्ष 2016 और 2019 के बीच हुईं। उन्होंने कहा, हमें उत्तरी सीमा पर भी परखा जा रहा है और भारत किस प्रकार से इस परीक्षा से बाहर आयेगा, यह मुकाबला करने की हमारी ताकत को प्रदर्शित करेगा। विदेश मंत्री ने कहा, आज हमारी छवि एक ऐसे देश की है जो अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा के संरक्षण के लिये सबकुछ करने को तैयार है। यह (भारत) काफी संयम रखने वाला देश है और यह ऐसा देश नहीं है जो दूसरों से लड़ता रहता है लेकिन यह ऐसा देश भी नहीं है जिसे बाहर धकेला जा सकता है। यह ऐसा देश है जो एक हद से अधिक सीमा को किसी को लांघने नहीं देगा।

उन्होंने कहा कि चूंकि यह ध्रुवों में विभाजित दुनिया है, ऐसे में देश आपको प्रभावित करने का प्रयास करेंगे, अपना आग्रह रखेंगे, कई बार कड़े शब्दों का प्रयोग करेंगे और ऐसे में आप किस प्रकार से अपने हितों को रखते हैं, ऐसे देशों के हितों को रखते हैं जिनकी ऐसी क्षमता नहीं है, जो आपकी है। यह आज देखा जा सकता है। यूक्रेन संघर्ष का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा, इस संघर्ष के कारण जिस प्रकार के दबाव आए, ऐसे क्षण भी आए जब हमारे स्वतंत्र भाव और विश्वास को परखने का प्रयास किया गया। उन्होंने कहा, हमें एक स्वतंत्र और दूसरे के अधिकारों के लिये खड़े होने वाले के रूप में देखा जा रहा है और इसके साथ ही हम वैश्विक दक्षिण की आवाज भी बन रहे हैं।

ईडी कार्यालय पहुंचे मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के पीए, शराब घोटाला मामले में होगी पूछताछ

केजरीवाल बोले आबकारी नीति में घोटाले की बात सरासर झूठ

नई दिल्ली। दिल्ली शराब घोटाला मामले में प्रवर्तन निदेशालय के समन के बाद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के पीए ईडी कार्यालय पहुंच गए हैं। ईडी ने एक्साइज घोटाले की चल रही जांच के सिलसिले में उन्हें तलब किया है। इससे पहले सीबीआई ने डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया को इस मामले में समन किया है। शराब घोटाला मामले में दिल्ली के उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को भी सीबीआई ने तलब किया था। सिसोदिया ने इस समन पर केंद्र सरकार पर हमला बोला था। उन्होंने कहा कि सरकार ने मेरे खिलाफ ईडी, सीबीआई समेत कई एजेंसियां लगा रखी है, कई बार छापे भी मारे जा चुके हैं, लेकिन अब तक कोई सबूत नहीं मिला है। सिसोदिया ने कहा कि मैंने जांच में सहयोग किया है और आगे भी जारी रखूंगा। सीएम अरविंद केजरीवाल ने आबकारी नीति में घोटाले की बात को सरासर झूठ बताया है।

उन्होंने कहा कि इस नीति में कोई भी घोटाला नहीं हुआ है और यही नीति पंजाब में भी लागू है जहां 40 फीसद से भी ज्यादा के राजस्व में बढ़ोतरी हुई है। दिल्ली सरकार द्वारा 17 नवंबर 2021 को नई शराब नीति लागू की गई थी। इस नीति के तहत कई नई दुकानों को खोलने की इजाजत दी गई थी और कुल 849 दुकानें खुलनी थी। इस नीति में सभी शराब दुकानों को प्राइवेट कर दिया गया था। भाजपा ने इस नीति के जारी होने के बाद आरोप लगाया है कि इससे जनता और सरकार दोनों को नुकसान हो रहा था। जिसके बाद ईडी और सीबीआई ने अलग-अलग मामले दर्ज किए हैं।

पुलिस की वर्दी में हमला कर सकते हैं फिदायीन छह स्तरीय किया गया मंदिर का सुरक्षा घेरा

परिसर को 'नो-फ्लाइंग जोन' घोषित करने की पूरी तैयारी हो चुकी, नेपाल के रास्ते हमले की योजना बना रहे आतंकी

अयोध्या। उत्तर प्रदेश के अयोध्या में 70 एकड़ जमीन पर बनाए जा रहे राम मंदिर परिसर की सुरक्षा को अभेद बनाया जा रहा है। आतंकियों द्वारा हमला करने की धमकी आती रहती है। मंदिर परिसर को 'नो-फ्लाइंग जोन' घोषित करने की पूरी तैयारी हो चुकी है। इसके बाद ड्रोन, हवाई जहाज या चौपर, कोई भी यहां से नहीं गुजर सकेगा। ऐसे अलर्ट मिल रहे हैं कि अफगानिस्तान और पाकिस्तान के आतंकी समूह नेपाल सीमा के जरिए मंदिर पर हमला करने की रणनीति बनाते रहते हैं। अब एक नया खतरा फिदायीन अटैक का है। मंदिर में 'पुलिस और फौज' की वर्दी में घुसकर हमला हो सकता है। ऐसे हमले में आतंकी पहले धमाका करते हैं और

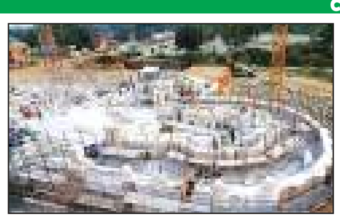

उसके बाद फायरिंग होती है। इस तरह के संभावित हमलों के मद्देनजर मंदिर परिसर की सुरक्षा को और ज्यादा पुख्ता बनाया जा रहा है। जिस तरह से मंदिर की सुरक्षा में सीआरपीएफ, स्थानीय पुलिस और पीएसी तैनात है, उसी तर्ज पर इंटेलिजेंस इनपुट जुटाने के लिए अलग से एजेंसियों को जिम्मेदारी सौंपी गई है। अब मंदिर का सुरक्षा घेरा 6 स्तरीय हो गया है। सटीक खुफिया जानकारी जुटाने के लिए आईबी, एलआईयू 'खुफिया संपर्क इकाई' और सीआरपीएफ की इंटेलिजेंस विंग, को विशेष टॉस्क दिया गया है।

तीन जोन में हो रही है मंदिर की सुरक्षा

मंदिर परिसर की सुरक्षा को तीन भागों में विभाजित किया गया है। रेड जोन में मंदिर परिसर के अंदर वाला हिस्सा शामिल है। येलो जोन में आसपास के वे सभी रास्ते शामिल किए गए हैं, जो मंदिर परिसर की तरफ जाते हैं। ग्रीन जोन का दायरा इससे कुछ ज्यादा होता है। यूपी पुलिस, पीएसी और सीआरपीएफ की एक बटालियन, 24 घंटे मंदिर परिसर की चौकसी करती है। ये बल सभी तरह के हमलों का जवाब देने में पारंगत हैं। अगर कोई आतंकी हमला होता है या विस्फोट के जरिए कोई व्यक्ति/समूह, मंदिर को नुकसान पहुंचाने का प्रयास करता है, तो उसे पहले ही नेस्तानाबूद कर दिया जाता है। जो इनपुट मिले हैं, उनमें मंदिर परिसर को नुकसान पहुंचाने के लिए आसपास कोई दंगा कराया जा सकता है। बम फेंकने व सशस्त्र हमले से निपटने का भी पूरा इंतजाम है। बमरोधी दस्ता हर समय मंदिर में तैनात रहता है।

मंदिर को नुकसान पहुंचाने के लिए 'डार्क नेट' की मदद

सूत्रों का कहना है कि राम मंदिर तक पहुंचने के मार्ग भी सुरक्षा के हिसाब से तय किए गए हैं। एक स्पेशल मार्ग है, जहां पर तीन जगह चेकिंग होती है। ऐसा नहीं है कि कोई व्यक्ति किसी भी मार्ग से मुख्य मंदिर तक पहुंच सकता है। उसके लिए एक मार्ग निश्चित किया गया है। मंदिर में कुछ भी लाना वर्जित है। कुछ समय पहले ही एक व्यक्ति ने डार्क नेट का इस्तेमाल कर मंदिर को उड़ाने की धमकी दी थी। पुलिस की तत्परता से वह व्यक्ति पकड़ा गया। इसके बाद सोशल मीडिया पर भी सुरक्षा एजेंसियों की नजर है। डार्क नेट और इंटरनेट के जरिए अपराध को अंजाम देने वाले दूसरे तौर तरीकों पर भी नजर रखी जा रही है। मंदिर की सुरक्षा के लिए आसपास के इलाके में भी गहन जांच पड़ताल होती है। स्थानीय निवासियों के यहां पर कौन आ रहा है, ये सब बताना पड़ता है। इसका एक रिकॉर्ड तैयार किया जाता है। किसी व्यक्ति के यहां कोई समारोह है तो बाकायदा उस पर इंटेलिजेंस इकाई की नजर रहती है। **एजेंसी**

सतह से हवा में मार करने वाली मध्यम दूरी की मिसाइल से लैस हुई पूर्वी कमान, डीआरडीओ ने किया है विकसित

नई दिल्ली। सेना के लिए बनाई गई मध्यम रेंज की सतह से हवा में मार करने वाली पहली मिसाइल रेजिमेंट को सेना की पूर्वी कमान में तैनात किया गया है। पूर्वी कमान के प्रवक्ता (गुवाहाटी) ने इसके बारे में जानकारी दी। प्रवक्ता ने बताया कि रेजिमेंट को डीआरडीओ द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित एमआरएसएएम वेपन सिस्टम से लैस किया गया है। गौरतलब है कि दुश्मनों के छक्के छुडाने वाली मध्यम रेंज की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल को डीआरडीओ ने विकसित किया है। बीते साल 27 मार्च को ओडिशा के बालासोर स्थित इंटीग्रेटेड टेस्ट रेंज से इसका सफल परीक्षण किया गया था। परीक्षण के दौरान मिसाइल ने पूरी सटीकता के साथ टारगेट को कुछ ही मिनट में ध्वस्त कर दिया था। सूत्रों का कहना है कि एमआरएसएएम की रेंज आधा किलोमीटर से लेकर 100 किलोमीटर तक हैं। एक बार छोड़े जाने के बाद यह आसमान में सीधे 16 किलोमीटर तक के लक्ष्य को गिरा सकती है। पिछले साल दिसंबर में इसका पहला परीक्षण किया गया था। यह बैलिस्टिक मिसाइलों, लड़ाकू जेट विमानों, विमानों, ड्रोन, निगरानी विमानों और एयरबोर्न वार्निंग एंड कंट्रोल सिस्टम विमानों को मार गिराने में सक्षम है। एमआरएसएएम सैन्य हथियार प्रणाली में मल्टीफंक्शन राडार, मोबाइल लांचर प्रणाली और अन्य व्हीकल शामिल है। जब इस मिसाइल का परीक्षण किया गया था तब एहतियात बरतते हुए बालासोर जिला प्रशासन ने आईटीआर के नजदीक स्थित तीन गांवों से 7000 लोगों को अस्थायी तौर पर सुरक्षित जगहों पर शिफ्ट किया था।

सेंसेक्स
92.7 अंक गिरकर 59,652.28 अंक पर

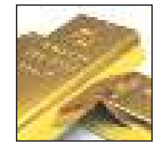

सोना
56,189 रुपये प्रति 10 ग्राम पर खुदरा बिक्री कर रहा

फेडरल रिजर्व के मुद्रास्फीति को काबू में करने के लिए ब्याज दरें बढ़ाने की आशंका से गिरा बाजार

सेंसेक्स 92 अंक टूटा, निफ्टी में 34 अंक की गिरावट, रुपया 11 पैसे चढ़ा

नई दिल्ली। अमेरिका के केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व के मुद्रास्फीति को काबू में करने के लिए ब्याज दरें बढ़ाने की आशंका से बृहस्पतिवार को शुरूआती कारोबार में प्रमुख शेयर सूचकांकों में गिरावट आई। विदेशी पूंजी की निकासी और अमेरिकी बाजार में मिलेजुले रूख से भी निवेशकों का धारणा प्रभावित हुई। इस दौरान बीएसई सेंसेक्स 92.7 अंक गिरकर 59,652.28 अंक पर आ गया। एनएसई निफ्टी 34.5 अंक टूटकर 17,519.80 पर था। इसके बाद दोनों ही सूचकांकों में और गिरावट आई और सेंसेक्स 279.27 अंक गिरकर 59,465.71 अंक पर आ गया जबकि निफ्टी 60.80 अंक टूटकर 17,493.50 अंक पर था। सेंसेक्स में एशियन पेंट्स, बजाज फिनसर्व, इंडसइंड बैंक, बजाज फाइनेंस, टाइटन, एचडीएफसी बैंक, इंफोसिस, एचडीएफसी, रिलायंस इंडस्ट्रीज और कोटक महिंद्रा बैंक गिरने वाले प्रमुख शेयर थे। दूसरी ओर, एचसीएल टेक्नोलॉजीज, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेस, टेक महिंद्रा, टाटा स्टील, अल्ट्राटेक सीमेंट और सन फार्मा में तेजी रही। अन्य एशियाई बाजारों में दक्षिण कोरिया, हांगकांग और चीन लाभ के साथ कारोबार कर रहे थे। अमेरिकी बाजार बुधवार को मिलजुले रूख के साथ बंद हुए थे। इससे पहले बुधवार को तीस शेयरों पर आधारित सेंसेक्स 927.74 अंक यानी 1.53 प्रतिशत की गिरावट के साथ 59,744.98 अंक पर बंद हुआ था। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 272.40 अंक यानी 1.53 प्रतिशत की गिरावट के साथ चार महीने के निचले स्तर 17,554.30 अंक पर बंद हुआ था।

अंतरराष्ट्रीय तेल बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड 0.45 प्रतिशत चढ़कर 80.96 डॉलर प्रति बैरल के भाव पर आ गया।

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) का 50 शेयरों पर आधारित संवेदी सूचकांक सेंसेक्स सुबह 9.49 बजे 80 (0.45%) अंकों की गिरावट के साथ 17,500 के स्तर से नीचे जबकि एसएंडपी बीएसई सेंसेक्स 322 अंकों या 0.54% फीसदी की गिरावट के साथ 59,422.14 अंकों के लेवल पर कारोबार करता दिखा। सेंसेक्स की कंपनियों में एशियन पेंट्स, बजाज फाइनेंस, एनटीपीसी, इंडसइंड बैंक, टाइटन और रिलायंस के शेयर कटौती के साथ खुले। इस बीच एचसीएल टेक, टाटा स्टील, टीसीएस, एलएंडटी और विप्रो बढ़त के साथ खुले। अदाणी समूह के शेयरों में बिकवाली का दबाव बना रहा और आठ में से 10 शेयर लाल निशान पर कारोबार करते दिखे। सेक्टरवार देखें तो निफ्टी फाइनेंशियल सर्विसेज में 0.27% और निफ्टी बैंक में 0.21% की गिरावट आई, जबकि निफ्टी आईटी और निफ्टी मेटल बढ़त के साथ खुले। निफ्टी स्मॉलकैप में 0.14% की तेजी आई, जबकि निफ्टी मिडकैप में 0.40% की गिरावट दिख रही है।

आम बजट में नौकरियों पर पर्याप्त जोर नहीं: डी सुब्बाराव

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के पूर्व गवर्नर डी सुब्बाराव ने बृहस्पतिवार को कहा कि 2023-24 के आम बजट में नौकरियों पर 'पर्याप्त जोर' नहीं दिया गया। उन्होंने कहा कि बजट बेरोजगारी की समस्या से सीधे निपटने में विफल रहा और माना गया कि वृद्धि से अपने आप रोजगार पैदा हो जाएंगे। सुब्बाराव ने कहा कि कोविड महामारी से पहले भी बेरोजगारी की स्थिति काफी खराब थी और महामारी के कारण यह खतरनाक हो गई है। उन्होंने एक न्यूज एजेंसी से बातचीत में कहा, मैं निराश था कि (बजट 2023-24 में) नौकरियों पर पर्याप्त जोर नहीं दिया गया... केवल वृद्धि से काम नहीं चलेगा, हमें रोजगार आधारित वृद्धि की जरूरत है। आरबीआई के पूर्व गवर्नर से पूछा गया था कि बजट से उनकी सबसे बड़ी निराशा क्या है? सुब्बाराव के अनुसार लगभग दस लाख लोग हर महीने श्रम बल में शामिल होते हैं और भारत इसकी आधी नौकरियां भी पैदा नहीं कर पाता है। उन्होंने कहा, इसके चलते बेरोजगारी की समस्या न केवल बढ़ रही है, बल्कि एक संकट बन रही है।" उन्होंने कहा कि बेरोजगारी

जैसी बड़ी और जटिल समस्या का कोई एक या सरल समाधान नहीं है। उन्होंने , लेकिन मुझे निराशा हुई कि बजट समस्या से निपटने में विफल रहा। सिर्फ यह भरोसा किया गया कि वृद्धि से रोजगार पैदा होंगे।'सुब्बाराव ने कहा कि भारत केवल तभी जनसांख्यिकीय लाभांश का फायदा उठा सकेगा, जब "हम बढ़ती श्रम शक्ति के लिए उत्पादक रोजगार खोजने में सक्षम होंगे। उन्होंने कहा कि बजट की सबसे बड़ी बात यह है कि सरकार ने वृद्धि पर जोर दिया है और राजकोषी? उत्तरदायित्व को लेकर प्रतिबद्धता जताई है, जबकि बजट से पहले आम धारणा यह थी कि वित्त मंत्री चुनावी साल में लोकलुभावन बजट पेश करेंगी। यह पूछे जाने पर कि क्या बजट दस्तावेज में दिए गए अनुमानों के लिए कोई जोखिम है, उन्होंने कहा, "राजस्व और व्यय, दोनों पक्षों पर जोखिम हैं।

जेट एयरवेज के संस्थापक नरेश गोयल को राहत, बंबई हाईकोर्ट ने ईडी की प्राथमिकी रद्द की

मुंबई। बंबई उच्च न्यायालय ने कथित धन शोधन मामले में जेट एयरवेज के संस्थापक नरेश गोयल और उनकी पत्नी अनिता गोयल के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की ओर से दर्ज प्रवर्तन मामला सूचना रिपोर्ट (ईसीआईआर) गुरुवार को रद्द कर दी। केंद्रीय जांच एजेंसी की ईसीआईआर अकबर ट्रैवल्स द्वारा की गयी एक शिकायत पर कथित धोखाधड़ी और जालसाजी के लिए गोयल दंपति के खिलाफ पुलिस द्वारा दर्ज प्राथमिकी पर आधारित थी। दोनों पक्षों को सुनने के बाद न्यायमूर्ति रेवती मोहिते डेरे और न्यायमूर्ति पृथ्वीराज चह्वाण की खंडपीठ ने 20 फरवरी 2020 को दर्ज ईसीआईआर और गोयल दंपति के खिलाफ सभी कार्यवाही गैरकानूनी और कानून के विपरीत होने के आधार पर रद्द कर दी। आम तौर पर ईसीआईआर एक तरह से प्राथमिकी के समान होती है जो पुलिस, केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो और कोई अन्य एजेंसी आपराधिक मामले के आधार पर दर्ज करती है। इससे पहले, गोयल दंपति के वकील रवि कदम और आबाद पोंडा ने दलील दी थी कि ईसीआईआर 2018 में मुंबई पुलिस में दर्ज एक शिकायत के आधार पर दर्ज की गयी।

भारत और मध्य पूर्व के बीच सीमा पार भुगतान को बढ़ावा देने के लिए एचडीएफसी बैंक एवं लुलु एक्सचेंज में साझेदारी

अरविंद वोहरा, ग्रुप हेड-रिटेल ब्रांच बैंकिंग, एचडीएफसी बैंक ने कहा हमारी साझेदारी से एक-दूसरे की ताकत पर बढ़ेगी

नई दिल्ली। भारत के सबसे बड़े निजी क्षेत्र के बैंक - एचडीएफसी बैंक और संयुक्त अरब अमीरात स्थित वित्तीय सेवा कंपनी - लुलु एक्सचेंज ने भारत और खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) क्षेत्र के बीच सीमा पार भुगतान को मजबूत करने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। अपने पहले चरण में, साझेदारी 'RemitNow2India' नामक एक डिजिटल इनवर्ड रेमिटेंस सेवा शुरू करने के लिए लुलु एक्सचेंज की विशेषज्ञता और नियामक ढांचे पर आधारित होगी, जो यूएई के निवासी व्यक्तियों को एचडीएफसी बैंक के डिजिटल बैंकिंग चैनल आईएमपीएस और एनईएफटी के माध्यम से भारत में किसी भी बैंक खाते में पैसा भेजने की अनुमति देगा। साझेदारी भारत में दो संस्थाओं के बीच मौजूदा संबंधों को भी मजबूत करेगी, जहां लुलु फाइनेंशियल ग्रुप लुलु फॉरेक्स और एनबीएफसी डिवीजन लुलु फिनसर्व का संचालन करता है। अरविंद वोहरा, ग्रुप हेड-

रिटेल ब्रांच बैंकिंग, एचडीएफसी बैंक ने कहा हमारी साझेदारी से एक-दूसरे की ताकत पर बढेगी । एचडीएफसी बैंक संभवतः लुलु एक्सचेंज के कर्मचारियों, ग्राहकों और अन्य हितधारकों से भुगतान प्राप्त करने एवं लुलु एक्सचेंज जैसे एक विशाल नेटवर्क के साथ एक विश्वसनीय नाम का लाभ उठा सकता है। एक बैंक के रूप में, हम यूएई में लोगों को विशेष रूप से भारतीय समुदाय को देश में आसानी से और सहज तरीके से पैसा भेजने में मदद कर सकते हैं। लुलु फाइनेंशियल ग्रुप के एमडी अदीब अहमद ने कहा, हम एचडीएफसी बैंक के साथ साझेदारी करके और उनके डिजिटल बैंकिंग समाधानों पर हमारे रेमिटेंस-एज-ए-सर्विस प्लेटफॉर्म को सक्षम करने के लिए खुश हैं। यूएई-भारत भुगतान कॉरिडोर दुनिया में सबसे बड़ा है, और यह साझेदारी संयुक्त अरब अमीरात में रहने वाले हजारों भारतीय प्रवासियों के लिए धन हस्तांतरण को आसान बनाने के लिए मौजूदा क्षमताओं का निर्माण करेगी, जबकि जीसीसी के अन्य हिस्सों में इस सेवा के अंतिम एकीकरण की नींव स्थापित करेगी, जहां हमारी उपस्थिति है। एचडीएफसी बैंक और लुलु एक्सचेंज दोनों ऑनलाइन और ऑफलाइन पहलों की एक श्रृंखला के माध्यम से इस साझेदारी का विस्तार करने के लिए एक-दूसरे की सद्भावना, विश्वास, नियामक तकनीक और सर्वोत्तम सेवा नेटवर्क का लाभ उठाएंगे।

'रूस की मिलिट्री इंडस्ट्री को कमजोर करना हमारा उद्देश्य', बेंगलुरु में बोलीं अमेरिका की वित्त मंत्री

नई दिल्ली। अमेरिका की वित्त मंत्री जैनेट येलेन भारत दौरे पर हैं। गुरुवार को उन्होंने भारतीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के साथ बेंगलुरु में मुलाकात की। इस मुलाकात के बाद अमेरिकी वित्त मंत्री ने कहा कि हमारे बीच यूक्रेन के मुद्दे पर अहम बातचीत हुई। जैसा कि राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा है कि हम इस लड़ाई में यूक्रेन के साथ खड़े हैं। हम अपने सहयोगियों की मदद के लिए उनकी सराहना करते हैं। यूक्रेन को लगातार मदद पहुंचाने के संबंध में हमारी बातचीत हुई। जैनेट येलेन ने कहा कि हमारा उद्देश्य है कि रूस की मिलिट्री इंडस्ट्री को कमजोर किया जाए, जिससे उनका राजस्व घटे और वह लड़ाई को फंड ना कर सके। रूस की सेना अपने 9 हजार से ज्यादा सैन्य उपकरणों को बदलने के लिए संघर्ष कर रही है। येलेन ने कहा कि आज वैश्विक अर्थव्यवस्था बेहतर स्थिति में है। आईएमएफ ने 2023 में वैश्विक अर्थव्यवस्था के 3.2 फीसदी की रफ्तार से बढ़ने का अनुमान लगाया है।

अदाणी को श्रीलंका में मिला बड़ा प्रोजेक्ट, निवेशकों के कमजोर होते भरोसे को संभालने में मिलेगी मदद

नई दिल्ली। अदाणी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड कंपनी श्रीलंका में हरित ऊर्जा क्षेत्र में बड़ा कॉन्ट्रैक्ट हासिल करने में सफल हुई है। श्रीलंका के बोर्ड ऑफ इन्वेस्टमेंट ने कंपनी को मन्नार और पूनेरिन में दो वायु ऊर्जा संयंत्र स्थापित करने को लेकर स्वीकृति दे दी है। 442 मिलियन डॉलर के इस प्रोजेक्ट को कंपनी को अगले दो साल में पूरा करना है। प्रोजेक्ट से 500 मेगावाट बिजली का निर्माण होगा, जिसे 2025 तक श्रीलंका के नेशनल ग्रिड से जोड़ा जाना है। दावा किया गया है कि इस कॉन्ट्रैक्ट के बाद श्रीलंका में लगभग दो हजार रोजगार के अवसरों का भी सृजन होगा। इस बड़े कॉन्ट्रैक्ट को हासिल करने से कंपनी को अपने निवेशकों का भरोसा हासिल करने में कितनी मदद मिलेगी, यह देखने वाली बात होगी। हिंडनबर्ग रिपोर्ट आने के बाद मचे हंगामे के बीच भारत में विपक्षी दलों ने आरोप लगाया था कि केंद्र सरकार के दबाव के कारण अदाणी समूह श्रीलंका सहित कई दूसरे

देशों में बड़े कॉन्ट्रैक्ट हासिल करने में सफल रही। इन आरोपों के बाद भी अदाणी समूह को श्रीलंका में बड़े प्रोजेक्ट का मिलना बताता है कि कंपनी अपनी राह पर आगे बढ़ रही है। बुधवार को ही श्रीलंका के ऊर्जा मंत्री कंचना विजेशेकरा ने अदाणी समूह के साथ ऊर्जा सेक्टर में निवेश को लेकर चर्चा करने की बात कही थी। श्रीलंका और कंपनी के बीच इस प्रोजेक्ट को लेकर लंबे समय से चर्चा चल रही थी। अब इसे अंतिम रूप दे दिया गया है। कंपनी पहले ही कोलंबो में एक ऊर्जा संयंत्र संचालित कर रही है। अदाणी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड को यह कॉन्ट्रैक्ट ऐसे समय में हासिल हुआ है, जब उसके शेयरों में रिकॉर्ड गिरावट आ रही है।

सेबी ने रेटिंग एजेंसियों से अदाणी समूह के कर्ज का मांगा ब्योरा, अब तक 78% टूटे शेयर

नई दिल्ली। हिंडनबर्ग रिसर्च के आरोपों के बाद से अदाणी समूह की मुश्किलें लगातार बढ़ती जा रही हैं। अब बाजार नियामक सेबी ने क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों से अदाणी समूह की कंपनियों की ओर से लिए गए लोकल कर्ज और सिक्योरिटीज की रेटिंग्स की जानकारी मांगी है। उधर, 25 जनवरी, 2023 से अब तक अदाणी समूह के शेयरों में 78 फीसदी तक की गिरावट दर्ज की गई है।

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने रेटिंग एजेंसियों को सभी आउटस्टैंडिंग रेटिंग्स, अदाणी समूह के अधिकारियों के साथ कोई संभावित चर्चा और अपना नजरिया साझा करने का निर्देश दिया है। मामले से जुड़े एक सूत्र ने बताया कि बाजार नियामक शायद यह पता लगाने की कोशिश कर रहा है कि अदाणी समूह की कई कंपनियों के शेयरों में तेज गिरावट की वजह से उसकी पूंजी की स्थिति और कर्ज भुगतान क्षमता पर कोई असर पड़ेगा या नहीं।

पीएम मोदी ने निवेशकों से कहा- हरित ऊर्जा क्षेत्र में भारत की क्षमता 'सोने की खदान' से कम नहीं

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हरित ऊर्जा क्षेत्र में निवेश आमंत्रित करते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि नवीकरणीय ऊर्जा के मामले में देश की जो क्षमता है वह सोने की खदान से कम नहीं है। आम बजट 2023-24 में हरित वृद्धि को लेकर की गईं विभिन्न घोषणाओं के संबंध में एक वेबिनार को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, भारत हरित ऊर्जा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। मैं सभी हितधारकों को भारत में निवेश के लिए आमंत्रित करता हूं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत में सौर, पवन ऊर्जा और बायोगैस जैसी नवीकरणीय ऊर्जा की संभावनाएं किसी सोने की खदान से कम नहीं हैं। उन्होंने कहा कि सरकार का पूरा ध्यान बायो-ईंधन पर केंद्रित है और निवेशकों के लिए अपार अवसर खोले जाएंगे। उन्होंने कहा कि भारत ने दस फीसदी एथनॉल मिश्रण का लक्ष्य निर्धारित तारीख से पांच महीने पहले ही हासिल कर लिया है और यही नहीं, 40 फीसदी गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता का लक्ष्य तय

तारीख से नौ साल पहले ही प्राप्त कर लिया गया है। मोदी ने कहा कि वर्ष 2014 के बाद से जितने भी बजट आए उनमें न केवल वर्तमान चुनौतियों को ध्यान में रखा गया, बल्कि नए दौर के सुधारों को भी आगे बढ़ाया गया है। उन्होंने कहा कि भारत प्रतिवर्ष 50 लाख टन हरित हाइड्रोजन के उत्पादन का लक्ष्य लेकर चल रहा है और राष्ट्रीय हाइड्रोजन मिशन के तहत निजी क्षेत्र को 19,000 करोड़ रुपये का प्रोत्साहन दिया गया है। आम बजट में वाहनों को कबाड़ में बदलने के लिए 3,000 करोड़ रुपये का प्रावधान किए जाने और 15 वर्ष से भी पुराने करीब तीन लाख सरकारी वाहनों को कबाड़ में बदलने के निर्णय का भी उन्होंने इस वेबिनार में जिक्र किया।

खुले बाजार में गेहूं की बिक्री से थोक कीमतें हो रहीं नरम खुदरा मूल्य सप्ताह के भीतर कम होने की संभावना

नई दिल्ली। भारतीय खाद्य निगम के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक अशोक के मीणा ने बृहस्पतिवार को कहा कि खुले बाजार में थोक उपभोक्ताओं को गेहूं की चल रही बिक्री से थोक कीमतों में गिरावट शुरू हो गई है और उम्मीद है कि एक सप्ताह में खुदरा कीमतों पर भी असर दिखाई देगा। ई-नीलामी के पहले तीन दौर में, भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) ने आटा मिल जैसे थोक उपभोक्ताओं को 18.05 लाख टन गेहूं बेचा है। जिसमें से 11 लाख टन बोलीदाताओं ने पहले ही उठा लिया है। एफसीआई को खुले बाजार बिक्री योजना (ओएमएसएस) के तहत थोक उपभोक्ताओं को 15 मार्च तक साप्ताहिक ई-नीलामी के जरिए कुल 45 लाख टन गेहूं बेचने को कहा गया है, ताकि गेहूं और गेहूं आटे की बढ़ती कीमतों पर लगाम लगाई जा सके। अगले दौर की ई-नीलामी दो मार्च को होगी।

बिक्री के लिए 11 लाख टन से थोड़ा अधिक गेहूं की पेशकश की जाएगी। मीणा ने संवाददाताओं से कहा, ओएमएसएस की प्रतिक्रिया बहुत अच्छी रही है। अब तक लगभग 11 लाख टन गेहूं का उठाव हो चुका है। इसका असर थोक कीमतों में पहले से ही दिखाई दे रहा है। यह कम होना शुरू हो गया है ... खुदरा कीमत पर असर आने में समय लगेगा। उम्मीद है कि इस सप्ताह आप खुदरा कीमतों में गिरावट देख पाएंगे। उन्होंने कहा कि गेहूं की थोक कीमतों में गिरावट आई है और अब ज्यादातर मंडियों में यह 2,200-2,300 रुपये प्रति क्विंटल के आसपास है। उन्होंने कहा कि दक्षिणी और उत्तर पूर्वी क्षेत्र में खरीदारों द्वारा अधिकतम मात्रा में खरीदारी की गई है। चूंकि बड़ी संख्या में खरीदारों ने कम मात्रा में गेहूं खरीदा है, इसलिए गेहूं की उपलब्धता में सुधार होगा। उन्होंने कहा, हमें उम्मीद है कि इससे पूरे देश में कीमतें सामान्य हो जाएंगी। उन्होंने कहा कि ओएमएसएस गेहूं की जमाखोरी का कोई सवाल ही नहीं है। इसका कारण ई-नीलामी के पहले तीन दौर में 1,200 से अधिक खरीदारों ने भाग लिया था। अधिकतम बोली लगाने वाले छोटे थोक खरीदार थे। उन्होंने 100-500 टन के लिए बोली लगाई। मीणा ने कहा, ह्यह्यइसके अलावा, छोटे थोक खरीदार जमाखोरी नहीं कर सकते क्योंकि उनके पास एफसीआई की तरह संरक्षित करने की क्षमता नहीं है। उन्हें तुरंत प्रसंस्करण करना होगा और निपटान करना होगा।

ग्रीव्स इलेक्ट्रिक मोबिलिटी ने एक नया स्पोर्टी और युवा एंट्री-लेवल का इलेक्ट्रिक टू-व्हील स्कूटर एंपियर जील ईएक्स पेश किया

नई दिल्ली। ग्रीव्स कॉटन लिमिटेड के ई-मोबिलिटी बिजनेस, ग्रीव्स इलेक्ट्रिक मोबिलिटी प्राईवेट लिमिटेड (जीईएमपीएल) ने एक एंट्री-लेवल, स्पोर्टी ई-स्कूटर, एंपियर जील ईएक्स पेश किया है। यह युवाओं को शहर में राईड का आरामदायक और सुगम अनुभव प्रदान करने के लिए डिजाईन किया गया है। नया जील ईएक्स मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश, और झारखंड में 69,900 रु.$ (प्रभावी मूल्य) के आकर्षक इंट्रोडक्टरी मूल्य में पेश किया गया है। इसके अलावा, खरीददारों को 6000 रु. तक के आकर्षक बेनेफिट्स भी मिलेंगे। ये बेनेफिट्स 31 मार्च, 2023 तक लागू रहेंगे। नया जील ईएक्स एक स्पोर्टी

इलेक्ट्रिक स्कूटर है। इसके युवा स्टाईल एवं स्पोर्टी डैकल और ड्युअल टोन कलर के कारण यह युवा पीढ़ी के लिए एक आकर्षक उत्पाद है। जील ईएक्स की सर्टिफाईड रेंज 120 किलोमीटर$ है, और इसमें कैन-इनेबल्ड लीथियम-आयन बैटरी, शक्तिशाली बैटरी पैक, विभिन्न राईड मोड्स, साईड स्टैंड सेंसर, आदि खूबियाँ हैं। यह भारत से प्रेरित तीन बेहतरीन रंगों - स्टोन ग्रे, आईवरी व्हाईट, और इंडिगो ब्लू में उपलब्ध होगा। नए उत्पाद पोर्टफोलियो के बारे में संजय बहल, सीईओ एवं एग्जिक्यूटिव डायरेक्टर, ग्रीव्स इलेक्ट्रिक मोबिलिटी प्राईवेट लिमिटेड (जीईएमपीएल) ने कहा, नए एंपियर जील ईएक्स के लॉन्च द्वारा हम अपने ग्राहकों को शानदार रेंज के साथ किफायती और स्वच्छ रहते हुए राईड का बेहतरीन अनुभव प्रदान करना चाहते हैं। यह ई-स्कूटर भारतीय युवाओं की दैनिक मोबिलिटी की जरूरतों के लिए बनाया गया है, और उन्हें बेहतरीन गुणों वाले उत्पाद के साथ कम्फर्ट, परफॉर्मेंस और सुरक्षा प्रदान करता है। हमें विश्वास है कि जील ईएक्स आकर्षक मूल्य में स्पोर्टी इलेक्ट्रिक स्कूटर चाहने वाले भारतीय युवाओं के बीच प्रवेश की बाधा को कम करने और सस्टेनेबल मोबिलिटी अपनाने की ओर तेजी लाने में मुख्य भूमिका निभाएगा। एंपियर ने इलेक्ट्रिक मोबिलिटी को जनसमूह तक पहुँचाने और ह्यहर गली इलेक्ट्रिकह्ल बनाने का मिशन शुरू किया है। अपने आकर्षक मूल्य, संचालन की कम लागत, उच्च रेंज, और ट्रेंडी डिजाईन के साथ नया जील ईएक्स पूरे भारत में युवा राईडर्स के बीच लोकप्रिय और सस्टेनेबल विकल्प बन जाएगा। ग्रीव्स इलेक्ट्रिक मोबिलिटी प्राईवेट लिमिटेड (जीईएमपीएल) ग्रीव्स कॉटन लिमिटेड (जीसीएल) का इलेक्ट्रिक मोबिलिटी व्यवसाय है। जीईएमपीएल पिछले 13 सालों से इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) टेक्नॉलॉजी के व्यवसाय में है, और इलेक्ट्रिक वाहनों की डिजाईनिंग और निर्माण कर रहा है।

संक्षेप

निवा बूपा द्वारा एक क्रांतिकारी स्वास्थ्य बीमा उत्पाद, रीएश्योर 2.0 का लॉन्च

नई दिल्ली। भारत की प्रमुख स्टैंड अलोन स्वास्थ्य बीमा कंपनियों में से एक, निवा बुपा हेल्थ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड (जिसे पहले मैक्स बुपा हेल्थ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड के नाम से जाना जाता था) ने, आज कई उद्योग - प्रथम विशेषताओं के साथ, रीएश्योर 2.0 लॉन्च करने की घोषणा की। यह योजना, देश में स्वास्थ्य बीमा उद्योग को फिर से परिभाषित करने का वादा करती है और वर्तमान में स्वास्थ्य बीमा खरीदने और उपभोग करने के तरीके को फिर से परिभाषित करने की क्षमता रखती है। रीएश्योर 2.0 एक पहली तरह की क्षतिपूर्ति योजना है, जो शायद असंभव और अनसुने उत्पाद प्रस्तावों को, अब संभव बनाती है। यह, वर्तमान रीएश्योर प्लान के तहत पेश किए गए अपने 3 शक्तिशाली लाभों - रीएश्योर, बूस्टर और सेफगार्ड को बेहतर बनाते हुए, बेजोड़ लाभ प्रदान करने के लिए इन लाभों का '+' संस्करण प्रदान करती है। यह व्यापक योजना, ग्राहकों को बिना किसी वित्तीय बाधाओं के तनाव मुक्त जीवन जीने के लिए मन की पूर्ण शांति प्रदान करती है। निवा बुपा हेल्थ इंश्योरेंस के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी, कृष्णन रामचंद्रन ने कहा, निवा बुपा में, यह हमारा प्रयास है कि हम प्रतियोगिता में आगे रहने के लिए नवाचार करते रहें और हमें, स्वास्थ्य बीमा क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाने की क्षमता के साथ एक व्यापक योजना, रीएश्योर 2.0 लॉन्च करने पर गर्व है।

वुडवर्किंग, फर्नीचर मैन्युफैक्चरिंग और मैट्रेस मैन्युफैक्चरिंग पर एशिया का सबसे बड़ा शो- दिल्लीवुड 2023.

नई दिल्ली। दिल्लीवुड का आगामी 7वां संस्करण 2 से 5 मार्च, 2023 तक इंडिया एक्सपो मार्ट, ग्रेटर नोएडा (दिल्ली, एनसीआर) में आयोजित होने जा रहा है। इसके तहत वुडवर्किंग और फर्नीचर निर्माण उद्योग के हितधारकों और अंतरराष्ट्रीय निर्णय निमार्ताओं को कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय लोगों से मिलने का अवसर मिलेगा। इसमें नवीनतम फर्नीचर उत्पादन तकनीकें, वुडवर्किंग मशीनरी, उपकरण, फिटिंग, सहायक उपकरण, कच्चे माल और उत्पाद आदि को प्रदर्शित किया जायेगा। वुडवर्किंग और फर्नीचर मैन्युफैक्चरिंग सेगमेंट के दिग्गज दिल्लीवुड 2023 में कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय निर्णयकताओं से मिलेंगे, नए ग्राहक अर्जित करेंगे और डिजिटलीकरण, स्थिरता, कौशल, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन सहित प्रमुख मुद्दों पर चर्चा करने के साथ नए रुझानों, प्रौद्योगिकियों और सामग्रियों की खोज करेंगे। वार्डरोब और सोफा सहित आधुनिक इंटीरियर्स की बढ़ती मांग, आवासीय निर्माण परियोजनाओं तथा हॉस्पिटैलिटी सेक्टर की वृद्धि, ये कुछ प्रमुख कारण हैं, जो भारतीय फर्नीचर बाजार को प्रगति की ओर ले जा रहे हैं। ऑनलाइन और ऑफलाइन डिस्ट्रिब्यूशन चैनलों के माध्यम से फर्नीचर की आसान उपलब्धता देश भर में उद्योग के विस्तार को गति प्रदान कर रही है। एक ज्ञान साझा करने वाले मंच के तौर पर, दिल्लीवुड प्रमुख उद्योग संघों द्वारा आयोजित नवीनतम रुझानों और नवाचारों के साथ-साथ भारतीय फर्नीचर और फिटिंग कौशल परिषद द्वारा आयोजित कौशल विकास कार्यक्रमों पर कई सेमिनार आयोजित करेगा।

कोटक महिन्द्रा बैंक ने वित्त वर्ष 23 में खोली 100 गोल्ड लोन शाखायें

मुंबई। कोटक महिन्द्रा बैंक लिमिटेड ने आज इस वित्त वर्ष में अब तक 100 गोल्ड लोन शाखायें खोले जाने की घोषणा की। बैंक द्वारा 31 मार्च 2022 तक, इसकी 400 शाखाओं के माध्यम से गोल्ड लोन्स की पेशकश की जा रही थी। इस वित्त वर्ष में 100 और गोल्ड लोन शाखाओं के खुल जाने से, कोटक महिन्द्रा बैंक द्वारा अब इसकी 500 शाखाओं के जरिये गोल्ड लोन्स की पेशकश की जा रही है। बैंक की ये शाखायें देश भर के 253 शहरों में फैली हुई हैं। बैंक की योजना मौजूदा वित्त वर्ष में 50 और शाखाओं को खोलकर अपने गोल्ड लोन्स ब्रांच नेटवर्क का और भी ज्यादा विस्तार करने की है। मनीष कोठारी, प्रेसिडेंट एवं हेड- कमर्शियल बैंकिंग, कोटक महिन्द्रा बैंक लिमिटेड ने कहा, हमें इस वित्त वर्ष में 100 गोल्ड लोन शाखाओं का शुभारंभ करते हुये बेहद खुशी हो रही है, जोकि 49 शहरों में खोली गई हैं। गोल्ड लोन अपनी व्यक्तिगत और व्यावसायिक जरूरतों को पूरा करने के लिये फाइनेंस हासिल करने का एक सबसे पसंदीदा साधन बन गया है। भारतीयों के पास सोना यूं ही घरों में पड़ा रहता है और सोने की कीमतों के बढ़ने से गोल्ड लोन में उन्हें फायदा नजर आने लगा है। साहूकारों और कर्जदाताओं जैसे फाइनेंस के असंगठित स्त्रोतों से लोगों के दूर जाने की वजह से भी गोल्ड लोन की मांग बढ़ रही है। इसका मुख्य कारण है साहूकारों द्वारा अपेक्षाकृत उच्च ब्याज दरों पर प्रदान किये जाने वाले फाइनेंस के अनियोजित स्त्रोत के साथ जुड़े खतरों के बारे में लोगों की बढ़ती जागरूकता है। हमें लगता है कि आने वाले समय में भी यह ट्रेंड जारी रहेगा।

भारत में अच्छी बाजार शोध कंपनियों की कमी: नारायण मूर्ति

पुणे। इन्फोसिस के सह-संस्थापक एनआर नारायण मूर्ति ने बृहस्पतिवार को कहा कि भारत में अच्छी बाजार शोध कंपनियों की कमी है, जिससे यूनीकॉर्न्स (एक अरब डॉलर से ज्यादा के मूल्यांकन वाले स्टार्टअप) अवसरों का जरूरत से ज्यादा अनुमान लगा लेते हैं और उससे बड़ा नुकसान होता है। मूर्ति ने कहा, भारत में इस स्तर पर इस समय एक कमी यह भी है कि हमारे पास ऐसी कोई कंपनी नहीं है जो गुणवत्तापूर्ण बाजार शोध में विशेषज्ञ हो। उन्होंने कहा कि इससे उद्यमी बाजार अवसरों और निवेश का जरूरत से ज्यादा अनुमान लगाकर यूनीकॉर्न तैयार कर देते हैं। यहां सिम्बायोसिस इंटरनेशनल द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में संबोधित करते हुए मूर्ति ने कहा कि कंपनियां जरूरत से ज्यादा खर्च कर देती हैं फिर उन्हें नुकसान होता है। नारायण मूर्ति ने कहा, वास्तविकता साल के अंत तक सामने आ जाती है। आपका राजस्व नहीं बढ़ता है लेकिन खर्चे बढ़ जाते हैं, जिससे भारी नुकसान होता है। विद्यार्थियों से संवाद करते हुए मूर्ति ने बाजार शोध की जरूरत पर जोर देते हुए यह तथ्य रखा और कहा कि बाजार शोध के अभाव में उन्हें खुद 1970 के दशक में पुणे में ही स्थापित अपनी पहली कंपनी सॉफ्ट्रॉनिक्स को बंद करना पड़ा था। उन्होंने कहा कि कंपनियों के लिए सभी से सम्मान अर्जित करना बहुत जरूरी है। अगर वह इसमें सफल होती है तो उसे सभी भागीदारों से सहयोग मिलेगा। मूर्ति ने कहा, अगर आपकी छवि अच्छी है तो सरकार सम्मान देगी और आपके साथ कोई भ्रष्टाचार नहीं होगा और आपको कोई गलत काम नहीं करना पड़ेगा। उन्होंने स्वीकार किया कि इन्फोसिस के शीर्ष नेतृत्व में बाहर से सही उम्मीदवार को नियुक्त करने में वह सफल नहीं रहे थे। किसी शीर्ष नेतृत्व वाले पद पर नियुक्ति से पहले उम्मीदवार में दो महत्वपूर्ण तथ्यों- योग्यता और मूल्य पर ध्यान देना चाहिए।

तेल, गैस उत्पादन के लिए दो अरब डॉलर का निवेश करेगी ओएनजीसी

नई दिल्ली। देश की शीर्ष तेल और गैस उत्पादक कंपनी ओएनजीसी अरब सागर में अपने मुख्य गैस क्षेत्र में 103 कुओं की खुदाई के लिए दो अरब डॉलर का निवेश करेगी। कंपनी के एक अधिकारी ने बताया कि इससे कुल उत्पादन में लगभग 10 करोड़ टन का इजाफा होने की उम्मीद है। ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन (ओएनजीसी) के पश्चिमी तट पर तीन मुख्य संपत्तियां हैं, जिनमें मुंबई हाई, हीरा और नीलम तथा वसई और सुदुर तेल एवं गैस क्षेत्र हैं। कंपनी ने इनसे 2021-22 में 2.17 करोड़ टन तेल और 21.68 अरब घनमीटर गैस का उत्पादन किया था। ओएनजीसी के निदेशक (तटीय) पंकज कुमार ने कहा, ह्लहमने अगले दो-तीन साल में वसई और सुदुर (बीएंडएस) तेल एवं गैस क्षेत्रों में 103 कुओं को खोदने का लक्ष्य तय किया है। उन्होंने कहा, हमें उम्मीद है कि इससे 10 करोड़ से ज्यादा तेल और तेल समतुल्य गैस का उत्पादन बढ़ जाएगा। इस प्रक्रिया में दो अरब डॉलर से अधिक का निवेश होगा। ओएनजीसी देश में उत्पादित कुल तेल और गैस के दो-तिहाई का उत्पादन करता है। बढ़ा हुआ उत्पादन ऊर्जा जरूरतों के लिए देश की आयात पर निर्भरता कम कर देगा। भारत लगभग 85 प्रतिशत कच्चा तेल आयात करता है।

संक्षेप

तालाब के किनारे युवक की लाश मिलने से सनसनी

बरसठी। थाना क्षेत्र के पुरेसवा गांव स्थित प्रधान का तालाब किनारे एक युवक की धारदार हथियार से सिर पर हमला कर हत्या कर फेंकी गई लाश मिलने से गांव में सनसनी फैल गयी। सुबह ग्रामीणों ने लाश देखकर पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुँची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतक प्रयागराज जिले के सरायममरेज थाना क्षेत्र के बैरहना पतैया गांव का 38 वर्षीय सर्वजीत तिवारी बताया जा रहा है। शव की पहचान उसके बड़े भाई इंद्रजीत ने मौके पर आकर की है। शव के बगल उसकी बाइक हीरो डीलक्स पड़ी हुई थी। परिजनों ने बताया सर्वजीत भदोही जिले के नागमलपुर गांव में बारात जाने के लिए बाइक से निकला था। रात में घर न आने पर परिजन फोन करने लगे तो उसका मोबाइल स्विच ऑफ था। मृतक के दो बच्चे ह। पत्नी कंचन देवी गांव के ही विद्यालय में शिक्षा मित्र है। घटना के बाद परिजनों में कोहराम मचा हुआ है।

सपाजनों ने पुष्पांजलि अर्पित कर मनायी संत गाड्गे की जयंती

जौनपुर। समाजवादी पार्टी कार्यालय पर संत शिरोमणि बाबा संत गाड्गे महराज की जंयती के अवसर पर सपा जिला अध्यक्ष लाल बहादुर यादव ने उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उनके जीवनी पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संत गाड्गे महराज का वास्तविक नाम देबूजी झिंगरजी जानोरकर था उनका जन्म 23 फरवरी 1876 को महाराष्ट्र के अमरावती जिले के अंजनगांव सुरजी तालुका के शेड्गाओ गांव में हुआ था। वे एक घूमते फिरते सामाजिक शिक्षक थे और कहते थे कि शिक्षा बड़ी चीज है। पैसे की तंगी हो तो खाने के बर्तन बेच दो औरतों को कम दामों के कपड़ें खरीदों टूटे फूटे मकान में रहकर बच्चों को शिक्षा दो। जब वे किसी गांव में प्रवेश करते थे तो तुरंत ही गटर और रास्तों को साफ करने लगते और काम खत्म होने के बाद वे खुद लोगों को गांव के साफ होने की बधाई भी देते। इस अवसर पर मुख्य रूप से पूर्व अध्यक्ष राजबहादुर यादव, उपाध्यक्ष श्याम बहादुर पाल, प्रवक्ता राहुल त्रिपाठी, दीपचंद राम, गप्पू मौर्या, कृष्णा यादव, संजीव साहू, रियाज अहमद, देवमणि यादव, लक्ष्मी कान्त यादव, विक्की यादव, धर्मेंद्र सोनकर सोनी यादव, सोनी सेठ, आसिफ शाह, महेश यादव, अमजद अली आदि रहे। संचालन जिला महाचिव हिसामुद्दीन शाह ने किया।

बिजली का केबल खींचने को लेकर भिड़े दो पक्ष

केराकत। ब्लॉक क्षेत्र के बेलहरी गांव में बिजली की केबल को लेकर वर्तमान ग्राम प्रधान और पूर्व ग्राम प्रधान आपस में भिड़ गए। दोनों पक्षो के लोगों को चोटें आई हैं। दोनों ने एक दूसरे के खिलाफ थाने में एनसीआर दर्ज कराया गया है। जानकारी के अनुसार वर्तमान ग्राम प्रधान पास के बिजली खम्भे से अपने घर बिजली का केबल जोड़ रहे थे। पूर्व ग्राम प्रधान ने इसका विरोध किया जिसके बाद दोनों पक्षों के परिजन मौके पर पहुंच गए और कहासुनी के साथ ही मारपीट हो गई। मारपीट में वर्तमान ग्राम प्रधान नीतू सिंह सहित उनकी पक्ष के शशिकांत सिंह घायल हो गई जबकि दूसरे पक्ष से पूर्व ग्राम प्रधान के बेटे नारायण को चोटें आई हैं। दोनों पक्षों ने एक दूसरे के खिलाफ नामजद तहरीर दी है। कोतवाली पुलिस ने दोनों का एनसीआर दर्ज कर लिया है।

कुएं में गिरने से अधेड़ की मौत

बरसठी। थाना क्षेत्र के सरायवैद गांव में प्राथमिक विद्यालय के पास कुँएं में सुबह अधेड़ का शव मिलने से सनसनी फैल गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया। करियांव निवासी 65 वर्षीय मोहम्मद शरीफ पुत्र मोहम्मद हाशिम रोज की तरह सुबह टहलने निकले थे। सरायबैद प्राथमिक विद्यालय के पास कुँएं में गिर गए। आसपास के लोगों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने किसी तरह उसे कुएं से बाहर निकाला तब तक उनकी मौत हो गई थी। मृतक के भाई हनीफ की तहरीर पर पुलिस आवश्यक कार्रवाई करते हुए शव को पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया।

वीडियोग्राफी करने आए युवक की बाइक चोरी

सुइथाकला। थाना क्षेत्र के भगासा गांव में बुधवार को शादी समारोह में वीडियोग्राफी करने आए युवक की बाइक चोरी हो गयी। मामले में पीड़ित ने तहरीर देकर कार्रवाई की माँग की है। बताया जाता है कि अम्बेडकर नगर जनपद के जलालपुर थाना क्षेत्र के परकौली गांव निवासी विपिन पुत्र दयाराम भगासा गांव में एक शादी समारोह में वीडियोग्राफी करने बाइक से आया था। वह अपनी बाइक खड़ी कर अपने कार्य में लग गया। इसी बीच उसकी बाइक किसी ने चोरी कर ली।

गंड़ासे से वार कर पत्नी को उतारा मौत के घाट

दुखद

बिस्तर पर पड़ी थी लाश और फैला था हर तरफ खून

आरोपी पति हिरासत में, तारापुर कालोनी में किराये पर रहते थे दोनों

अवैध सम्बन्ध के शक में दिया वारदात को अंजाम

जनसंदेश न्यूज

तारापुर कालोनी में जांच पड़ताल करती पुलिस

जौनपुर। थाना कोतवाली क्षेत्र के के चौकी सराय पोख्ता स्थित तारापुर कालोनी में एक पति का हैवान रूप देखने का मिला। पति ने पत्नी के किसी और मर्द से संबंध के शक में गंड़ासे से काटकर उसकी हत्या कर दी। वारदात को अंजाम देने के बाद पति घर से फरार हो गया। बिस्तर पर शव पड़ा था और हर तरफ खून फैला था। जिस किराए के घर में दोनों रहते थे उसके मकान मालिक ने पुलिस को घटना की सूचना दी।

मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। आरोपी पति को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है। बताया जाता है कि अयोध्या निवासी अफजल जौनपुर में ऑटो रिक्शा चलाता है। 15 दिन पहले ही वो अपनी पत्नी अकिला (32) को लेकर यहां आया था। तारापुर कॉलोनी में एक किराए के मकान में रहते थे। अफजल को शक था कि उसकी पत्नी का अफेयर किसी और मर्द से है। इसे लेकर दोनों में आए दिन विवाद भी होता था। गुरुवार की सुबह अफजल रोजाना की तरह ऑटो लेकर सुबह ही घर से निकल गया। वह दोपहर के समय अचानक ऑटो लेकर घर आ गया। कमरे में पहुंचा और पत्नी के गर्दन पर गंड़ासे से वार कर दिया। अकिला खुद की जान बचाने के लिए चिल्लाई लेकिन दरवाजा बंद होने के कारण कोई उसकी मदद नहीं कर सका। पति ने गंड़ासे से वार कर उसे मौत के घाट उतारने के पश्चात फरार हो गया। इधर शोर सुनकर मकान मालिक कमरे में पहुंचे तो वहां का नजारा देख सन्न रह गए। बिस्तर पर अकिला का शव पड़ा था और हर तरफ खून फैला था। उन्होंने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम भेज दिया वहीं आरोपी उसके पति को हिरासत में ले लिया है।

मेला क्षेत्र पर किए जा रहे कब्जे को लेकर सीएम से लगाई गुहार

मांग

पुलिस और राजस्व टीम ने रोका निर्माण कार्य, जांच में जुटी

शाहगंज। कोतवाली क्षेत्र के सबरहद गांव स्थित एक मैदान में प्लाटिंग के लिहाज से किए जा रहे निर्माण व कब्जे का रामलीला समिति के अध्यक्ष आशुतोष श्रीवास्तव ने विरोध करते हुए स्थानीय प्रशासन सहित मुख्यमंत्री से गुहार लगाई है। आरोप है कि क्षेत्र के रामलीला मैदान दशहरा मेला क्षेत्र पर प्लाटरों द्वारा अवैध निर्माण कर अवैध कब्जा किया जा रहा है। जिससे धार्मिक भावना आहत है। फिलहाल पुलिस व राजस्व टीम ने मौके पर निर्माण कार्य रुकवा दिया और जांच में जुटी है।

बता दें कि सबरहद गांव के रामलीला मैदान में गुरुवार को प्रातः भारी संख्या में एकत्रित व्यक्तियों और राजगीरों द्वारा तेज गति से निर्माण कार्य किया जाने लगा। जिस पर स्थानीय रामलीला समिति के अध्यक्ष ने इसको अवैध बताते हुए विरोध किया। इस बाबत स्थानीय पुलिस व प्रशासन सहित मुख्यमंत्री से भी गुहार लगाई है। अध्यक्ष द्वारा कहा गया कि उक्त मैदान रामलीला मैदान दशहरा मेला क्षेत्र है। जहां पिछले 70 वर्षों से प्रतिवर्ष रामलीला खेली जाती है व दशहरे मेले का आयोजन होता रहा है। गोलबंद लोगों द्वारा रामलीला मेला क्षेत्र की जमीन को कब्जा कर प्लाटिंग करना चाहते हैं। जिसको लेकर क्षेत्रवासियों की धार्मिक भावनाएं आहत है। वहीं प्रकरण को लेकर ग्रामीणों में व्यापक रोष व्याप्त है। फिलहाल पुलिस ने मौके पर निर्माण कार्य रुकवा दिया है और मामले की जांच में जुटी है।

यात्री के बैग से लाखों के जेवर लेकर उचक्के फरार

छिनैती

पीड़ित की शिकायत पर एक संदिग्ध हिरासत में

सुइथाकला। थाना क्षेत्र के सरपतहां गांव निवासी दंपती शाहगंज से लखनऊ जा रही बस में गुरुवार दोपहर उचक्कों के शिकार हो गए। उनके बैग से उचक्के लाखों रुपए मूल्य के जेवर पार कर बस से उतर गए। संदेह के आधार पर पुलिस एक को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है।

अनिल विश्वकर्मा पत्नी रेखा संग फरिहा (आजमगढ़) से एक वैवाहिक समारोह के उपरांत वापस घर लौट रहे थे। शाहगंज से रुधौली जाने के लिए वे शाहगंज डिपो की बस पर सवार हुए जो लखनऊ जा रही थी। पीड़ित दंपति के अनुसार जब वे बस में सवार हुए तो वह चल चुकी थी। लिहाजा अपना एक बैग वो गेट के पास वाली सीट के बगल रखकर पीछे की तरफ सीट की तलाश में चले गए। उधर बस में पहले से सवार चार लोगों ने एक साथ सूरापुर का टिकट लिया और आगे पांच किमी बाद बड़ागांव बाजार में ही उनमें से तीन लोग उतर गए। आगे की सीट खाली होती देख अनिल अपने बैग के पास वापस आए तो उन्हें उसका चेन खुला हुआ दिखा। इसके बाद दंपति ने बैग के अंदर टटोला तो उसमें रखा कथित चार लाख रुपए मूल्य का जेवर गायब था। इसके बाद तो उनके होश ही उड़ गए। इस बीच बस सरपतहां थाना क्षेत्र के जहरूद्दीनपुर गांव पहुंच चुकी थी। पीड़ित दंपति के हंगामा मचाने पर बस चालक ने बस रोक दी और पुलिस को सूचना दी गई। उधर एक व्यक्ति जिसका टिकट पहले उतर चुके तीन व्यक्तियों के साथ ही लिया गया था, द्वारा परिचालक से वहीं उतरने की बात करने पर उसे संदेह हुआ कि संभव है यह व्यक्ति भी उन्हीं उच्चकों का साथी हो, को पुलिस के हवाले कर करीब आधे घंटे बाद बस अपने गंतव्य को रवाना हुई। थानाध्यक्ष विक्रम लक्ष्मण सिंह ने कहा मामले की जानकारी है। जांच-पड़ताल कर आवश्यक कार्यवाही की जाएगी।

क्रमिक अनशन के तीसरे दिन ऑटो रिक्शा वालों ने किया समर्थन

केराकत। स्थानीय रेलवे स्टेशन पर क्रमिक अनशन कर रहे अनशनकारियों का तीसरे दिन लगभग तीन दर्जन ऑटो रिक्शा वालों ने अनशन का समर्थन किया। इस दौरान ऑटो रिक्शा से बाजार भ्रमण कर बाजारवासियों समेत क्षेत्रवासियो से क्रमिक अनशन का सहयोग मांगते हुए पुनः धरना स्थल पर लौट आये। क्रमिक अनशन का समर्थन कर रहे ऑटो रिक्शा चालकों ने कहा कि रेलवे स्टेशन पर लम्बी दूरी के ट्रेनों के ठहराव से प्रदेश व अन्य प्रदेश को जाने व आने वाले यात्रियों की संख्या में इजाफा होगा तो निसंदेह ही रोजगार बढ़ेगा जिसका फायदा दुकानदार समेत ऑटो रिक्शा चालकों का होगा जिसको देखते हुए हम सभी ऑटो रिक्शा चालकों ने आपस में सहमति बनाकर क्रमिक अनशन का समर्थन किया गया। मनोज कमलापुरी, अनिल सोनकर गांगुली एडवोकेट, हंस कुमार सोनकर मकालू, सुबाष यादव, फौजी, रधीर यादव, अवनीश यादव सिझवारा, अभय कमलापुरी, वीरेंद्र सिंह, वकील अंसारी, अभय जायसवाल, पप्पू सरोज असलम मंसूरी आदि लोग उपस्थित रहे।

हजरत सैय्यद मंसूर बाबा की मजार पर चादरपोशी

मुंगराबादशाहपुर। स्थानीय नगर के मोहल्ला सिपाह के हजरत सैयद मंसूर बाबा का उर्स का जलसा गुरूवार को बड़े ही अकीदत और शानों शौकत के साथ मनाया गया। इस दौरान जायरीनों ने हजरत सैय्यद मंसूर बाबा की मजार पर चादरपोशी कर मन्नतें भी मांगी। मोहल्ला साहबगंज स्थित फूलशाह बाबा सिनेमा गली से डीजे सहित गाजे-बाजे के साथ जुलूस निकाला गया जिसमें बाबा के कद्रदान सिर पर गागर लेकर चल रहे थे जो अपने कदीमी रास्ते से होकर बाबा के मजार पर पहुंचा जहां पर जायरीनों ने बाबा के मजार पर चादर चढ़ाई और मन्नतें भी मांगी।

जुलूस की शक्ल में शामिल लोग बाबा की शान में नातिया कलाम पढ़ते हुए चल रहे थे जो अपने कदीमी रास्ते से होकर सैय्यद मंसूर बाबा की मजार पर पहुंच कर जायरीनों द्वारा चादर चढ़ाया गया। बाबा को इत्र से नहला कर गुलपोशी किया गया। हजरत शौकत अली कंतित शरीफ (मिजार्पुर) अमन चैन के लिए दुआ किए। संभल से चलकर आए नामचीन कव्वाल सरफराज चिश्ती मंडली के द्वारा पेश किए गए नामचीन नातिया कलाम जलसे ने समां बांधा।

सरफराज चिश्ती संभल द्वारा इतना तो कर्म करना ए नरगिसे मस्ताना, जब जान लबों पर हो तुम सामने आ जाना पर लोगों ने कलाकारों का हौसला अफजाई भी किया। कव्वाल मंडली द्वारा बाबा के शान में पेश कव्वाली का देर रात तक लोगों ने लुत्फ उठाया। इस अवसर पर खादिम खालिद अंसारी, अध्यक्ष सुवैब मंसूरी, लालचन्द्र, विक्की गुप्ता, नवरत्न, आफाक खान, मो. शादाब, आलोक, खुर्शीद, खलीक अंसारी, नीलू, फारुख, नीरूलैन, मो. खलिक अंसारी व अनवर मंसूरी आदि लोग बड़ी संख्या में मौजूद रहे।

सर्वसमावेशी बजट से प्रदेश के सर्वांगीण विकास का मार्ग होगा प्रशस्त

खुटहन। प्रदेश कार्य समिति सदस्य भाजपा युवा मोर्चा उप्र के सदस्य गौरव सिंह वत्स ने उत्तर प्रदेश में अब तक के सबसे बड़े बजट प्रस्तुत किये जाने तथा बजट में समाज के सभी वर्गों के लिए माकूल धन की व्यवस्था किये जाने पर खुशी जतायी है। उन्होंने कहा वित्तीय बजट 2023-24 में निश्चित तौर पर प्रदेश की आधारभूत ढांचे के विकास (शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार इत्यादि) पर विशेष बल दिया गया है। बजट में महिला, किसान, युवा के साथ समाज के सभी वर्गों का विशेष ध्यान रखा गया है। वित्त मंत्री द्वारा सर्वसमावेशी बजट प्रस्तुत किया गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एवं वित्त मंत्री सुरेश कुमार खन्ना द्वारा प्रस्तुत अब तक के सबसे बड़े बजट का स्वागत करता हूँ। यह बजट निश्चित तौर पर प्रदेश के सर्वांगीण विकास में योगदान करेगा। कहा कि उत्तर प्रदेश का अब तक का सबसे बड़ा बजट विकास के नित नए कीर्तिमान स्थापित करेगा। समाज के चहुमुंखी विकास में नई ऊंचाई प्रदान करेगा इस बजट मे युवाओं, किसानो, महिलाओ एवं इन्फ्रास्ट्रक्चर से जुड़े प्रोजेक्ट को लेकर अहम घोषणाएँ की गई है।

अडानी और अंबानी इस सरकार में हो रहे अमीर: श्रवण कुमार

सम्मेलन

बिहार सरकार के कैबिनेट मंत्री जनता दल (यू) के कार्यकर्ता संवाद में हुए शामिल

जनसंदेश न्यूज

कार्यकताओं को संबोधित करते कैबिनेट मंत्री श्रवण कुमार

भदोही। आगामी लोकसभा चुनाव को देखते हुए पार्टी के उत्तर प्रदेश संगठन प्रभारी एवं बिहार सरकार के कैबिनेट मंत्री श्रवण कुमार गुरुवार को नगर के रामरायपुर में स्थित जनता दल (यूनाइटेड) के जिला कार्यालय में कार्यकताओं के साथ मे आयोजित संवाद कार्यक्रम में शामिल हुए और कार्यकताओं में जोश भरा साथ ही पार्टी के सदस्यता अभियान में तेजी लाने का निर्देश दिया।

इस अवसर पर बिहार सरकार के कैबिनेट मंत्री श्रवण कुमार ने कहा कि महिलाओं ने प्रदेश में शराब बंदी की मांग की थी और नीतीश कुमार मुख्यमंत्री बनने के बाद प्रदेश में शराब बंदी लागू कर दिया। इससे सरकार को 4 करोड़ रुपए की क्षति हुई है।

लेकिन इसके कारण बिहार प्रदेश में दूध की बिक्री में 11 फीसदी, मिठाई की बिक्री में 16 फीसदी व महिला हिंसा की घटना में 12 फीसदी की कमी आई है। वही सड़क दुघर्टना में 44 फीसदी की कमी दर्ज की गई। अब देश की महिलाएं पूरे देश में शराब बंदी की मांग कर रही है। 2024 के लोकसभा चुनाव में जनता उनको सबक सिखाएगी। इस सरकार में अडानी और अंबानी अमीर होते चले जा रहे हैं। जबकि गरीब, मजदूर व किसान और भी गरीब होते जा रहे। इसके साथ ही पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव एवं पूर्व सांसद धनंजय सिंह व पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष अनूप सिंह पटेल ने भी लोगों को संबोधित किया।

इस मौके पर अवधेश सिंह, सुशील कश्यप, सुशील सिंह पटेल, अवलेश सिंह, डॉ.वीएल वर्मा, दिनेश चंद राय, मीरा देवी, जफर महमूद अंसारी, मो.फिरोज खां, विनय राय, शिवनरेश यादव, मौलाना महफूज आलम, विमल धर दुबे, डॉ.नायब यादव, राजेन्द्र विश्वकर्मा, नीरज सिंह, चंद्रशेखर यादव, फोटो देवी, मनोज दुबे व सुशील पाठक आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहें। अध्यक्षता पार्टी के जिलाध्यक्ष सर्वेश राय व संचालन युवा प्रकोष्ठ के प्रदेश प्रधान महासचिव डीएम सिंह गहरवार ने किया।

एसडीएम भदोही के न्यायालय कक्ष का डीएम ने किया औचक निरीक्षण

जायजा

डीएम के औचक निरीक्षण में पत्रावली रख-रखाव सही ढ़ग से न होने सहित दर्शित हुई गंदगी

भदोही। जिलाधिकारी गौरांग राठी ने तहसील भदोही के उप जिलाधिकारी के न्यायालय का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान डीएम ने न्यायालय में रखी विभिन्न फाईलों, पत्रावलियों, उपस्थित पंजिका, व अन्य बिन्दुओं का गहनता से जॉचपरक करते हुए आवश्यक जानकारी लिया। जिलाधिकारी द्वारा किए गये निरीक्षण में पत्रावलियों, रख-रखाव, सही ढ़ग से व संकलित नही पाया गया। जिलाधिकारी ने उप जिलाधिकारी को वाद पत्रावलियों को न्यायालय पोर्टल पर शत्-प्रतिशत दर्ज कराने का निर्देश दिया। न्यायालय परिसर में सही ढ़ग से साफ-सफाई कराने के निर्देश के साथ ही जनमानस के आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता पर बल दिया। डीएम ने जनता दर्शन में आये फरियादियों की शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर प्रभावी क्रियान्वयन हेतु कराये जाने हेतु नये तरीकों पर बल दिया। जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि जिन आवेदन पत्रों की जॉचकर रिपोर्ट आ गयी है। सम्बन्धित शिकायतकर्ता को अवगत कराते हुए उसका फीडबैक लिया जाये। उन्होंने लेखपाल, कानूनगो द्वारा जमीन विवाद सम्बन्धी प्रकरणों में निष्पक्ष पैमाईश करना व जॉचकर सत्यापन कर सही रिपोर्ट लगाने का निर्देश दिया। इस अवसर पर उप जिलाधिकारी भदोही कृपाशंकर पाण्डेय, तहसीलदार सत्यपाल प्रजापति, नायब तहसीलदार व अन्य कर्मी मौजूद रहें।

संक्षेप

विजय मिश्रा के करीबी हनुमान पर शिकंजा, सवा तीन करोड़ का मकान कुर्क

ज्ञानपुर। विधानसभा ज्ञानपुर से चार बार विधायक रहे बाहुबली विजय मिश्रा व उनके करीबियों पर प्रशासन का शिकंजा लगातार कसता जा रहा है। शासन स्तर पर चिन्हित माफिया, गैंगलीडर विजय मिश्रा गैंग के सक्रिय सदस्य हनुमान सेवक पाण्डेय के प्रयागराज शहर के झलवां इलाके के मयूर विहार में स्थित लगभग 03 करोड़ 25 लाख रुपए की कीमत के आलीशान मकान को गुरुवार को भदोही प्रशासन द्वारा कुर्क कर दिया गया। गुरूवार को प्रयागराज पहुंचीं भदोही पुलिस व राजस्व की टीम ने डुग्गी बजाकर मकान पर कुर्की का नोटिस बोर्ड लगा दिया है। आपराधिक कृत्यों से अर्जित धन से निर्मित किये जाने के आरोप में तीन मंजिला भवन को डीएम गौरांग राठी ने पिछले दिनों गैंगेस्टर एक्ट की धारा- 14(1) के तहत राज्य सरकार के पक्ष में कुर्क करने का आदेश जारी किया थाबता दें कि विजय मिश्रा उनके परिजनों एवं करीबियों पर लगातार प्रशासन कार्रवाई कर रहा है। विजय मिश्रा गैंगरेप, रिश्तेदारों की संपत्ति हड़पने, गैंगेस्टर सहित कई मामलों में आगरा जेल में पिछले ढ़ाई वर्षों से ज्यादा समय से जेल में बंद हैं। जेल में निरुद्ध रहने के दौरान गैंगेस्टर सहित करीब आधा दर्जन मामले उनपर दर्ज किए गए। उनका बेटा भी रेप सहित कई गंभीर मामलों में छह माह से वाराणसी में सलाखों के पीछे है। एक वक्त में विजय मिश्रा की भदोही व आसपास के जनपदों में तूती बोलती थी। योगी सरकार में चार बार विधायक रहे इस बाहुबली के कुनबे पर शिकंजा कसा जाने लगा। सरकार द्वारा लगातार बाहुबली के किले व कुनबे को ध्वस्त करने की कार्रवाई की जा रही है। हनुमान सेवक पाण्डेय विजय मिश्रा का दाहिना हाथ बताया जाता है।

फैमिली आईडी एक परिवार-एक पहचान योजना का दिया गया प्रशिक्षण

भदोही। ई-डिस्ट्रिक्ट मैनेजर आशुतोष कुमार श्रीवास्तव ने गुरूवार को कलेक्ट्रेट सभागार में मुख्य विकास अधिकारी यशवंत कुमार सिंह की अध्यक्षता में सम्बन्धित अधिकारियों व कर्मचारियों को फैमिली आईडी एक परिवार, एक पहचान योजनाद्व के क्रियान्वयन के लिए प्रशिक्षण दिया। उन्होंने ने बताया कि फैमिली आईडी का उद्देश्य पात्र लाभार्थियों को शत-प्रतिशत आच्छादित करना, डुप्लीकेट या फर्जी लाभार्थियों को हटाना, छूटे हुए लाभार्थियों और जरूरतमंद परिवारों की प्राथमिकता के आधार पर पहचान, सरकार की सभी योजनाओं का संतृप्तीकरण एवं लाभों के लक्षित वितरण के लिए सभी विभागों का एकीकरण करना हैं। उन्होंने बताया कि फैमिली आईडी प्रत्येक परिवार के लिए बारह अंको की एक विशिष्ट पहचान संख्या है, जिसमें परिवार के सदस्यों का विवरण दिया होगा। फैमिली आईडी डेटाबेस योजनाओं में पात्रता निर्धारित करने तथा लाभ से वंचित पात्र लाभार्थियों को लाभ देने के लिए केन्द्रीय भण्डार के रूप में कार्य करेंगा। फैमिली आईडी एक स्वैच्छिक सेवा है, केवल वे परिवार जो प्रदेश व केन्द्र सरकार द्वारा संचालित योजनाओ का लाभ प्राप्त कर रहें है या लाभ प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें पंजीकरण कराने की आवश्यकता हो सकतीं हैं। उन परिवारों का फैमिली आईडी कार्ड बनाया जाना है, जो राशन कार्ड धारक नहीं है। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी न्यायिक, उप जिलाधिकारी ज्ञानपुर, सभी खण्ड विकास अधिकारीगण, सचिव ग्राम पंचायत एवं सम्बन्धित लेखपाल उपस्थित रहें।

पॉस्को ऐक्ट का आरोप निकला फर्जी, न्यायालय ने किया खारिज

भदोही। न्यायालय भदोही में कोमल दुबे पुत्री महेंद्र दुबे धौरहरा निवासिनी ने अपने ही गांव के रंजीत पांडेय, शुभम पांडेय, संगीत पांडेय, धुनई पांडेय आदि लोगों के विरुद्ध पिछले वर्ष 28 जुलाई को छेड़खानी का मामला लेकर विशेष न्यायाधीश पाक्सो एक्ट, भदोही में गए। जिसका न्यायालय में सुनवाई शुरु हुआ। ललिता बनाम रंजीत आदि के नाम से चले इस मुकदमे में न्यायालय अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश/विशेष न्यायाधीश पाक्सो एक्ट, भदोही द्वारा समस्त तथ्यों को देखते हुए कहा कि यह स्पष्ट है कि परिवादिनी द्वारा यह परिवाद अपने परिवार के विरुद्ध दर्ज मुकदमों की पेशबंदी में अपनी नाबालिग पुत्री को पीड़ित बनाकर दाखिल किया है। उसके द्वारा अभियुक्तगण को पाक्सो एक्ट में आरोपी बनाने के उद्देश्य से अपनी पुत्री की उम्र का अनुचित उपोयग इस प्रकरण के लिए किया गया है। जिन आधारों पर यह परिवाद प्रस्तुत किया है, उनके समर्थन में कोई साक्ष्य पत्रावली पर उपलब्ध नहीं है। न्यायालय विशेष न्यायाधीश पाक्सो एक्ट, भदोही ने कहा कि प्रस्तुत प्रकरण में अभियुक्तगण को किसी भी धारा में तलब किये जाने के आधार पर्याप्त नहीं है। प्रस्तुत परिवाद अंतर्गत धारा 203 द.प्र.सं. में खारिज किया जाता है। बताते चलें कि मामला भदोही कस्बा छेत्र धहरौरा का है जहां काफी दिनों से पारिवारिक रंजिश के चलते आपस मे ही विवाद चल रहा था। दोष से मुक्त होने पर शुभम पांडे ने कहा कि उनको न्यायालय पर पूरा भरोसा था और न्यायलय ने मुकदमे पर गहनता से विचार विमर्श कर हमें दोषमुक्त किया।

डीएम के मार्गदर्शन में सभी विभागों में आयोजित हुआ जनसंवाद दिवस

ज्ञानपुर। जिलाधिकारी गौरांग राठी द्वारा जनशिकायतों का समयबद्ध, गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करने की दिशा में प्रत्येक वृहस्पतिवार को जनसंवाद दिवस विभागवार समस्या निस्तारण हेतु विशेष दिवस का गुरूवार को सभी विभागों द्वारा आयोजन कर शिकायतों का प्रभावी निस्तारण किया गया। जिलाधिकारी गौरांग राठी के पहल के निर्देश के क्रम में अपर जिलाधिकारी शैलेन्द्र कुमार मिश्र ने जिला कन्ट्रोल रूम में बैठकर प्रत्येक ब्लाक के दस दस ग्राम पंचायत भवनों पर क्षेत्रीय लेखपाल, ग्राम पंचायत अधिकारी, ग्राम विकास अधिकारी, एडीओ की उपस्थिति में विभागों से सम्बन्धित शिकायकर्ताओं से वीडियो कान्फ्रेसिंग द्वारा संवाद स्थापित करते हुए निस्तारित कर फीडबैक प्राप्त किया गया।

जिलाधिकारी ने आईजीआरएस सहित सभी शिकायतों का त्वरित व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के निर्देश के अनुपालन में प्रत्येक वृहस्पतिवार जन संवाद दिवस में असंतुष्ट फीडबैक में से आज 309 शिकायतों का लगभग सभी कार्यालयध्यक्षों द्वारा असंतुष्ट शिकायतकर्ताओं व अन्य रिपीटेड, डिफाल्टर, सी श्रेणी के शिकायतकर्ताओं से स्वयं एवं अधीनस्थ के द्वारा सुनवाई किया।

जनसंदेश टाइम्स प्रा. लि. के लिए **प्रवीण कुमार कुशवाहा**, 8/6 ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज से प्रकाशित एवं मीडिया टेक्स्ट (Media Text) प्रा.लि. प्रेस, रोहनिया, वाराणसी से मुद्रित।
प्रधान सम्पादक - सुभाष राय
स्थानीय सम्पादक - प्रवीण कुमार कुशवाहा
पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से सम्बन्धित विवादों का न्याय क्षेत्र वाराणसी होगा।
फोन नं. -0532 - 2400063
आरएनआई नं. **UPHIN/2012/46202**
डाक पंजीयन सं.: जीपीओएलडब्ल्यू / एनपी - 78/2011-13.

आंगनवाड़ी केंद्र का बीएसए ने किया निरीक्षण

ज्ञानपुर। जिलाधिकारी गौरांग राठी के निर्देश पर स्वयं के गोद लिए हुए आंगनवाड़ी केंद्र मनापुर द्वितीय का बीएसए भूपेंद्र नारायण सिंह ने गुरुवार को निरीक्षण किया। बीएसए के भ्रमण के दौरान समस्त बच्चे प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के साथ बैठकर मध्यान भोजन ग्रहण करते हुए पाए गए तथा निर्देशित किया गया कि प्रत्येक दिन बच्चों को एमडीएम समय से दिया जाए। मनापुर आंगनवाड़ी केंद्र पर कुल नामांकित चालीस बच्चों के सापेक्ष 17 बच्चे उपस्थित पाए गए। आंगनवाड़ी केंद्र पर कार्यरत सहायिका नगीना देवी तथा रीशा देवी उपस्थित पाई गई। आंगनवाड़ी कार्यकर्ती सरोजा देवी मीटिंग में बताई गई। बीएसए ने बच्चों की शैक्षिक गुणवत्ता की जांच की। बच्चों द्वारा प्रश्नों का उत्तर दिया गया तथा बच्चे सक्रिय नजर आए। समस्त बच्चों को समय-समय पर पोषाहार वितरण एवं उनको दी जाने वाली सुविधाओं को प्रदान करने हेतु निर्देशित किया गया तथा प्रत्येक दिन समय से उक्त आंगनवाड़ी केंद्र खोलकर बच्चों के पठन-पाठन पर ध्यान देने हेतु निर्देशित किया गया।

राजकीय चिकित्सक ने प्राथमिक विद्यालय को स्मार्ट टीवी व इन्वर्टर से सजाया

गुड न्यूज

अम्बेडकर नगर में राजकीय चिकित्सक हैं डॉ. श्यामधर मिश्र

डेस्क बेंच भी उपलब्ध कराने का दिया आश्वासन

प्राथमिक विद्यालय में स्मार्ट टीवी व इन्वर्टर दान के समय मौजूद लोग

सुरियावां। विकास खंड के प्राथमिक विद्यालय बदलीपुर में सामुदायिक सहयोग से गाँव निवासी डॉ. श्यामधर मिश्र ने विद्यालय को 43 इंच स्मार्ट टीवी एवं इन्वर्टर बैटरी भेंट की। डॉ. श्यामधर अम्बेडकर नगर में राजकीय चिकित्सक हैं। डॉ. श्यामधर मिश्र के सहयोग से विद्यालय में स्मार्ट कक्षा कक्ष का उद्घाटन हुआ।

इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष अनिरुद्ध तिवारी, बेसिक शिक्षा विभाग के मुखिया जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी भूपेन्द्र नारायण सिंह, ग्राम प्रधान, खण्ड शिक्षा अधिकारी सुमन केशरवानी, पूर्व प्रधान, दानदाता डॉ. श्यामधर मिश्र एवं ग्रामवासी उपस्थित रहे। विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं अन्य सहायक अध्यापक के प्रयासों से विद्यालय में छात्रों को नवीन तकनीक से शिक्षा दीक्षा देने के लिए डॉ. श्यामधर मिश्र ने विद्यालय को 43 इंच स्मार्ट टीवी एवं इन्वर्टर बैटरी भेंट की। उन्होंने कार्यक्रम के अवसर पर यह भी वायदा किया कि अग्रिम एक माह में वे छात्रों को बैठने के लिए डेस्क बेंच भी अवश्य उपलब्ध कराएंगे। इसके पश्चात जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी ने अपने वक्तव्य में डॉ. श्यामधर मिश्र के कार्य की प्रशंसा करते हुए उनके प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालक एसआरजी विनय पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर सुभाष पाल, बंशराज मौर्य, कृष्ण कांत, आशीष उपाध्याय, दीनानाथ यादव, बिंदु देवी,आदर्श शिक्षक डॉ ओम प्रकाश मिश्र आदि उपस्थित रहे।

दुनिया बनारसी पान की दीवानी और बनारस में बचे सिर्फ 2 किसान

जनपद में पहले से ही बमुश्किल सात-आठ कृषक कर रहे थे पान की खेती

बेहद श्रमसाध्य और संवेदनशील होती है इसकी खेती, शासन दे रहा अनुदान

सुरोजीत चैटर्जी

वाराणसी। किसी ने लिखा है कि 'तेरे नाम में मीठे पान का ज़ायका है, मुंह में रखते ही सांसें महक जाती हैं'। पान की खुश्बू के दीवाने भले ही पूरी दुनिया में हों और बनारसी पान की गूंज विश्व में कोने-कोने में दिखे लेकिन यहां बीते साल तक पान की खेती करने वाले दहाई संख्या तक नहीं थे वहीं अब अब महज दो किसान जैसे-तैसी इसकी पैदावार में जुटे हैं। सो, बनारस में पान की खेती को बढ़ावा देने समेत इससे जुड़े किसानों का आर्थिक जीवन स्तर सुधारने के उद्देश्य से शासन ने अनुदान का प्रावधान किया है। ताकि इसकी खेती से पलायन कर रहे किसानों को प्रोत्साहित कर पुनः पान की खेती की ओर मोड़ा जा सके। विश्वभर बनारसी पान विख्यात है। वाराणसी आने वाला कोई भी खास मेहमान पान खाए बगैर यहां से नहीं लौटता। पान भले ही देश के किसी भी हिस्से से आयातित हो लेकिन बनारस में आकर वो बनारसी पान ही कहलाता है। दुखद पहलू ये है कि खुद बनारस में ही पान की खेती का दायरा इतना सिमट चुका है कि यहां से उसकी खेती खत्म होने की कगार पर है। बेहद श्रमसाध्य खेती, महंगाई आदि के कारण यह संकट लगातार बढ़ रहा है। हाल यह है कि इस परंपरागत पेशे से जुड़े किसानों के परिवार के युवा स्वयं पान की खेती में दूर हट गये हैं। बीते साल तक पान की खेती से जुड़े करीब छह किसानों ने भी इससे मुंह मोड़ लिया है। पान की फसल में लगने वाली बीमारियों ने भी किसानों को परेशान किया है। काशी विद्यापीठ विकास खंड के बच्छांव ग्राम पंचायत में पहले लगभग सात-आठ किसान देशी पान की खेती करते थे। उनमें से एक किसान का खेत गत वर्ष आग की भेंट चढ़ गया। दो को छोड़कर अन्य किसानों ने पान की खेती छोड़कर परचून की दुकान चला रहे हैं या गुटमी आदि खोल कर परिवार का पेट पाल रहे हैं। वर्तमान में इस गांव के मात्र दो किसान राधेश्याम और मालती देवी चौरसिया ने देशी पान की खेती की जिम्मेदारी सम्भाल रखी है।

पान की खेती में रुचि है तो अनुदान आपके लिए

जिला उद्यान अधिकारी यानि डीएचओ सुभाष कुमार ने बताया कि राष्ट्रीय कृषि विकास योजना में पान विकास योजना के तहत अनुदान की व्यवस्था है। शासन ने वाराणसी को वर्तमान वित्तीय वर्ष में कुल एक हजार वर्ग मीटर के आठ पान बरेजा बनवाने का लक्ष्य दिया है। स्कीम का लाभ लेने वाले किसानों को इस क्षेत्रफल में पान का बरेजा निर्माण कर लेने के बाद 50423 रुपये अनुदान के तौर पर उपलब्ध कराने का प्रावधान किया है। यह धनराशि लाभार्थी के बैंक खाते में डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर के माध्यम से भेजा जाएगा। उन्होंने बताया कि इस स्कीम का मुख्य उद्देश्य पान उत्पादकों को अन्य क्षेत्र में पलायन से रोकने, प्रति इकाई क्षेत्र में अधिक से अधिक आय प्राप्त करने और रोगजार का अवसर उपलब्ध कराना है। इसके अलावा पान की खेती के क्षेत्रफल में बढ़ोतरी करना, पान प्रोडक्शन में नयी तकनीकों को प्रोत्साहन देना और पान उत्पादकों की आमदनी में वृद्धि कर उनके आर्थिक जीवनस्तर को सुधारने की कोशिश की जा रही है। यह योजना सभी वर्ग के लिए है। एससी/ एसटी/ ओबीसी एवं महिला वर्ग सहित पान की खेती में रुचि रखने वालों को प्राथमिकता देंगे। अनुदान का लाभ लेने के लिए योजना में आवेदन करने वाले के पास उसकी अपनी जमीन और सिंचाई के साधन होना अनिवार्य है। इच्छुक किसान जिला मुख्यालय स्थित विभागीय कार्यालय से भी इस बारे में जानकारी ले सकते हैं। साथ ही महकमे के पोर्टल 'एचटीटीपी://डीबीटी.यूपीहार्टिकल्चर.इन' पर ऑनलाइन पंजीकरण की सुविधा उपलब्ध करायी गयी है।

नहीं अपनायी आधुनिक तकनीक

जिला उद्यान विभाग के वरिष्ठ निरीक्षक ज्योति कुमार सिंह के मुताबिक पान बेहद संवेदनशील फसल है। इसकी खेती के लिए अत्यधिक सेवा की जरूरत होती है। इसकी खेती के लिए बहुत ज्यादा साज-संभाल की आवश्यकता रहती है। इसमें बांस और कनई बांधना पड़ता है। यह सामग्री एक अवधि के बाद खराब होने पर नया लगाना जरूरी हो जाता है। बनारस में पान की खेती आगे न बढ़ पाने की एक वजह यह है कि किसानों ने आधुनिक तकनीक अपनाने के बजाय परंपरागत तरीके से ही खेती को जारी रखा।

इसकी खेती से घर का खर्च चलाना मुश्किल

काशी विद्यापीठ विकास खंड के बच्छांव ग्राम पंचायत में पान की खेती कर रहीं मीरा देवी चौरसिया कहती हैं कि परिवार की यह परंपरागत खेती की गाड़ी किसी प्रकार खींच-तान कर चलानी पड़ रही है। वर्तमान स्थिति ये है कि बीज नहीं मिल पा रहा है। कुल जमा तीन सदस्यों वाले हमारे परिवार समेत दो मजदूर पान की केती में जुटे रहते हैं। 40 हजार रुपये से अधिक खर्च हो चुके हैं। लागत भी मिल जा तो गनीमत है। बीते सप्ताह कोई अफसर आए और खेत का जायजा लेकर चले गये। उन्होंने खेती के बारे में न तो कुछ पूछने की जरूरत समझी और न ही समस्या के बारे में किसी प्रकार की उत्सुकता दिखायी। सिर्फ पान की खेती से घर का खर्च उठाना मुश्किल है। इसलिए परचून की दुकान भी चला रही हूं। दिन में बेटा दुकान संभालता है और दिनभर खेत में वक्त देने के बाद शाम को मैं दुकान देखती हूं।

गाय और बैल नहीं भैंस की डिमांड है अधिक

रामदुलार यादव

चांदमारी। पूर्वांचल में एक कहावत है 'भंइसी से केहू भयल नाहीं आउर गइया से केहू गयल नाहीं'। वक्त के करवट बदली को समय के साथ यह कहावत उलट गयी। एक जमाना था जब गाय बहुत उपयोगी होती थी। आज के दौर में गाय पालना टेढ़ी खीर हो चुकी है जबकि भैंस की कीमत हमेशा की तरह बनी हुयी है। पहले गाय के गोबर से प्राप्त उपली खाना पकाने के सहायक था। गाय की बछिया और बछड़े उपयोगी होते थे। बछड़ा बड़ा होकर बैल की भूमिका में जिम्मेदारी संभलता रहा। उससे खेत की जुताई, कोल्हू, बैलगाड़ी समेत सिंचाई के लिए रहट-पुरवट में चलाने के काम आते थे। बैल भी फायदे का सौदा हुआ करता था। आधुनिकीकरण के इस युग में बैल का महत्व लगभग खत्म हो चुका है। विज्ञान ने बैल की जगह मशीनें दे दी हैं। दूसरी ओर, गाय जब तक दूध देती है तब तक उसके बछड़े को रखते हैं लेकिन बाद में उसे खुला छोड़ दिया जाता है। जबकि भैंस पड़िया या पड़वा को जन्म दे, कीमत दोनों की है। पड़वा भी अच्छे दामों में बिक जाता है। पड़िया बड़ी होकर दूध देती है। भैंस बेचने पर नस्ल के अनुसार भी 80-90 हजार रुपये से लेकर एक लाख रुपये तक बिक जाती है। वहीं, औसतन 25 हजार रुपये से लेकर 35 हजार रुपये में अच्छी दुधारु गाय मिल जाती है। उसकी बछिया से गाय तक पालने में आने वाला खर्च निकालना मुश्किल है। गिर जैसी नस्लों की गायों को छोड़ दें तो आज से 10-15 साल पहले अच्छी नस्ल की गायों की कीमत 80 से 90 हजार रुपये हुआ करती थी। अब बढ़िया से बढ़िया दुधारु गायें 30झ35 हजार रुपए में मिल जायेगी। महंगाई की जद में पशु चारा भी है। जिस तेजी से चारा और दाना का रेट बढ़ा है उस तेजी से दूध के दाम नहीं बढ़े। जब गाय का दूध कम होने लगता है तो पशुपालक आवारा छोड़ने के लिए बाध्य हो जाते हैं। पशुपालकों द्वारा बेसहारा छोड़ी गई गायों को शासन ने निराश्रित गोवंश आश्रय केंद्रों में रखने की व्यवस्था दी है।

पशुपालकों के लिए गाय पालना हुआ महंगा सौदा

चारा का रेट बढ़ा लेकिन दूध की कीमत नहीं बढ़ी

गौपालन से लगातार दूर हो रहे परंपरागत पशुपालक

25 प्रतिशत विश्व दुग्ध उत्पादन में भारत की हिस्सेदारी

वर्तमान में भारत दुनिया का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश है। दुनिया में कुल दूध उत्पादन का 25 फीसदी भारत के पास है। दूध उत्पादन में जर्सी गायों का बहुत बड़ा योगदान है। कहा जाता है कि प्राचीन काल से ही भारत में दूध, घी और मक्खन की नदियां बहती थीं। देश की आजादी के बाद 1970 में श्वेत क्रांति आरंभ होकर 1996 तक चली। इससे देश में दूध का प्रोडक्शन बढ़ा। नस्ल सुधार की प्रक्रिया से प्रति पशु दूध उत्पादन वृद्धि हुई। जो गाय दो से ढाई लीटर दूध देती थी वह नस्ल सुधार के बाद 10 से 12 लीटर दूध देने लगी। राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड के आंकड़े बतकाते हैं कि विश्व में 840 मिलियन टन दूध का उत्पादन होता है। उसमें अकेले भारत की भागीदारी 188 मिलियन टन दूध का है। अमेरिका दूध उत्पादन में भारत से काफी पीछे है।

ओमप्रकाश यादव

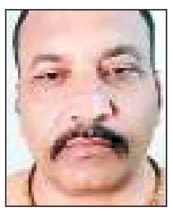
जनार्दन पाठक

रामानुज यादव

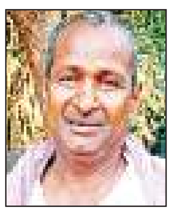
शामू यादव

गाय को गर्भधारण कराने में आती है समस्या

जनपद के गोहपुर गांव के पशुपालक ओमप्रकाश यादव कहते हैं कि दूध की लिहाज से जर्सी गाय ठीक है लेकिन उनके गर्भधारण में समस्या आती है। बार-बार सिमन देने के बाद भी जब गर्भ नहीं ठहरता को बाध्य होकर ऐसी गायों को आवारा छोड़ देना पड़ता है। ढ़रही निवासी रामानुज यादव ने बताते है कि उनका पूरा परिवार गोवंशों की सेवा दिनभर जुटा रहता है। अब गाय मात्र आत्मसंतुष्टि के लिए रख रहे हैं ताकि घर के बच्चों उनका दूध मिलता रहे। झरइया लालमन कोट के शामू यादव के मुताबिक मार्केट में गाय के दूध का पूरा मूल्य नहीं मिल पाता। उससे अधिक गाय की सेवा में खर्च हो जाता है। कुरौली के जनार्दन पाठक ने बताया कि ठाठ भैंस बिक जात हयिन लेकिन ठाठ गाय ना बिकत हइन त ई महंगाई में के बांध के खियाई।

देशभर में एनआईए की छापेमारी

खालिस्तान समर्थक समेत 6 लोगों को किया गिरफ्तार

नई दिल्ली। राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) ने आपराधिक गिरोहों, आतंकवादी समूहों और नशीले पदार्थों की तस्करी से जुड़े विभिन्न माफिया के बीच सांठगांठ से संबंधित मामलों में एक आतंकवादी के करीबी सहयोगी सहित 6 लोगों को गिरफ्तार किया है। एनआईए ने इस सांठगांठ का भंडाफोड़ करने के लिए मंगलवार को 8 राज्यों में 76 स्थानों पर छापे मारने के बाद ये गिरफ्तारियां कीं।

गिरफ्तार किए गए लोगों में कनाडा में रह रहे घोषित आतंकवादी अर्शदीप सिंह उर्फ अर्श डल्ला का निकट सहयोगी लकी खोखर उर्फ डेनिस भी शामिल है। एनआईए ने पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, दिल्ली-एनसीआर (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र), महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश में छापेमारी की। गिरफ्तार किए गए लोगों में गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई, जग्गू भगवानपुरिया और गोल्डी बराड़ के सहयोगी भी शामिल हैं।

एजेंसी ने बताया कि पंजाब के बठिंडा निवासी खोखर को मंगलवार को राजस्थान के श्रीगंगानगर से गिरफ्तार किया गया। इसने कहा कि खोखर अर्श डल्ला के सीधे एवं लगातार संपर्क में था और वह उसके लिए भर्ती किया करता था तथा इसके अलावा वह आतंकवाद संबंधी गतिविधियों के लिए धन जुटाता था। एनआईए ने बताया कि उसने पंजाब में अर्श डल्ला के सहयोगियों को हथियार और गोला-बारूद भी मुहैया कराया था जिनका इस्तेमाल कनाडा स्थित आतंकवादी के निर्देश पर जगरांव में हाल में एक हत्या को अंजाम देने के लिए किया गया था। एनआईए ने पिछले साल 20 अगस्त को हरविंदर सिंह उर्फ रिंदा, लखबीर सिंह संधू उर्फ लांडा और अर्श डल्ला सहित सात लोगों के खिलाफ स्वतः संज्ञान लेते हुए एक मामला दर्ज किया था। एनआईए इस मामले में पहले भी दीपक रंगा नाम के व्यक्ति को गिरफ्तार कर चुका है।

एनआईए के एक प्रवक्ता ने बताया कि खोखर, डल्ला के लिए काम करता था। उसने बताया कि डल्ला खालिस्तान लिबरेशन फोर्स, बब्बर खालसा इंटरनेशनल और इंटरनेशनल सिख यूथ फेडरेशन सहित कई प्रतिबंधित आतंकवादी संगठनों के लिए भारत में अंतरराष्ट्रीय और अंतरराज्यीय सीमाओं के आर-पार हथियारों, गोला-बारूद, विस्फोटकों और आईईडी की तस्करी करने में शामिल रहा है।

प्रवक्ता ने बताया कि खोखर के अलावा एनआईए ने लखवीर सिंह, हरप्रीत, दलीप बिश्नोई, सुरिंदर उर्फ चीकू चौधरी और हरिओम उर्फ टीटू को भी गिरफ्तार किया। हरिओम उर्फ टीटू को मंगलवार को गिरफ्तार किया गया था, जबकि लखवीर सिंह को सोशल मीडिया का उपयोग करके आतंकवादी गतिविधियों के लिए युवाओं को कथित रूप से बरगलाने और उनकी भर्ती करने को लेकर पिछले साल अगस्त में दर्ज एक मामले के संबंध में गिरफ्तार किया गया था।

एनआईए ने कहा कि वे आम जनता के बीच डर पैदा करने के मकसद से अपने अपराधों को प्रचारित करने के लिए सोशल मीडिया का भी इस्तेमाल कर रहे थे। मामले में पूर्व में गिरफ्तार छोटू राम भाट के सहयोगी और कुख्यात अपराधी लखवीर सिंह के पास से 9 हथियार जब्त किए गए हैं। एनआईए इस मामले में अब तक कौशल चौधरी, अमित डागर, सुखप्रीत सिंह, भूपी राणा, नीरज बवाना, नवीन बाली और सुनील बालियान समेत 9 आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी है। प्रवक्ता ने बताया कि सुरेंद्र चौधरी और दलीप बिश्नोई गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई, जग्गू भगवानपुरिया और कनाडा स्थित अपराधी गोल्डी बराड़ के साथी हैं। उन्हें लॉरेंस बिश्नोई गिरोह की ओर से धन जुटाने, युवाओं की भर्ती करने और आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था।

प्रवक्ता ने बताया कि यह मामला भी एनआईए ने पिछले साल अगस्त में दर्ज किया था और लॉरेंस बिश्नोई, जग्गू भगवानपुरिया, काला जठेड़ी, काला राणा, जोगिंदर सिंह, राजेश कुमार, राजू बसौदी, अनिल चिप्पी, नरेश यादव और शाहबाज अंसारी सहित 10 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।

उन्होंने बताया कि मंगलवार को गिरफ्तार किए गए सुरिंदर चौधरी के खिलाफ हत्या और जबरन वसूली के लिए स्वापक औषधि और मनः प्रभावी पदार्थ (एनडीपीएस) अधिनियम के तहत कई मामले दर्ज किए गए हैं। वह हरियाणा में तस्करी और शराब एवं खनन ठेकेदारों से जबरन वसूली में शामिल रहने के साथ ही आतंकवाद-गैंगस्टर सिंडिकेट के लिए धन जुटाता रहा है। प्रवक्ता ने बताया कि दलीप बिश्नोई एक आदतन अपराधी है जिसके खिलाफ 13 मामले दर्ज हैं। उसने बताया कि दलीप बिश्नोई आतंकवादी गिरोह के लिए धन का प्रबंध करने और पंजाब और राजस्थान में गिरोहों को साजो-सामान संबंधी सहायता मुहैया कराने में शामिल रहा हैं।

एनआईए की जांच में अब तक पता चला है कि भारत के कई कुख्यात गैंगस्टर पाकिस्तान, कनाडा, मलेशिया, फिलीपीन और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में भाग गए थे और विभिन्न राज्यों की जेल में बंद अपराधियों के साथ मिलकर वहां से अपनी आतंकवादी और आपराधिक गतिविधियों की योजना बना रहे हैं। ये समूह नशीले पदार्थों एवं हथियारों की तस्करी, हवाला और जबरन वसूली के जरिए लक्षित हत्याएं कर रहे थे और अपनी नापाक गतिविधियों के लिए धन जुटा रहे थे। प्रवक्ता ने बताया कि इस तरह के आतंकवादी नेटवर्क और उनके वित्तपोषण के साधन और उनकी मदद करने वाले बुनियादी ढाचों को नष्ट करने के लिए जांच जारी है।